वर्ष 13, अंक 44-45, चैत्र - भाद्रपद 2077 (अप्रैल - सितम्बर 2020)(संयुक्तांक)

20/- टाका

मिथिलांगन

मैथिली पारिवारिक त्रैमासिक

प्रेरक व्यक्तित्व

बच्चाक विजन केर विकसित करय पड़त

मानस बिहारी वर्मा

लेख

कोरोनाक कालमे प्रवासी मजदूरक कथा

मुद्दा

राफेल सँ बढ़ल सेनाक मनोबल

विमर्श

वृक्ष पूजन अओर एकर महत्व

आवरण कथा

संपन्नताक अवसर अछि प्रवास

Price : India Rs. 20.00, Nepal Rs. 30.00, Europe € 2.00, UK £ 1.5, US $ 3.00

मिथिलांगन पत्रिकाक प्रकाशित अंक

वर्षः 13, अंक : 44-45, चैत्र-भाद्रपद 2077, अप्रैल-सितम्बर 2020 (संयुक्तांक)

मुकेश दत्त
संपादक

कोरोना काल : आपदाकेँ बनाऊ अवसर

श्रद्धेय मैथिलवृन्द
सादर प्रणाम

आशा नहि अपितु पूर्ण विश्वास अछि जे अपने लोकनि एहि वैश्विक महामारी 'कोरोना' काल मे सकुटुम्ब सकुशल होएब। फरवरी-मार्च मास मे भारत आबि पसरल एहि महामारीक तोड़ भारत संग समुचा दुनिया ताकि रहल अछि। भारतीय वैज्ञानिक आ शोधकर्त्ताकेँ एहि क्षेत्र मे शिघ्रहिं सफलता मिलतैन्ह एकर पूर्ण आशा अछि। वर्तमान मे सामाजिक दूरी बना, योग-व्यायाम आ अपन शरीरक इम्यूनिटि सिस्टमकेँ मजबुत कऽ एहि महामारीसँ बचबाक प्रयास कएल जा रहल अछि।

पहिल बेर 24 मार्च 2020केँ देशव्यापी लॉकडाउन आ फेर अनलॉकक प्रक्रिया, बहुतो संख्या मे प्रवासी घुरि कऽ अपन राज्य लौटि गेलाह। पलायन कोनो नव बात नञि अछि पहिले लोक नौकरीक तलाश मे पैघ शहर दिस पलायन करैत छलाह, मुदा अखन कोरोना संकटकेँ बढ़लासँ लाखक-लाख लोक प्रदेशसँ वापस अपन गाम दिस घुरि रहल छथि। सरकार एकरा रिवर्स यानी उलटा पलायन बता रहल अछि। घुरयवाला मे ज्यादातर प्रवासी 30 सँ 50 आयु वर्गक छथि। आब हुनका लेल रोजगार पैदा करनाय प्रदेश सरकार लेल एकटा पैघ चुनौती भऽ रहल अछि।

प्रवासीकेँ घुरि आबैत देख राज्य सरकार आनन-फानन मे मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना आरम्भ कऽ प्रदेश मे करोड़ों टाकाक राशि जिलाधिकारी द्वारा स्वरोजगार शुरू करय लेल प्रवासीकेँ आसानीसँ ऋण उपलब्ध करा रहल अछि आ उचित अनुदान सेहो देल जा रहल अछि। देखु, सब शहरी मे उद्यमी बनबाक क्षमता नहि होइत अछि, घर घुरल बेसी लोक नौकरीपेशा छथि एहन मे अचानक हुनक स्वरोजगार शुरू केनाय व्यावहारिक नहि लौगत अछि, तैयो एहि दिशा मे एकटा सफल प्रयोग भऽ रहल अछि।

एकटा दोसर पहलू सेहो अछि, घर घुरल लोक परेशान छथि, हुनका आगाँ कतेको तरहक चुनौती छैन्ह। रिवर्स माइग्रेशनक बाद कतेको प्रवासीकेँ घर लौटबाक सुख तऽ मिललैन्ह मुदा आय शून्य भऽ गेलैन्ह वा घटि गेलैन्ह। पलायन कएल वा राज्यसँ बाहर कमायवलाक राज्यक अर्थव्यवस्था मे बड्ड योगदान रहल अछि, एतेक संख्या मे प्रवासीक गाम एलासँ पलायन आयोगक चिंता बढ़ि गेल अछि।

बिहार खास कऽ मिथिलाक परिदृश्य मे देखु, जतय एहि बेर लोककेँ 'कोरोना आ बाढ़ि'क दोहरी बिपत्तिक सामना करय पड़लैन्ह। सरकारी तंत्र आ स्थानीय प्रसाशन एहि दूनू विकट समस्याक समाधान मे असफल रहल। राज्यक मुख्यमंत्री स्वयं एहि बातकेँ मानि अपन हाथ ठाढ़ कऽ चुकल छथि। ग्रामीण सभ स्वयं अपन सामर्थ्य, संसाधन आ आत्मबले एकर निवारण कऽ रहल छथि।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी राष्ट्रक नामे अपन संबोधन मे 'बोल्ड रिफॉर्म्स', 'वोकल फॉर लोकल' आ 'आत्मनिर्भर भारत'क नारा देलैन्ह। पहिल बेर कोनो प्रधानमंत्री आधिकारिक रूपसँ आपदाकेँ अवसर बनेबाक बात केलैन्ह। ओना कोनो आपदा अवसर नहि भऽ सकैत अछि, आपदा तऽ आपदा अछि, जाहिसँ लोककेँ बचबाक होइत अछि। मुदा आपदाकेँ अवसर बनेनाय एकटा सकारात्मक आ सफल पहल अछि। सरकार जौं आपदाकेँ अवसर मे बदलय चाहैत अछि तऽ ओकरा बिनु राजनीतिक राग-द्वेषकेँ कोरोनासँ लड़य लेल राज्यक संग मिल एकटा सफल मॉडल बना सरकारी स्वास्थ्य तंत्रक बेहतर इस्तेमाल देश भरि मे करक चाही।

एकरा सफल बनेबा लेल युवावर्ग अपन सक्रियता देखाबैथ, बुजुर्ग अपन अनुभवक प्रयोग करैथ, अर्थसँ सक्षम लोक अर्थ दऽ सहायता करैथ, विभिन्न क्षेत्रक लोक अपन-अपन क्षेत्रसँ जाहि प्रकारक सहयोग भऽ सकय समाज लेल करैथ। अर्थात सभ कियो कें अपन सामर्थ्यानुसार तन, मन, धनसँ एहि पुनीत कार्य मे सहभागी बनक चाहि आ लोक सहभागी बनियो रहल छथि।

कोरोना कालक बादक भारत 'आपदाकेँ अवसर' बनाबयवाला भारत भऽ जाएत। इंसानक सूक्ष्म मनोभावक अध्ययन करयवाला विश्लेषकक माननाय अछि जे 'दुःख इंसानकेँ मांजैत अछि आ ओकरा बेहतर बनाबैत अछि'। तखने तऽ महामारी वा आपदाक समय सर्वोच्च मानवीय मूल्यक प्रदर्शन होइत अछि। कोरोना संभवतः पहिल पैघ त्रसदी अछि, जाहिमे मानवीय मूल्यक एतेक पैघ स्तर पर ह्रास भेल। इंसानियतक सामान्य भावना आ अभ्यासक विलोप भेल।

प्रधानमंत्रीजी दू गजक दूरीक नारा देलैन्ह, जे फिजिकल डिस्टेंसिंग कहल गेल। ओ असल मे मात्र शारीरिक दूरी नहि अपितु भावनात्मक दूरी सेहो बना देलक। सांप्रदायिक स्तर पर विभाजन सेहो भेल। शुरूआती दिन मे दिल्लीक निजामुद्दीन इलाकाक एकटा मस्जिद मे तबलीगी जमातक मरकज मे हजारक संख्या मे देशी-विदेशी लोक शामिल भेलाह जे मानवीय आ सामाजिक विभाजन केलक।

एहि त्रासदीक बीच 'आपदा मे अवसर' देखबाक सिद्धांत प्रतिपादित भेल आ आपदाक एहन दौर मे कतेको बिरला अवसरक खोज कऽ लेलैन्ह, जेना- एकटा फुटवियर बनाबय बला सेनेटाइजर टनल बनाबय लगलाह, एकटा सोनार सोना-चाँदीक काम छोड़ि वेंटीलेटर बनाबय लगलाह, एकटा व्यवसायी सालो पुराना एंपोरियमक व्यवसाय बंद कऽ आब दैनिक जरूरतक समानक व्यवसाय करय लगलाह, एकटा महिला सूट सिलनाय बंद कऽ ओहिठाम मास्क बना रहल छथि, कतेको व्यापारी अपन पुरनका व्यापार छोड़ि फल-तरकारी बेचय लगलाह... आदि-आदि, एहन कतेको उदाहरण अछि। निष्कष रूपेँ कहि सकैत छी जे परिस्थिति केहनो होए, हिम्मत नहि हारक चाही।

अंतमे, एहि महामारी मे अपन जिनगीक परवाह कएने बिनु जतेक लोक (डाक्टर, नर्स, पुलिस, सेना, सामाजिक कार्यकर्त्ता आदि) अपन सेवा देशकेँ देलैन्ह सबकेँ करबद्ध अभिनंदन। एहिये विषयकेँ केन्द्र राखि सजाओल गेल अछि ई अंक, संगहिं पूर्व अंक मे शुरू कएल गेल स्तम्भ आ अपन स्थायी स्तम्भक संग सजल **मिथिलांगन**क पहिल **ई-पत्रिका** अपने सभहक आगाँ राखि अति हर्ष भऽ रहल अछि।

अपनेक

मुकेश दत्त

© मिथिलांगन, सर्वाधिकार सुरक्षित।

व्यवस्थापन अओर विपणन कार्यालय : आदर्श इंटरप्राइजेज, 4393/4, तुलसीदास स्ट्रीट, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
फोन : (011) 23246131/32, 41009940, फैक्स : 23246130
ई-मेल : adarshbooks@vsnl.com

संपादक : मुकेश दत्त
(समस्त संपादकीय कार्य पूर्णरूपेण अवैतनिक)

आवरण : रविन्द्र कुमार दास
डिजाइन आ सज्जा : संजीव कुमार 'बिट्टू'

मिथिलांगन मे छपल रचना/लेख इत्यादि मे व्यक्त विचार लेखक लोकनिक निजी विचार छैन्ह आ ई आवश्यक नहि जे ओ मिथिलांगनक नीति वा विचार इत्यादि कें प्रतिबिम्बित करय।

सब विवादक निपटारा दिल्ली/नई दिल्ली स्थित सक्षम न्यायालय आ फोरम मे कएल जायत।

मिथिलांगन (पंजी.) संस्थाक दिससँ अओर लेल अभय कुमार लाल दास द्वारा ए-40, कैलाश अपार्टमेंट, प्लॉट नं. 2, सेक्टर-4, द्वारका, नई दिल्ली-110078, सँ प्रकाशित अओर आनन्द संस (इण्डिया), सी-87, गणेश नगर (पांडव नगर कॉम्पलेक्स), दिल्ली-92, मे मुद्रित।
सम्पर्क: 9910952191 (संपादकीय)
9312301160, 9810450229 (प्रकाशकीय)
ईमेल : **mithilangan@gmail.com**
वेबसाइट : **www.mithilangan.org**

शुल्क : भारत मे एक प्रति 20 टाका, वार्षिक 100 टाका मात्रा (डाक खर्च सहित)।

अनुक्रम

5 विमर्श

वृक्ष पूजन अओर एकर महत्व - *अजय कुमार दास* ...5
मैथिली भाषा केर दिशा आ दशा - *अरविंद चन्द्र दास 'सुबोध'*

10 आवरण कथा

संपन्नताक अवसर अछि प्रवास - *आलोक कुमार*

12 लेख

कोरोनाक कालमे प्रवासी मजदूरक कथा - *रामबाबू सिंह*

13 कविता

पुरस्कार लऽ कें नाचू - *डॉ. किशन कारीगर* ...13
कोना कें करबै निर्वाह - *अरविन्द मिश्र 'नीरज'* ...13
प्रेम-विरह गीत - *प्रो. अंजु दास* ...13
कोरोना महामारी - *विनिता मल्लिक* ...14
सार्थक जीवन - *ई. विजय कुमार* ...14
अपन देश प्रिय - *सुरेश कंठ* ...14

15 नवांकुर-कविता

चललहुँ मिथिला धाम सँ - *नेहा कुमारी* ...15
गाम दर्शन - *रेणु दास* ...15
मड़ुआ रोटी - *किरण दास* ...15
भूगोल सँ मेटाएत इतिहास - *ऋतेश पाठक*...16
अपन मैथिली - *प्रकाश कुमार चौधरी* ...16

17 बीहनि कथा

बाल केर खाल - *भुवनेश्वर चौरसिया 'भुनेश'* ...17
दान - *कंचन कंठ* ...17
बहरिया - *पूनम झा* ...17
बच्चू बाबूक दुविधा - *डॉ. प्रमोद कुमार* ...18
कोरोना - *विनीता ठाकुर* ...18

19 प्रेरक व्यक्तित्व

बच्चाक विजन केर विकसित करय पड़त - मानस बिहारी वर्मा - *विनिता मल्लिक*

24 मुद्दा

राफेल, हर्ष मुदा गर्व नहि - *रि. लेफ्टिनेंट कर्नल सतीश मल्लिक* ...24
सामरिक क्षमता बढ़ल - *हिमानी दत्त* ...24
की राफेल सँ जैविक युद्ध जीत सकैत छी? - *डॉ. राजीव वर्मा* ...25
सैन्यशक्ति बढ़ल - *रि. कर्नल कृत्या नन्द दास* ...25

26 शोध आलेख

कैथी लिपि - *मुकेश दत्त*

28 कथा

शानो शौकत - *अरूण लाल दास*

29 संस्मरण

फगुआसँ पहिने फगुआक तरंग चिट्ठीक संग - *डॉ. शेफालिका वर्मा* ...29
धियाक जनम जौं देब विधाता, देब सहोदर भाए - *शीला दास* ...30

31 व्यक्तित्व

कर्तव्यनिष्ठा आ त्यागक प्रतिमूर्ति : चतुरानन दास - *ई. प्रकाश चन्द्र दास*

34 फुइस कक्काक ढुईस

- *रि. कर्नल कृत्या नन्द दास*

35 खान-पान

घी आ ओकर बाँचल सामग्री सँ बनल व्यंजन - *सरिता दास*

37 सौन्दर्य प्रसाधन

सेल्फ ग्रेडिंग - *संतोषी कर्ण*

अनुक्रम

38 लघु कथा

पचहीबाली काकीक लंदनबाली पुतोहु - *ज्ञानवर्द्धन कंठ*...38

नवकी कनियाँ - *चंदना दत्त* ...38

समय केर पहिया - *कुमार मनोज कश्यप* ...11

39 यात्रा वृतांत

उज्जैन चित्रगुप्त मंदिर - *मिसिदा*

40 सम्मान

41 मिथिलाक धिया

भावना कंठ

42 विशेषज्ञ सँ पुछू

43 विज्ञान मंच

45 बाल मचान

46 श्रद्धांजलि

मिथिलांगनक पूर्व अध्यक्ष डा. राम कुमार मल्लिक जीक असामयिक निधन

मिथिलाक महान चित्रकार कृष्ण कुमार कश्यप जी नहि रहलाह

साहित्यकार विश्वनाथ दास 'देहाती' जीक निधन

वरिष्ट साहित्यकार पंचानन मिश्र जीक स्वर्गवास

47 संस्था समाचार

48 चिट्ठी-पत्री

मिथिलांगनक निम्न अंक 'साक्षात्कार' हेतु अवश्य पढू

1.	अंक 1 (अप्रैल-जून 2008)	:	श्री प्रदीप बिहारी आ श्रीमती शशिकला देवी
2.	अंक 2 (जुलाई-सितम्बर 2008)	:	श्री अच्युतानन्द चौधरी आ श्रीमती गोदावरी दत्त
3.	अंक 3-4 (अक्टूबर 2008-मार्च 2009)	:	श्री प्रत्युष कुमार आ श्री शरद कुमार
4.	अंक 5 (अप्रैल-जून 2009)	:	श्रीमती सुभद्रा देवी आ डॉ. गजेन्द्र नारायण कर्ण
5.	अंक 6 (जुलाई-सितम्बर 2009)	:	श्री निर्मल कुमार कर्ण आ श्री चन्द्र भूषण कूमार
6.	अंक 7-8 (अक्टूबर 2009-मार्च 2010)	:	आचर्य सोमदेव, श्रीमती चानो देवी आ श्री संजय चौधरी
7.	अंक 9 (अप्रैल-जून 2010)	:	श्री रमानन्द रेणु, श्रीमती शांती देवी आ श्री प्रभात प्रभाकर
8.	अंक 10 (जनवरी-मार्च 2011)	:	श्री कृष्ण कुमार कश्यप
9.	अंक 11 (अप्रैल-सितम्बर 2011)	:	श्री निशिकांत ठाकुर आ डॉ. ललित कुमुद (परिचय)
10.	अंक 12 (अक्टूबर 2011-मार्च 2012)	:	श्रीमती उषा किरण खां
11.	अंक 13 (अप्रैल-सितम्बर 2012)	:	श्रीमती गोदावरी दत्त
12.	अंक 14-15 (अक्टूबर 2012-मार्च 2013)	:	श्रीमती शेफालिका वर्मा
13.	अंक 16-17 (अप्रैल-सितम्बर 2013)	:	श्री सुन्दरम्
14.	अंक 20-21 (अप्रैल-सितम्बर 2014)	:	श्रीमती राखी दास
15.	अंक 22-23 (अक्टूबर 2014-मार्च 2015)	:	श्री मानवर्धन कंठ
16.	अंक 24-25 (अप्रैल-सितम्बर 2015)	:	श्री ब्रह्मदेव लाल दास
17.	अंक 26-27 (अक्टूबर 2015-मार्च 2016)	:	कमांडर (रि.) कौशल कुमार चौधरी
18.	अंक 28-29 (अप्रैल-सितम्बर 2016)	:	श्रीमती संजु दास आ श्री रविन्द्र कुमार दास
19.	अंक 30-31 (अक्टूबर 2016-मार्च 2017)	:	श्रीमती अम्बीका देवी
20.	अंक 32-33 (अप्रैल-सितम्बर 2017)	:	श्री (डा.) नागेश्वर लाल कर्ण
21.	अंक 34-35 (अक्टूबर 2017-मार्च 2018)	:	श्री पुष्कर कुमार
22.	अंक 36-37 (अप्रैल-सितम्बर 2018)	:	श्री सुधाकर दास
23.	अंक 40-41 (अप्रैल-सितम्बर 2019)	:	लेफ्टिनेंट कर्नल सतीश मल्लिक
24.	अंक 42-43 (अक्टूबर 2019-मार्च 2020)	:	श्री आमोद कंठ

वृक्ष पूजन अओर एकर महत्व

अजय कुमार दास

हिन्दू संस्कृति मे वृक्ष पूजनक चलन पूर्वहिं कालसँ अछि आ वर्तमान काल मे पौराणिक मान्यता ओ कौलिक परिपाटीकेँ देखैत संस्कृति आ वैज्ञानिक महत्वक संग लोकजीवनक अभिन्न अंग बनल अछि। लोकजीवन मे वृक्ष पूजन स्वाभाविक तखने भऽ जाएत अछि जखनहि प्रकृति प्रेम संग प्रकृति पूजा लोक संस्कृतिक बीच साँस लैत कतिपय एहन प्राणमय श्रोत जे भारतीय जन-जीवनकेँ सशक्त जो प्राणवंत बनौने अछि। भारतीय संस्कृति मे परम्परागत पौराणिक कथा, आख्यान, तीर्थाटन, व्रत, उत्सव इत्यादि कतौ-नञि-कतौ कोनो भोगवाद, भौतिकवाद, अध्यात्मवाद आ प्रकृतिवादक बीज निहित अछि।

जेहने संस्कृति, तेहने प्रकृति
जेहने प्रकृति, ओहने प्रवृति
जेहने प्रवृति, तेहने सभ्यता

स्वतः स्पष्ट होइत अछि, जखन गाछ-वृक्षकेँ टकटकी नजरि सँ देखल जाएत अछि तऽ प्राकृति सौन्दर्य सँ मन स्वतः मोहित भऽ जाएत अछि आ जेना लगैत अछि गाछ-वृक्ष स्वयं बजैत होए, सुनैत होए, रंग बदलैत होए।

हमहीं प्रकृति छी, हमहीं संस्कृति छी
हमहीं सभ्यता छी, हमहीं विकास छी
हमहीं सब किछु छी।

वास्तव मे, प्रत्यक्ष देवक रूपमे वृक्ष पूजनक परम्परा मानव सभ्यताक प्रारंभहिं सँ अछि। जौं त्रेतायुगकेँ आधार मानल जाए तऽ रामायण कथा मे रामलीलाक एक पक्ष पूर्णतः जल-जंगल आ हरियालीक मध्य बीतल अछि, ई रामायण कथासँ स्पष्ट अछि। एहि विषयक विस्तार तऽ बड्ड भऽ सकैत अछि मुदा प्रसंगक आधार पर राम-लक्ष्मण जखन माए सीताक खोज मे कनैत-खीजैत, जंगले-जंगल, घुमैत-घामैत, थाकल-हारल गाछक छांह मे लिपटी कऽ गाछ-वृक्षकेँ अपन कथा-व्यथा सुनेलैन्ह आ सीताक पता-ठेकाना पुछलैन्ह-

हा गुण खानि जानकी सीता।
रूप सील व्रत नेम पुनीता।
लक्षिमन समझाए बहु भांती।
पूछत चले लता तरु पांती।

.....

कुंद कली दाड़िम, दामिनी।
कमल सरद ससि, अहि भामिनी।

.....

श्री फल कनक कदलि हरवाहीं।
नेकु न संक सकुच मन माहीं।

आ विरह व्याकुल रामकेँ कानैत विलाप करैत दुःख भरल बात सब सुनि कऽ सब वनस्पति झुकि गेल। सांसारिक जीवनक जखन गइराई सँ देखब तऽ भेटैत जे बिनु गाछ-वृक्षकेँ जीवनक परिकल्पना करब कठिन अछि। लोक जीवन मे लोक उपयोगिताक आधार पर वृक्ष पूजन ओ एकर महत्व वेद, पुराण, उपनिषद् इत्यादि आधार ग्रन्थ अछि जाहि मे वनस्पतिक महत्व पर श्लोकादि आधारकेँ मजबूत करैत अछि सुभाषितानि मे कहल गेल अछि—

छायामन्यस्य कुर्वन्ति स्वयंतिष्टन्ति चातपे।
फलान्यापि परार्थाय वृक्षाः सत्पुरुष इव॥

अर्थात वृक्ष स्वयं सूर्यक प्रखर तापकेँ सहन कऽ दोसरकेँ छाया प्रदान करैत अछि आ फल सेहो दोसरेक उपयोग हेतु दैत अछि, तखन भला वृक्ष सँ पैघ सत्पुरुष केँ भऽ सकैत अछि। गाछ-वृक्षक जौं प्रकृति प्रदत गुणक आ महत्वक बात करी तऽ एकरा दू भाग मे बाँटि सकैत छी- **पहिल,** जे सजीव या हरित वनस्पति अछि **दोसर,** मृत वा सुखल गाछ-वृक्ष लकड़ी योग्य होइत अछि। दूनूक अपन-अपन जगह पर गुण ओ महत्व अछि, जखन दोसर पक्ष पर विचार करब तऽ सुखल लकड़ीक प्रयोग लोक जीवन मे कतेक छैक से एकटा विशेष अनुसंधानक विषय अछि। मुदा हरित वनस्पतिक लोक जीवन सँ जोड़ैत छी तऽ अन्न सँ जीवन धरिक सब स्थिति मे वनस्पतिक उपयोगिता सर्वाधिक अछि। जीवन जियबाक हेतु अन्न, फल, रस, फूल आ औषधी ई सब भोगक वस्तु थिक जे सदयह प्राप्त होइत अछि, संगहि पशु-पक्षी सहित चराचर जीवक पोषण आ जीवन भेटैछ। वृक्षक एकटा विशिष्ट गुण जे विषयुक्त हवा (कार्बन-डाइऑक्साइड)केँ ग्रहण कऽ स्वच्छ वायुक रूप मे ऑक्सीजन दैत अछि, जाहि साँस पर मानव जीवन अछि। वृक्षक छांह संग प्राकृति सौन्दर्य जे मानव मस्तिष्ककेँ शान्ति दैत अछि। सुभाषितानी मे कहल गेल अछि-

नाक्षरं नंत्रहीत नमूलनैपिम्।
अयोग्य पुरुषं नास्ति योजकस्तत्रदुर्लभः।

अर्थात कोनो एहन अक्षर नहि जाहिसँ मन्त्र नहि बनि सकैत अछि, कोनो एहन वनस्पति नहि जाहिसँ औषधि नहि बनि सकैत अछि आ कोनो एहन पुरुष नहि जनिका मे गुण नञि होए केवल योजकक कमी होइत अछि। एहि प्रकारे औषधि वैज्ञानिक ओ आध्यात्मिक महत्व पर भारतीय संस्कृतिक केन्द्र मे गाछ-वृक्षक महत्व जीवनोपयोगी रहल अछि जाहिमे गाछ-वृक्षक ऐतिहासिक आ अध्यात्मिक महत्व पर दृष्टिपात करैत छी तऽ सबसँ पहिने वटवृक्ष (बरगद)क चर्च आवश्यक भऽ जाएत अछि।

वटवृक्ष (बरगद)– ई गाछ विशाल आ चौड़ा पताबला छायादार गाछ अछि जे पार्यावरणकेँ संतुलीत करैत अछि संगहिं एकर छाया मन ओ मस्तिष्क पर सोक्षे असर करैत अछि। औषधिक गुणसँ भरल अछि एकर पात, छाल, जड़ि, फल आ एकर दूध, दूधक प्रयोग

सेहो आयुर्वेद मे सेहो भेटैत अछि। वटवृक्ष औषधिक रूपमे लोक उपयोगी अछिये, मुदा ग्रामीण परिवरेश मे बकरीक हरा चाराक रूपमे सेहो व्यवहार होइत अछि आ हिन्दु संस्कृति मे ऐहन गुणकारी गाछक अध्यात्मिक दृष्टि सेहो बेसी रहैत अछि, कतौ-कतौ एकरा अक्षयवट सेहो कहल जाएत अछि। पद्म पुराणक अनुसारे बरगदकेँ विष्णुक अवतार कहल गेल अछि। मिथिला मे पौराणिक मान्यतानुसार नव विवाहिता अपन पतिक दिर्घायु हेबाक कामना वटवृक्षक पूजन कऽ करैत छथि, जकरा बरसाइत पूजाक नाम सँ जानल जाएत अछि। एहिमे नाना विधिक अनुसार वरक परिक्रमा कऽ लाल धागा सँ लपेट सावित्री-सत्यावानक कथा पढ़ैत छथि आ अपन पतिक दिर्घायु होएबाक कामना करैत छथि।

पीपल– एहि गाछकेँ महाबौधि वृक्ष सेहो कहल गेल अछि भगवान बुद्धकेँ एहि गाछतर ज्ञान प्राप्त भेल छलैन्ह। लोक संस्कृति मे

पीपल सुखक प्रतीक मानल जाएत अछि। प्रातःकाल एहिमे जल चढ़ेवाक चलन पूर्वहिं सँ अछि, भागवत गीता मे श्रीकृष्णजी कहलैन्ह ***अश्वत्थः सर्ववृक्षाणाम*** अर्थात् सब गाछ मे पीपल एक मात्र हमर स्वरूप अछि वृहत्स्तोत्र रत्नाकर मे कहल गेल अछि-

मूल ब्रह्मात्वचि विष्णुशाखायां शंकर एव च।
पत्रे पत्रे सर्व देवा वासुदेवाय ते नमः॥

एहि प्रकारेँ ई गाछ धार्मिक महत्वक संग प्रचुर मात्रा मे ऑक्सीजन प्राप्ति, छाया प्राप्तिक संग औषधिक गुणसँ पूर्ण अछि।

बेल– कहल जाएत अछि जे बेलक गाछ मे स्वयं शिवक वास होइत छैन्ह, शिव पूजन मे बेल्वपत्र शिवक अत्यधिक प्रिय छैन्ह संगहिं

सब देवतगणकेँ सेहो बेल्वपत्र प्रिय छैन्ह, धर्मसिन्धु मे कहल गेल अछि जे शिव पूजन मे बेलपत्रक प्रमुख स्थान अछि आ एकरा अपना दिस अग्रभागकेँ उल्टा कऽ अर्पण करक चाही।

मणि मुक्ता प्रवालैस्तु रत्नैरण्यर्वनं कृतम।
न ग्रहयमि विना देविर्व। विल्पत्रैर्पणनने।

शिव संहाकारिणी शक्ति छथि आ हुनक पूजाक लेल सेहो ओहने वस्तु देल जाएत अछि जे भयंकर प्रति होए जेना- आक, धतुर, कनेर इत्यादि। भगवती पूजन मे हिन्दु धर्मक अनुसारे पूर्व कालहिं सँ बेलन्योतिक पद्धति सँ बेलक फलसँ भगवतीक आँखि पड़ैत छैन्ह, एहन मान्यता अछि। संगहि एहिमे औषधिय गुण तऽ अछिये, पेटक तापकेँ नियंत्रित करैत अछि। स्वाभाविक अछि जे देवताकेँ गुण करैत छैन्ह ओ लोकक लेल तऽ गुणकारी हेबे करत।

तुलसी– हिन्दु संस्कृति मे तुलसीक महत्व एहिसँ लगाओल जा सकैत (विशेष कऽ मिथिला मे) जे सब आंगन, इनार, पोखैर, मंदिर इत्यादि स्थान पर तुलसीक घौड़ा अर्थात तुलसी पूजन जलदान निश्चित रहैत अछि आ नित्य पूजा कर्म मे तुलसी पूजनक चलन जल आ फूल द्वारा पूर्वहिं सँ होइत आबि रहल अछि।

यन्मूले सर्वतीर्थानि यन्मध्ये सर्वदेवता।
बदग्रे सर्ववेदाश्च तुलसित्वां नमाभ्यहम्।।

अर्थात जकर मूल मे सब तीर्थक निवास अछि, जकर मध्य मे सब देवताक निवास अछि, जकर अग्र मे सब वेदक निवास अछि ओहि तुलसीकेँ प्रणाम करैत अछि। संगहिं आयुर्वेद मे औषधिय महत्वक विस्तार तऽ अछिये, सामान्य रूपसँ एकर सामान्य प्रयोग सर्दी-खाँसी ओ विषाणु नियंत्रण हेतु लोक करैते रहल अछि।

चन्दन– ई एहन प्रकार वृक्ष अछि जकर सुगंधित लकड़ी देवी-देवताक पूजा पाठ मे व्यवहार होइत रहल अछि। चन्दनक महिमा स्वयं प्रकट होइत अछि किएक तऽ चन्दनक

बिनु कोनो पूजा-पाठ अधुरे बुझल जाएत अछि। चन्दनक लकड़ीक चनौटा पर घसिकेँ ओकर लेप देवताकेँ लगाओल जाएत अछि आ स्वयं अपनहुँ मस्तक पर लगाओल जाएत अछि।

चन्दनस्य महत पूण्यं पवित्रं पापनाशनम
आपदां हरतं नित्यं लक्ष्मिष्तिठति सर्वदा।

एकर हवन सामग्री मे सेहो अधिक महत्व छैक संगहि वैशाख मास मे गंगा स्नान कएलाक पश्चात श्रीकृष्ण भगवान के चन्दन चढ़ेबाक विशेष महत्व अछि, धर्मसिन्धु मे लिखल गेल अछि–

यः करोति तृतियायां कृष्णं चन्दनभूतिम
वैशाखस्य सिते पक्षे सयात्यच्युतमन्दिरम्।

आम– फलक राजा आम जे फल मे अपन विशिष्ट स्थान राखैत अछि संगहि एहिमे अध्यात्मिक महत्वक संग व्यवसायिक आधार सेहो बेसी अछि। मिथिला मे बेटीक विवाहक काल दूटा वृक्ष आम आ महु केर

पूजनक विशेष चलन पूर्वेसँ अछि संगहि कोनो प्रकारक पूजन काल मे कलश स्थापन मे मुख्य रूपसँ आमक नव पल्लव सँ कलश स्थापनाक व्यवहार अदौ कालसँ मिथिला मे देखैत छी। मिथिला मे तऽ आमक फसल अएलाक उपरांत सब देवी-देवताकेँ प्रथम प्रसाद चढ़ेवाक धार्मीक आस्था मिथिलाक जन-कण मे पसरल अछि।

धात्रिफल (ऑवला)– एहि वृक्षकेँ भारतीय संस्कृति मे उच्च स्थान प्राप्त अछि। वैदिक कालहिसँ कार्तिक मास मे व्रती द्वारा श्रद्धा ओ

विश्वासक संग अरबा-अरबाइन भोजन करैक संग दैनिक पूजनक प्रथा अछि अओर अक्षय नवमीक दिन एहि गाछ तर भोजन संग लोक सबकेँ भोजन करेबाक प्रधानता रहल अछि। एकटा मान्यता अछि जे ऑवला मे औषधीय गुण तऽ ऑवला खयला सँ भेटतै अछि, मुदा एहि गाछ तर छाया मे बैसि खयला सँ लोक स्वस्थ रहैत अछि। व्रतीकेँ सेहो मनोवांछित फलक प्राप्ति होइत छैन्ह।

केरा– केलाक सम्पूर्ण पौधा पवित्र मानल जाएत अछि। एकर पात चौड़ा आ लम्बा होइत अछि आ फल घौड़ मे फड़ैत अछि। विशेष रूपसँ सत्यनारायण भगवानक पूजा मे केराक विशिष्ट स्थान अछि। कोनो शुभ कार्य मे सम्पूर्ण पौधाक सजावट कार्य मे प्रयोग होइत अछि, बृहस्पति दिन केरा गाछक पूजा चना-गुड़ आ जल चढ़ाओल जाएत अछि। पियर वस्त्रसँ झाँपि कऽ साँझ मे दीप जरयबाक विधान अछि, एहिसँ लक्ष्मी प्रसन्न होइत छथिन्ह। केराक फल शुभ मानल जाएत अछि संगहि केरापात पर पूजन कार्य सँ लऽ कऽ भोजन कार्य धरि सम्पादित कएल जाएत अछि आ एकर व्यवसायिक महत्व बेसी अछि।

नारियल– सबसँ नमहर गाछक रूपमे नारियल जानल जाएत अछि, एकर फल अति शुभ मानल जाएत अछि। हवन इत्यादि मे नारियलक आवश्यकता बेसी होइत अछि। कलश स्थापन मे जलदार नारियलकेँ लाल वस्त्रसँ लपेट कऽ सिन्दुर इत्यादि लगा कलश स्थापित कएल जाएत अछि। भारतक आन भाग मे तऽ नारियलक पहिल परतक खोंइचा सोहि कऽ देव स्थान मे फोड़बाक चलन अछि। एकर फल कांच वा सुखल दूनूक प्रयोग होइत

अछि अओर नारियल पानि सेहो ग्रीष्मकालीन समय मे शीतलाक हेतु पेयकेँ रूपमे प्रयोग होइत अछि। सुखल नारियल फलसँ तेल सेहो बहार कएल जाएत अछि, जाहि सँ व्यवसायिक आधार मे एकर विशिष्ट स्थान अछि।

लोक जीवन मे लोकोपयोगी वनस्पतिक महत्व ओ आस्था संग पूजन प्राचीन कालहिं सँ जन-कण मे पसरल अछि, जाहिमे विभिन्न प्रकारक वनस्पतिक संग बाँसक पूजन अनिवार्यरूप सँ होइत रहल अछि। सब शुभ कार्य मे बाँसक प्रधानता रहैत अछि। एहिसँ निर्मित वस्तुक जन्म सँ लऽ कऽ अर्थी धरिक व्यवस्था होइत अछि। मान्यतानुसार वंश परम्पराक लेल सेहो लोक बाँसक नव कोपलक उपयोग करैत छथि।

एहि क्रम मे पूजन ओ आन कार्य हेतु उपयोगी वृक्ष जेना शनि, पलाश, खैर, चिड़चीड़ी, शमी, कुश, आक, धतुर, पान, सुपारी, अशोक, कदम्ब, नीम, दुइब, कमल, बेली, कचनार, चम्पा चमेली, अरहुल इत्यादि ढेर रास पौधा जे अन्न, धन्न, रूप, सौन्दर्य, स्वास्थ्य, शीतलता, स्वच्छ पर्यावरण सहित उद्योग-धंधा इत्यादि मे प्रयोग होइत अछि। अनेकानेक लाभ जीवन चक्र मे हमरा सबकेँ वनस्पति सँ भेटैत अछि। हिन्दू संस्कृति मे जाहिसँ एक लाभ भेटैत छैक ओ देवता जकाँ आदर पाबैत अछि मुदा जाहि वृक्ष सँ जीवनक चक्का चलैत अछि ओ सद्यह देवता तुल्य पूज्य अछि। एहि तरहें वनस्पति पर्यावरणक मजबूत प्रतिनिधि अछि, तैं एकरा जीवन कवच कहल गेल अछि। अर्थात ई सब तरहें सृष्टिकेँ सुरक्षित रखवाक आधार अछि, दुर्गासप्तशतीक कवच मे आएल श्लोक

यावद्भुमण्डलं धते सशैलवनकाननम्।
तावत्तिष्ठति मेदिन्यां संततिः पुत्रपौत्रिकी॥

कहि माक्रण्डेय ऋषि ई सिद्ध केलैन्ह जे वन आ काननक बिनु टिकाव संततिक परिकल्पना करब असम्भव अछि। तैं वन आ कानन मे उपस्थित जीव मात्रक सुरक्षा कवच अछि, हमरा लोकनिकेँ एकर महत्वकेँ बुझैत नित्य पूजा करक परिपाटी जन-जन मे पसरल अछि। ❑

मैथिली भाषा केर दिशा आ दशा

अरविंद चन्द्र दास 'सुबोध'

साहित्य केर काज समाजक यथार्थक चित्रण करनाय होईत छैक आ हमरा जानकारी मे मैथिली साहित्य मे एकर अभाव अछि। मैथिली साहित्य मे सामाजिक परिवर्तनक स्वर किछु आलेख सब मे भेटैत अछि, मुदा एहि तरहक बात आ साहित्य केर चित्रण पुरातन आ जातिवादी रचनाकार लोकनिकेँ नञि पचैत छैन्ह। मैथिली मे विकासक सिद्धांतकेँ निर्वहनक फूसि दम्भ भरयवला कहबाक लेल तऽ सर्व समाजक बात करैत छथि, मुदा मैथिली रचनाधर्मिता खास वर्ग आ खास वर्ण धरि केन्द्रित भऽ कऽ रहि गेल अछि। एकर शैलीकेँ परिवर्तित करबाक सामर्थ्य सबमे रहितो ई एकटा खास वर्णक धुरि मे समटा कऽ रहि गेल बुझना जा रहल अछि, जकर चर्चा कतेको रास पत्र-पत्रिका मे निरन्तर होइत रहल अछि। आब समय आबि गेल अछि जे रचनाकार मैथिली भाषाकेँ एकटा वर्ण विशेषक अतिरिक्त सर्व समाजक बनेबाक साहस आ सामर्थ्य देखाबैथ, जाहिसँ मैथिली भाषाक अस्तित्व एकटा भाषा आ समाजक नाम पर व्यापार बनि कऽ नहि रहि जाए। दल विशेष सँ प्रभावित रचनाकार आ लेखक लोकनि अखन धरि एहि चक्रव्यूहकेँ तोरबा मे समर्थ नहि छथि।

हिंदी भाषा मे दलित साहित्यक सृजन नीक जँका होईत छैक, मुदा मैथिली साहित्य मे ई परिपूर्ण नहि भऽ सकल अछि। जा धरि सब वर्ण आ वर्गक चर्चा मैथिली साहित्य मे नहि होएत ता धरि उपेक्षित लेखक वर्गक समर्थक भाषाई समृद्धिक लेल कोना जुड़त। यथार्थ तऽ इएह अछि जे गाम-घरक सर्वहारा मजदूर लोक, कृषक लोकनि आ तथाकथित छोट लोक एहि भाषाक नियमित रूपसँ जीवित रखने छथि। स्थिति इएह अछि जे आइ बाहर रहयबला लोक सबकेँ मिथिला आ मैथिली अनचिन्हार लागि रहल छैन्ह।

समाज मे आइ मैथिलीक संदर्भ मे इएह कहलहुँ जाइत अछि जे ई कहबीक अनुसार 'जेकरे लाठी ओकरे भाषा' बनि कऽ रहि गेल अछि। एकटा गंभीर पाठकक रूपमे हमहुँ जानैत छी जे एकटा वर्ग विशेषक अलावे अओरो जाति-धर्मक लोक, लेखक, साहित्यकार, रचनाकार, गायक आ कलाकार लोकनि छथि जे अपन मैथिली भाषाक प्रति गंभीर, सजग आ संवेदनशील छथि वा छलाह। हम सब मिथिलाक महान व्यक्तित्व सबकेँ व्यक्तिगत रूपसँ तऽ नहि जानैत छियैन्ह, मुदा जे पढ़ल वा सुनल गेल अछि ताहि मे जिआऊर रहमान जाफरी, कैसर रजा, मंजर सुलेमान, मेघन प्रसाद, महेन्द्र नारायण राम, देव नारायण साह, अच्छे लाल महतो, सुभाष चन्द्र यादव, महाकान्त मंडल, जगदीश प्रसाद मंडल, अभय कुमार यादव, डॉ. बुचरू पासवान, हीरा मंडल, गोपाल सिंह नेपाली, बीलट पासवान 'विहंगम', डॉ. किशन कारीगर केँ अतिरिक्त सर्वश्री लाल दास, डॉ. ब्रज किशोर वर्मा 'मणिपद्म', भोला लाल दास, दामोदर लाल दास, श्री रघुनंदन लाल दास, नरेन्द्र नाथ दास 'विद्यालंकार', डॉ. शेफालिका वर्मा, श्री ब्रह्मदेव लाल दास, श्री शारदा नन्द दास 'परिमल' आदि अपन समाजक सिरमौर लोकनि, पुरोधा लोकनि एहन बहुतो नाम सुमार अछि जे अपन साहित्य सृजनता सँ मैथिली साहित्यकेँ समृद्धि प्रदान करबा मे अपन अग्रणी भूमिका निभौलैन्ह। एकरा संगहि मैथिली साहित्य, संस्कृति, विधि-विधान लेल मिथिलांगन, दिल्ली द्वारा प्रकाशित श्री ब्रह्मदेव लाल दास आ श्रीमती बिन्देश्वरी दास द्वारा लिखित 'मैथिली शुभ संस्कार आ विधि-विधान' मैथिली संस्कृतिकेँ देश-विदेश मे जीवित रखबाक एकटा संदर्भ माध्यमक रूप मे विश्वविख्यात भेल। जे आबयवला साल-दर-साल मैथिल समाजकेँ विश्व भरि मे मिथिला सँ जोड़ने रहि सकैत अछि। आइ गाम-गाम घर-घर ई पुस्तक जकरा मैथिल महापुरूष लोकनि 'मैथिली गीता'क नाम देने छथि, पहुँच गेल अछि।

पटना मे मैथिली लेल समर्पित संस्था चेतना समिति द्वारा दलित महिला अमेरिका देवी आ तीलिया देवीक सम्मानक अर्थ वास्तव मे मैथिली भाषाई क्षेत्र मे दलित महिलाक सम्मान सँ मैथिली भाषाकेँ आन वर्गक अतिरिक्त दलित वर्गक भाषा-भाषी लोकनि

कें मैथिली भाषाक लेल सम्मान भेट सकैत अछि, मानल जा सकैत अछि। यथार्थ तऽ इएह थीक जे आन मैथिल संस्था सबकें सेहो एहि प्रयास कें अपनेबाक आवश्यकता अछि। एकटा खुशीक बात ई अछि जे दूर देश मे सबहक नजरि मैथिली भाषा, साहित्य, कला आ संस्कृति पर लागल अछि, ओ मिथिलाक कला आ संस्कृतिक बाजार तलाश कऽ रहल छथि। मुदा मिथिला क्षेत्रक मैथिल संस्था सब आँखि मुनने छथि आ मैथिली भाषाकें अपना भाग्य पर छोड़ि देने छथि। एहिठाम हम खास चर्चा डॉ ब्रज किशोर वर्मा 'मणिपद्मजी' कें करय चाहब। मैथिली साहित्यक बहुआयामी प्रतिभाक धनि उपन्यासकार, कवि, नाटककार आ मैथिली साहित्यकें अपन साहित्यिक रचना सँ उर्वर बनाबयवला डॉ. ब्रज किशोर वर्मा 'मणिपद्म' अपन विविध रचनाक स्वभावगत विशिष्टताक कारणें अत्यंत लोकप्रिय भेलाह। हुनक लोकगाथात्मक उपन्यास मिथिलाक संस्कृति कें समेटने अछि। लोरिक विजय, नैका बनिजारा, राय रणपाल, राजा सलहेस, लवहरि कुशहरि, दुलरा दयाल आदिक रचना मैथिली भाषाक सर्वांगीण विकास, भाषाई समृद्धता आ लोकप्रियताकें बढ़ाबय मे अपन अविस्मरणीय योगदान देने अछि। हुनक उपन्यासक वातावरण वा विषय-वस्तु मे ओ एहने पात्रक जीवन परिचय केर प्रदर्शन कएलैन्ह जे अपन वर्ग, समुदाय आ वर्ण व्यवस्थाक अन्तर्गत जीवनयापन करबा मे महत्वपूर्ण स्थान राखैत छथि। नैका बनिजारा मे बनिया समाज, संगहि धोबी, हजाम, ब्राह्मण, क्षत्रिय आदिक उल्लेख भेल अछि। राजा सलहेस मे दुसाधक शौर्यगाथाक वर्णन, लवहरि-कुशहरि मे ब्राह्मण द्वारा पूजा-पाठक विधा, भील मलाह आदिक चर्चा अछि। वीर क्षत्रिय राय रणपालक कथा सँ सब मैथिल परिचित होएब। मैथिल समाजक गरीब आ अमीरक अन्तरक सूक्ष्म परख मणिपद्मजी कें छलैन्ह।

कोनो लेखक जा धरि समाजक ग्रामीण जीवनयापन, ग्राम्य समाजक मर्मज्ञता सँ दृष्टिगत नहि हेताह ता धरि समाज पर सब चर्चा व्यर्थ अछि। कहबाक अर्थ ई अछि जे

जा धरि सबवर्ग कें समानताक अधिकार नहि भेटत ता धरि मैथिली भाषा, साहित्य आ संस्कृतिक विकास सम्भव नहि अछि। कारण, जे आजुक परिवेश मे अपने देख सकैत छी सबठाम एक वर्ण विशेषक लेखक, गायक, कलाकारक चर्चा होएत अछि। जौं ई समाज आन वर्णक सेहो सहभागिता सुनिश्चित करतै तऽ मैथिली भाषा, साहित्य आ संस्कृति विश्व पटल पर आबि सकैत अछि। ई समाजक जिम्मेदारी थीक जे एक वर्ण विशेषक संग ओ आन वर्णक लेखककें सेहो लेखक बुझैथ, कलाकार बुझैथ, हुनका सेहो मैथिली कार्यक्रम सबमे उचित स्थान दैथ। संगहि आन वर्ण मे सेहो मैथिली भाषा, साहित्य आ संस्कृतिक विकास लेल नव सम्भावनाक तलाश करैथ।

ई बात तऽ सत्य अछि आ हृदय सँ स्वीकार करयवला अछि जे मैथिली भाषाक विकास मे ब्राह्मण समाज अग्रणी रहल अछि, मुदा एकर अर्थ ईहो नहि भेल जे आन वर्णकें सहभागिता सँ वंचित राखल जाए। आवश्यकता एहि बातक अछि जे आन वर्णक कलाकार, लेखक, गायक आ भाषाक प्रति संवेदनशील व्यक्तित्व कें सेहो तलाशल जाए, तराशल जाए जाहिसँ मैथिल समाज सशक्त भऽ सकय आ मिथिला राज्य केर सपना सेहो साकार भऽ सकय। मुदा एक बात हम कहि दी जे, आबय वला समय मे जौं समग्र मैथिल समाज सजग नहि भेलाह तऽ मिथिला बड्ड पाछाँ भऽ सकैत अछि।

हमरा लोकनि मिथिलांगनक झण्डाक तर मे मैथिली भाषाकें संविधानक अष्टम सूची मे शामिल करेबाक लेल संघर्ष केने छी, जकर इतिहास गवाह अछि। ओ लाठी, पानिक बौछार आ प्रशासनक दुर्व्यवहार सबटा सहने छी, श्री वैद्यनाथ झा आ श्री भीमनाथ झाक संग हमर संघर्षकें आन मैथिली प्रेमीजन सेहो जानैत हेताह। मैथिलीक लेल दिल्ली स्थित मैथिली भाषा, साहित्य आ संस्कृतिक विकासक लेल प्रतिबद्ध अग्रणी मैथिली संस्था मिथिलांगन सेहो निःसंदेह पिछला 30 बरख सँ मैथिली भाषाक प्रति अत्यन्त संवेदनशील अछि। आशा करैत छी जे हमरा लोकनि सब धर्म, वर्ग आ जातिक संग लऽ मिथिलाक विकासक लेल संवेदनशील बनल रहब, जाहिसँ मैथिलीक व्यापकता आ लोकप्रियता निरन्तर बनल रहय।

संक्षेप मे, कहल जाए तऽ मिथिला आ मैथिलीक सर्वांगीण विकास तखने सम्भव अछि जखन सब विधा पर रचनात्मक काज होए, ताहि लेल सब मैथिलजनकें समयानुसारे अपनाकें ढ़ालय पड़तैन्ह, तखने मैथिली भाषा, साहित्य आ संस्कृतिकें सही दिशा भेटत आ एकर दशा सुधरत। खाली ढ़ोल पिटला सँ नञि मैथिलीक विकास सम्भव होएत आ नञि मिथिलावासीक कल्याणे होएत आ नञि मिथिला राज्यक सपना साकार होएत। ❑

संपन्नताक अवसर अछि प्रवास

आलोक कुमार

प्रवासी भावक आवश्यकता पर हमर पसंदीदा शायर निदा फाजली केर लिखल पाँति अछि-

कभी किसी को मुकम्मल जहाँ नहीं मिलता
कहीं जमीं तो कहीं आसमाँ नहीं मिलता।

कोरोना संताप काल अछि। महामारी मचल अछि। एहि साल कहुना जान बचय। सभहक उद्देश्य इएह अछि। एहिमे वास कि आ प्रवास कि? जे जतय छी, ततय बस सम्हरि कऽ रहु, बाँचि कऽ रहु। जतय धरि वास-प्रवास केर तुलनाक संबंध अछि, तऽ वासडीह केकरा नहि नीक लागैत अछि। निज वासक प्रति जे मोह होइत अछि ओ मोह प्रवास मे उत्पन्न केनाय कठिन। ताहि लेल प्रवासक सामान्य जन संताप बुझय छथि। हँ, किछु विशेष लोक अश्वय छथि जे 'लिखा न विधि कलकत्ता कमाई' जपैत रहैत छथि। प्रवास पर जेबाक बाट वा अवसर जोहैत रहैत छथि। अपना सब ओतय अनेक शौर्यपुरुष भेलाह जे प्रवासक वास सँ नीक सुवासित करबाक सामर्थ्य देखौने छथि। वासक माने निज रहय बला स्थान। अपन डीह-घर-दलान-टोल-गाम। अपन भरल गाछी, खेत-पथार। एहि वास सँ जौं उपटि कऽ किनको, कत्तौ जा रहय पड़य तऽ ओ भेलाह **प्रवासी**। हुनक वास भेलैन्ह प्रवास। प्रवास कें लऽ कऽ मतभिन्नता अछि। जेना हमर नजरि मे प्रवास संपन्नताक संभावनाक प्रतीक अछि। किनको नजर मे प्रवास अभिशाप सेहो हेतैन्ह। सभहक भावक सम्मान अछि।

नानक जातक कथा अछि- गुरुनानक शिष्यक संग प्रवास पर छलाह। नीक लोकक गाम पहुँचलाह। अद्भूत आवोभगत भेलैन्ह। ग्रामीण सब हुनका आतिथ्य सँ तृप्त कऽ देलैन्ह। नीक समय बीतल। नानक दल बल संग अगिला प्रवास लेल जाए लगलाह। श्रद्धानत ग्रामीण दूनू कल जोड़ि ठाढ़ रहथिन्ह। गुरुनानक हाथ उठा आशीष देलैन्ह, "जाऊ, उजड़ि जाऊ।" संगक शिष्यगण हतप्रभ रहि गेलाह। हुनका सबकें बड्ड खराप लगलैन्ह। मुदा मर्यादा रहय, गुरु सँ पुछताह कें?

अगिला गाम मे हेठीबला लोक सभ रहय। गाम घुसतैह नानक बाबाकें सब दुर-दुराबय लागल। भीक्षा-दान मे खुब उपराग भेटलैंह। गुरुनानक तऽ मुस्की मारैत रहलाह। मुदा शिष्यगणक टाइम जेना तेना कऽ कटलैन्ह। गाम छोड़ैत काल नानक बाबा आरो अनर्थ कऽ देलैन्ह। ओहि ग्रामीण सबकें आशीष देलैन्ह, "एहि ठाम बसल रहू।"

ई सुनि एहि बेर शिष्यगणगणक मोन मे आगि लेस देलकैन्ह। तमसा कऽ मर्यादा भंग केलैथ आ गुरुनानक सँ पूछि लेलाह, "गुरुजी! ऐहन किया केलियैय। अहाँ सँ उनटा तऽ नहि कहा गेल? जे ग्रामीण सब सम्मान देलक ओकरा उजाड़ि देलियै, अओर अपमानित करय बला दुर्जन सबकें बसल रहबाक आशीष दऽ देलियै?

सिद्धपुरुष गुरुनानक शिष्यक आवेश शांत करैत कहलैन्ह, "देखु बौआ, जौं नीक लोक उपैट कऽ प्रवास पर नञि जेताह, दूर-दूर धरि नहि पसरता, तऽ दुनिया मे नेकीक कोना प्रसार हेतय? आ जौं बेजाय लोक इम्हर-उम्हर जेताह, तऽ दुनिया मे बेजाय बातक प्रसार होएत।" नानकक मर्म बुझि शिष्य शरणागत भेलाह।

प्रवास कोनो नव बात नहि अछि। भनहिं एहिमे अपना सबकें मजबूरी बुझाइत अछि। मुदा हम एकरा गुरुनानकक भावसँ बुझैत छी। नीक लोक यत्र-तत्र सर्वत्र पसरबाक चाहि। ओहनो अपना सब एकहि मनुजक संतान छी। समाजशास्त्रीक अध्ययन मे हर पीढ़ी मे प्रवासक अवसर आबैत अछि। हमर सभहक पूर्वजक कोनो-ने-कोनो पीढ़ी कें प्रवासक अवसर भेटल रहल होएत, जाहि पर केओ-नञि-केओ शुरवीर अमल केने हेताह। ताहि लेल हम सब कर्नाटक सँ ओड़िशा, असम होएत मिथिलाक अपन-अपन गाम मे आबि कऽ रमि गेलहुँ। पंजी मे प्रचलित मूल-वास-डेराक सोझ सरोकार प्रवास सँ अछि। जौं अपन सभहक कोनो पूर्वजक पीढ़ी एक ठाम सँ दोसर ठाम जा बसबाक सामर्थ्य नञि जुटौने रहिताह तऽ अपना सब कोना

अपन मूल आ गामक विविधताक बात कऽ पबितौंह।

हमरा सब मे प्रवास करबाक शौर्य कुटि-कुटि कऽ भरल अछि। हमर गाम बहादुरपुर अछि। गामक लोक चारि-पाँच पीढ़ी पहिने सँ नेपाल जा बसलाह। गाम मे अखनो नेपाल सँ आएल दक्षिणेश्वर काली छथिन। हुनका हमसभ अपन पूर्वज मंगलसेनक नाम पर मंगला काली कहि पूजैत छियैन्ह। दरभंगा राज सँ हमर परिवार कें निर्मली लग लौकही-धनछिया मौजे भेटल छल। ओहि दिन मे परिवारक स्वर्गीय जय कृष्ण लाल दास महान स्वतंत्रता सेनानी भेलाह। सतत् प्रवास पर रहि ओ आजादीक लड़ाई मे अप्रतीम योगदान देलैन्ह। देवानजीक पारंपरिक काज करैत परिवारक एक वृक्ष लौकही मे बसि रहलाह। ओतय सँ हमर यशस्वी वंशज स्वर्गीय उमेश लाल दास भेलाह। ओ बरसो लोकहीक मुखिया रहलाह। मधुबनी जिला परिषद सदस्य रहि राजनीति मे लब्ध प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त केलैन्ह।

अपन निकट पूर्वजक प्रवासक कथा मिसाल अछि। हमर बाबा स्वर्गीय अशर्फी लाल दास अस्पतालक नौकरी मे चाईबासा सँ दरभंगा एलाह, तऽ हुनक अनुज स्वर्गीय मनोहर लाल दास रिटायरमेंट धरि हजारीबाग मे जंगल संग हमर सभहक जिंदगी सजाबय मे लागल रहलाह। बाबाक एक भाए स्वर्गीय सिंहेश्वर लाल दास चाईबासा मे सम्मानित रूप सँ जमल रहलाह। हमर बड़का बाबूजी स्वर्गीय राघवेंद्र लाल दास एअरफोर्स मे रहैथ। हुनका लेल जमीन सँ लऽ आकाश धरि प्रवास केनाय कठिन तप कहियो नहि रहलैन्ह। पिता स्वर्गीय राजेन्द्र लाल दासकें प्राध्यापकक नौकरी मे निरंतर स्थानांतरण होएत रहलैन्ह। सपरिवार रांची, गया, बेतिया, दुमका, मुजफ्फरपुर रहय पड़लैन्ह। हुनक प्रवासी जीवनकें हम अपन थाती बुझैइत छी। गामक संग सबठामक सहपाठी आ संगी अखनो संपक्र मे छैथ।

पिताक तीन भाए सँ हमसभ आठ भाए छी। एहिमे ककरो, कखनो, कत्तौ उपटि कऽ जेबा मे आलस नहि बुझाइत अछि। अमेरिकाक वेस्ट वर्जीनियाक मोरगन टाउन सँ लऽ कऽ मुंबई, कोलकाता, बेंगलुरू, पुणे, दिल्ली आ दरभंगा धरि मे आबाद छी। श्रेय जेनेटिक्स मे बसल प्रवासी गुणकें जाइत अछि। ई बात अलग अछि जे सबकें मोन सदखनि गाम पर लागल रहैत अछि। सपना मे गामे कें गुनैत आ गुथैत रहैथ छी, मुदा व्यवहार मे जतय छी, ओकरे गाम बना देबाक भाव मन मे आस्था सँ राखैत छी।

लॉकडाउन मे प्रवास आ प्रवासीक व्यथा-कथा खूब छलकल। मानवता कें लज्जित करयबला अनेक बात भेल। एक सँ बढ़ि कऽ एक कुकर्म सुनबा-देखबा मे आयल। अनेक प्रवासी कें जान गमाबय पड़लैंह। गाम पहुँचय सँ पहिने हुनक जीवनक इहलीला समाप्त भऽ गेल। अराजकता आ हताशाक ई सब कथा आब इतिहास मे दर्ज अछि। गामे गाम प्रवासीक हड़कंप सँ उपजल अपमानक कथा पहुँच गेल अछि। लोक सब अपना-अपना हिसाबे एकरा याद केने रहताह। जेना हम सब 1934क भूकंप, तदुपरांत अकाल-प्लेग आ 1942क भारत छोड़ो सँ लऽ कऽ जे पी आंदोलन कें याद अपन जेहन मे राखने छी। प्रवासी संताप कथा सबमे ज्योति कुमारीक कहानी हमर पसिनक कथा अछि। विपन्नता सँ भरल जीवन मे ज्योति जहिना अपन पिताकें साइकिल पर लऽ गुरुग्राम सँ दरभंगा पहुँच गेलीह। ओ आबयबला युग मे ज्योति कें अदम्य साहसक प्रतीक बनौने रहत। महानगर आ शहर सँ कोरोना काल मे जेना-तेना कऽ गाम भागयबला लोकक संख्या करोड़ों मे अछि। पेटक भूख आ रोजगारक संकट चिंतनीय अछि। आगू अर्थव्यवस्था कें की होयत? हमरा बुझाइत अछि, जे होयत नीके होयत। किएक तऽ मानव सभ्यता प्रगतिशील अछि। आबयबला काल्हि बितला काल्हि सँ किछु-नञि-किछु बेसी विकसित होइत अछि। बस आवश्यकता अछि जे हम जतय रहि ओकरा अपन स्थान, अपन समाज बुझि विकसित करय मे लागल रही। प्रवासी बोधक संताप सँ सदिखन उबरल रहि। ❑

समय केर पहिया

कुमार मनोज कश्यप

कोरोना... कोविड-19... एहन दिन दुगुणा राति चौगुणा सौंसे संसार मे पसरैत प्रलयंकारी महामारी जकर कोनो निश्चित निदान नहि आ तैं सभ आतंकित। पैघ-पैघ

महाशक्ति आ साधन संपन्न देश सभ एहि अन्हर मे हहा कऽ खसय लागल। अस्पताल आ डॉक्टर कम पड़य लगलै... लहाशक पथार लागय लगलै। सम्पूर्ण लॉकडाउन... जीवन आतंके ठहरि जकाँ गेलै ... अपने घर मे कैद। अपनो लोक सँ लोक डेराय लागल जे किंसाइत ओकरा सँ छूति नञि लागि जाए बिमारी कें। सभटा स्थापित सम्बन्ध आ मान्यता तेहन नञि बदलि कऽ राखि देलकै जे लागय छै जे जौं एहिना रहलै तऽ आपसी सम्बन्ध, भाईचारा, सहयोग, मेल-मिलाप, भेट-घाँट आदि-आदि आब इतिहासक पन्ने मे भेटतै। जे अप्रवासी लोक सभ कहियो भारतकें रहबा योग्य देश धरि नहि मानैत छलाह आ सपरिवार विदेशे मे बसय चाहैत छलाह से आब अपन देश घुरि आबय लेल अपस्यांत छैथ आ जे गामकें सुविधाविहीन आ रहबा योग्य नहि मानि महानगर आ नगर मे प्रवास केने छलाह से येन-केन-प्रकारेण गाम जेबा लेल उद्यत छैथ।

कें सोचने छल जे समयक चक्र कहियो अकस्माते उनटा चलय लगतै! ❑

कोरोनाक कालमे प्रवासी मजदूरक कथा

रामबाबू सिंह

पराधीन सपनेहुँ सुख नाहिं।
कर विचार देखहुँ मन माहिं।।

दोसरक अधीन लोकक सुख सपनहिंटा मे भेट सकैत अछि यथार्थ मे नहि! मानसिक, आर्थिक, बौद्धिक वा राजनीतिक आदि कएको प्रकारक पराधीनता भऽ सकैत अछि। जौं केओ स्वविवेककेँ तजि दोसरक विचारसँ प्रभावित होएत छथि तऽ हुनकर अनुसरण करबाक बाध्यताकेँ पराधीनता कहल जाएत अछि।

हितोपदेश मे उद्धरित अछि 'जौं पराधीन लोककेँ जीवित मानैत छी तऽ मुइल कें अछि?' असल मे स्वाधीनता प्राणिमात्रक जन्मसिद्ध अधिकार अछि। सृष्टिक समस्त जीव-जंतु स्वाधीनता चाहैत अछि। दोसरक अधीन व्यक्तिक सोच मे संकीर्णता आ नाकारत्मकता बेस विद्यमान रहैत अछि। जिनक आत्मा दबल, पिचाएल, पीड़ित शोषित होए ओ सकारात्मक क्षमताक सृजन भला कोना कऽ सकैत छथि! जिनक स्वाभिमान खसि पड़ल होए ओ स्वयं कोना उठि सकैत छथि! परञ्च एकर अचूक औषधि जौं अछि तऽ ओ अछि 'आत्मविश्वास आ आत्मनिर्भरता' जे जीवनक संघर्ष सँ पुनर्स्थापित कएल जा सकैत अछि।

आत्मनिर्भर स्वावलंबन अर्थात सोंगर बिनु अपन पएर पर ठाड़ होएब। ई पाठ कोनो विद्यालय किंवा किनको प्रवचन सँ नञि पाओल जा सकैत अछि! परंच जीवनक बेगरता स्वयं एहि भावनाकेँ जागृत कऽ दैत अछि। स्वसामर्थ्यक साधनासँ आत्मनिर्भर होएबाक प्रयास कें नहि करैत अछि? मुदा सभहक सौभाग्य कतहु जागलय। कबीरा एहि संसार मे भाँति-भाँतिक लोक। अपन देश मे सभ किछु भाग्य भरोसे चलैत आबि रहल अछि। अपन ज्ञान, विवेकक मोताबिक कर्म तऽ सभ करिते छी तत्पश्चातो बहुसंख्यक लोक अपन भाग्यरेखाकेँ नञि बदलि सकलाह।

कोरोना वायरस वैश्विक महामारी रूप धारण कऽ दुनियाक समस्त विकसित आ विकासशील देशकेँ शोणित सोंखि रहल छैक। लाखों-लाख लोक जान गमा चुकल अछि हजारो लोक नित भेट चढ़ि जाएत अछि। तेहन मे लोक आर्थिक, शारीरिक, मानसिक बौद्धिक आदि सब तरहेँ टूटि चुकल अछि। भारतमे लोक कोरोना वायरससँ कम भूखक डरसँ बेसी डेराएल अछि। लाखों-लाख लोक प्रवाससँ भुखले पिआसले मरैत-खपैत

पदयात्रा, बसयात्रा, रेलयात्रा आदि सँ घर वापसी कऽ गेलाह। प्रवासमे जे बाँचल छथि ओकरामे सँ बहुतोक संग रोजगारक समस्या भेल छैन्ह। नौकरी करयबालाकेँ नौकरीक चिंता, लघुउद्योगबालाकेँ काजक चिंता, मतलब एकटा कहबी अछि जे 'कन्हा बिआह मे आफदे आफद' सएह बुझि।

मुदा बिहारमे जे जतय सँ दिहाड़ी मजदूर सभ पहुँचलाह अछि, हुनका सभ लेल सरकार 'मनरेगा आ जल जंगल जमीन' योजनाक अंतर्गत छह मास धरि रोजगार दऽ अवश्य ओझराओल राखतैन्ह। आगामी विधानसभा चुनाव मे बिहार सरकार एहि आफद मे अवसर देखि रहल अछि। मजदूरकेँ चाही काज आ सरकारकेँ एखन चाही मजदूर। दूनूक हाथमे लड्डू छैन्ह। रोजगारक अवसर दऽ सरकार आगामी चुनाव मे एकर लाभ उठेबाक प्रयास करताह आ मजदूर घरहिं पर महानगर जकाँ कमाई करबाक प्रयास करताह।

बिहार मे अगस्त धरि प्रवास सँ वापसीक एकटा अनुमानित आंकड़ा करीब एक करोड़ धरि पहुँचि चुकल अछि। सरकार मजदूर सभहक मेलाकेँ देखि लोक लोभावन घोषणा कऽ अपना पक्ष मे लहरि बनेबाक प्रयास शुरू कऽ चुकल अछि। चुनाव धरि झमटगर रोजगार काज सभ देखेबाक अवसर अवश्य भेटत, तत्पश्चात जानथि जानकि। एहि तरहें कोरोनाक कराल कालक अथाह अव्यवस्थाक उपरांत आफद मे अवसरक आस देखल जा सकैत अछि। ❑

पुरस्कार लऽ कें नाचू

डॉ. किशन कारीगर

केकरो सँ चिन्हा परिचय अछि कारीगर
नहि यौ सरकार, तऽ अहिं कहू की हम करूतऽ
आउ हमरे सँ चिन्हा परिचय कऽ लियऽ
आ पुरस्कार लऽ कें नाचू।

अपने कुटुम बैसल छथि
अकेडमी आ चयन बोर्ड मे
लिखा परही करबाक कोन काज
तिकड़मबाजी कऽ लगाबै छी पुरस्कारक भाँज।

हिनके कृपा सँ भेटल पुरस्कार
खुशी सँ लागल बोखार
कविता कहानी तऽ तेरहे बाईस मुदा
पुरस्कार लेल लगेलहुँ खूम जोगार।

अहाँ जे लिखलहुँ कारीगर
ओ लागल बड्ड नूनगर
मुदा बिनमतलबो हम जे लिखलियै
ओ लागल बड्ड चहटगर।

बिनमतलब कें कथा साहित्य पर
अकेडमी सँ एक दिन आयल हकार
कुटुम बैसले रहथि ओहिठाम
टटके भेटल पुरस्कार।

आन कतबो नीक किएक नै लिखलक
मुदा ओकरा नै कहियो आएत हकार
नञि छै ओकरा कोनो चिन्हा परिचय
पिछलगुआ टा कें जल्दी भेटत पुरस्कार।

पुरस्कारक बदरबाँट भऽ रहल अछि
जाति वर्गक नाम पर लेखक के बाँटू
जूनि पछुआउ पिछलगुआ सभ आऊ आगू
अहाँ पुरस्कार लऽ कें खूम नाचू।

साहित्यक मठाधीश सभ
शुरू केलैन्ह पुरस्कार
यथार्थवादी चितंक आ लिखनिहार
हुनका लेल भऽ गेलैथ बेकार।

एक्को मिनट देरी नञि अहाँ करू
हुनके गुणगानक कथा अहाँ बाचू
नहि तऽ जिनगी भरि पाछुए रहि जाएब
पुरस्कारक जोगार मे जी-जान सँ लागू।

एहि दुआरे पछुआले रहि गेल कारीगर
कहियो नञि केलक केकरो आगू-पाछू
देखैत छियै आब हम दोसर पुरस्कार दुआरे
जोगार लगा करैत छी हुनकर आगू-पाछू।

बेस बड्ड बढ़िया, हम शुभकामना दैत छी
दोसर पुरस्कार अहाँकें जल्दीए भेट जाए
जल्दी जोगार मे अहाँ लागू
अहाँ पुरस्कार लऽ कें खूम नाचू। ❑

कोना कें करबै निर्वाह

अरविन्द मिश्र 'नीरज'

घर नञि द्वार छै, खुट्टा टा ठाढ़ छै
देखि मोन लागै बताह।
सोचि रहल मंगना, कोना कें करबै निर्वाह।।

पेटक जोगाड़ लेल, गेलौंह रोजगार लेल,
बूड़ल जुवानीक नाह।
सोचि रहल मंगना, कोना कें करबै निर्वाह।।

छोड़ि गेलौंह अपन देश, बिगड़ि गेल भाषा भेष
लोक कहय गामक घताह।
सोचि रहल मंगना, कोना कें करबै निर्वाह।।

छोड़ि गेलौंह माए-बाप, केने छलौंह ई जे पाप
सत्ते ई काज अदलाह।
सोचि रहल मंगना, कोना कें करबै निर्वाह।।

रोगक डर लेल, शहर से दबारि देल,
विपतल लेल कत्तौ नञि राह।
सोचि रहल मंगना, कोना कें करबै निर्वाह। ❑

प्रेम-विरह गीत

प्रो. अंजु दास

अहाँ रातुक पूर्णिम चाँद प्रिये,
हम विरहक निशा अन्हार।
अहाँ भोरक वसन्त बहार प्रिये,
हम सावनक फुहार।

अहाँ कल्पना कुँज मे रमि-रमि,
बाँसुरि तान सुनयलहुँ,
हम तिमिर पूंज मे भटकि-भटकि
तन-मन कें सुधि बिसरयलहुँ,
जगतक तारणहार अहाँ
हम अहिंक छी श्रृंगरहार।

अहाँ गोकुल त्यागि वृन्दावन मे
सखियन संग रास रचयलहुँ।
कोयल केर पिपासा वृत मे हम
नित नव-नव रूप निरेखलहुँ।
हृदय सिन्धु मे रहि-रहि उठैछ
अहिंक सुधिक झंकार।

अहाँ क्षीर सिंधु मे बिचरि-बिचरि
नव युग केर ध्यान लगयलहुँ।
ब्रह्माक कमण्डल मे रचि-बसि
मत्सय भऽ सागर समयलहुँ।
प्रेम विरह सँ दग्ध हृदय मे
रहि-रहि उठ अछि ज्वार।

अहाँ नेत्र नीलिमाक आभा मे
प्रतिभाषित हमर कलेवर।
अहाँ ओहि कलेवर कलशविधाक
स्वर्ण सिया बनबयलहुँ।
धैर्यक बान्ह जखन मोर टूटल
अहिं हरलौन्ह कष्ट हमर।

गमन कएल मैहर मे आब हम
नञि लागत भूख पियास।
कोन कसुर बनवास पठयलहुँ
प्रश्नक होइछ आभास
प्रिये एक प्रश्नक होइछ आभास। ❑

कोरोना महामारी

विनिता मल्लिक

नञि देखैत अछि धर्म,
नञि पूछय ओ जाति,
नञि रूकत स्वीकृति लेल,
नञि देत हिदायत।

बिनु पदचाप कें पसरल,
अछि बनल सम कें रथी,
मनुजताक लाभ उठाबैत,
मनुजहिं कें बनौने सारथी।

अति सूक्ष्म रहितहु,
विकराल असुर अछि ओ,
वसुधा कुटुम्ब कें,
काल गाल मे धकलैत ओ।

समाजिकताक शत्रु बनि,
निर्दोष प्राण हरि रहल,
अप्पन सँ अप्पन कें,
दूर केने जा रहल।

छीन रहल उनमुक्तता,
विश्वास जे भेटय नेह सँ,
शीतलताक स्थान पर,
भयावहता टपकय देह सँ।

की होएत कोना कऽ टरत,
दूर रहय वला ई भाव,
अछि खतरा मे पड़ल,
समाज संग चलब कें सुभाव।

केवल हिम्मत आ अनुशासन सँ
जीत पायब सब एकरा,
राखि स्वयं कें स्वच्छ,
जबाव देबैन्ह हम तगड़ा। ❑

अपन देश प्रिय

सुरेश कंठ

कोरोना कें भगाऊ अहाँ सब
बड्ड मुश्किल मे देश प्रिय।

बड्ड चिन्तित मे हमसभ छी
एकर करू समाधान प्रिय।

सब सिस्टम भऽ गेल निष्क्रय
कतेक अओर करब इन्तजार प्रिय।

चाईना कोरोना माँगि रहल अछि
सहर्ष ओकरा वापस कऽ दिय प्रिय।

पाकिस्तान अखन आँखि दिखाबय
चुकता करू ओकर हिसाब प्रिय।

नेपाल सेहो अखन किछु घुड़कि मारय
ओकरा सँ बाद मे निपटि लेब प्रिय।

चायना तऽ चारूकात सँ घीरल
चारोनाल चित्त भऽ जाएत प्रिय।

कहय सुरेश कंठ लाऊ एकरा पटरी पर
एहि मे नहि कनिको करू बिलम्ब प्रिय।

कोरोना कें भगाऊ अपना सब
इएह अछि एकर निदान प्रिय। ❑

सार्थक जीवन

विजय कुमार

जन्म लेल
निक पालन पोषण भेल
पठन-पाठन संग
कर्त्तव्यबोधक ज्ञान देल गेल।
रामचरित मानस
अनुकरणीय भेल
कर्तव्यक फल
मिलैत गेल।

सामान्य जीवन
उत्कृष्ट विचार,
सार्थक मेहनत
इएह छल जीवनक सार।

जीवनक लक्ष्य
पूर्ण होइत गेल।
सामान्य उपलब्धि
पूर्ण भेल।
विधायक सांसद
बनबाक लक्ष्य नहि,
नेतागीरी करबाक
कहियो इच्छा नहि।

टाटा बिरला/अम्बानी
बनबाक मन नहि भेल,
अधिकारी बनबाक
लक्ष्य पूर्ण भेल।
एहिना बितल जीवन।
एकरा कहै छी सार्थक जीवन।। ❑

चललहुँ मिथिला धाम सँ

नेहा कुमारी

चलिलहुँ अपना गाम सँ।
आजु मिथिला धाम सँ॥

खेत खलिहान नञि उपजा बारी,
छोड़ि चलिलहुँ पुत्र आ नारी।
मातु पितुक प्रेम सँ वंचित,
बिरान भेलहुँ अपना गाम सँ।
चलिलहुँ मिथिला धाम सँ॥

दोसर राजक मित्रक संग,
करय लगलहुँ जीवन यापन।
करि मजूरी देखू शहर मे,
संग नञि कियो निज गाम सँ।
चलिलहुँ मिथिला धाम सँ॥

देखि आइ ई विपदा भारी,
कोरोना नामक भेल बिमारी।
भगलहुँ देखु आइ शहर सँ,
हम ज्ञान समांगक अभाव सँ।
चलिलहुँ मिथिला धाम सँ॥

जाहि रोटी लेल त्यागलहुँ घर,
वएह रोटी रेलक ट्रैक पर।
बिखरल अछि नञि पुछय कियो,
भेटल उजरा वस्त्र प्रभु राम सँ।
चलिलहुँ मिथिला धाम सँ॥

मिडिया गवरमेंटक भीड़ लागल अछि
आइ हमरा Exclusive विमान भेटल अछि।
टीवी जगत मे भेलहुँ प्रचलित
MIigrant Worker नाम सँ।
चलिलहुँ मिथिला धाम सँ।।

बंद पड़ल अछि चीनी मिल
बंद देखल मखान उद्योग
ठप्प पड़ल देखु जूट मिल
बंद अछि सिल्कक उद्योग सँ।
चलिलहुँ मिथिला धाम सँ।।

कि हमहुँ जाएब शहर एक दिन?
कि हमरो लागत इएह रोग?
कि हमहुँ दूर होयब एक दिन?
बेटा पूछैत अपन माए सँ
चलिलहुँ मिथिला धाम सँ।।

भरि कऽ आँखि मे नोर
भेलौंह वंचित अपन नाम सँ।
बिरान भेल अपन गाम सँ
अपन प्रिय मिथिला धाम सँ।
चलिलहुँ मिथिला धाम सँ।। ❑

गाम दर्शन

रेणु दास

कुल देवीक करू अराधन
गामक तीर्थ सबसँ मनभावन।
वर्ष मे निश्चित एक दिवस बनाऊ
गाम दर्शन लेल अवश्ये आऊ।।
खेत-खरिहान विरान पड़ल अछि
टुकुर-टुकुर सब घर तकै अछि
देहरि-केबार सब सिसकि रहल
बाड़ी-झाड़ी सब उजरि रहल
झट दऽ आबि एकरा सबकेँ जूड़ाऊ
गाम दर्शन लेल अवश्ये आऊ।।

गाछी-दलान तऽ भम्म पड़ल अछि
पोखरि-झांखरि ने नीक लगै अछि
हाटक झिल्ली कचरी आ मुरही
लेमनचुस, लड्डा आ गुड़क रोटी
गाम आबि बच्चा बनि जाऊ
गाम दर्शन लेल अवश्ये आऊ।।

बिड़िया, तीसीयौरी, बड़ी, अदौरी
तिलकोरक तरूआ आ सकरौरी
सजमैन तीसी, मरूआ रोटी
मारा, गैंची, ईचना आ पोठी
बिसरल चीज केँ मोन पराऊ
गाम दर्शन लेल अवश्ये आऊ।।

गामक पपीता दशहरी सँ बढ़ियाँ
जेठ मे सत्तू पूस मे बगिया
जामुन, लताम आ खमहरूआ
पोखरिक माछक मूड़ी रेहुआ
आबि कऽ एहिसँ स्वास्थ्य बनाऊ
गाम दर्शन लेल अवश्ये आऊ।।

फफकी-फफकी केँ गाम कानय
जा कऽ सब परदेश बसय
कहिया आएब नैन जूड़ाओत
सब काज छोड़ि कऽ झट दऽ आऊ
आबि केँ एतय सँ कतऊ नहि जाऊ
गाम दर्शन लेल अवश्ये आऊ।। ❑

मड़ुआ रोटी

किरण दास

मड़ुआ रोटी माछक झोर,
खाई छथि सब कोई भोरे-भोर।
आँखि सँ कतबो बहय नोर,
मचाबय नै तैयो कियो शोर।।
मिथिलाक लोकक बुद्धि विशाल,
कऽ लिय सब किया जाँच पड़ताल।
कतबो जे कियो ठोकय ताल,
मैथिल नञि होई छैथ बेहाल।।
घुमि लिय मिथिलाक सबटा गाम,
सबसँ सुंदर अपन धाम।
देश-विदेश मे करय छथि नाम,
चाहे होए केहनो काम। ❑

भूगोल सँ मेटाएत इतिहास

ऋतेश पाठक

स्वतंत्रता सेनानी एक्सप्रेस केर
जेनरल डिब्बा मे लुधकि कऽ
दिल्लीक अधकच्चू मोहल्ला सबमे
ठमकि गेल स्वप्न सबकेँ
नञि बुझल छल जे
घुरबाक मजबूरी आओत जखन
स्वतंत्रता सेनानी केँ कहय
शहीदो एक्सप्रेस नञि चलि सकत तखन।

बुझल होएत कोना भला
लाल बुझक्कड़ सभहक तऽ
बुझौअल विद्या
हेरा गेल छैन्ह एखन
आ ई सब तऽ
अबूझ-बेबूझ आ कि
कखनो कनि बेशी बुझनुक
होनहार सभ छथि।

की छैक डब्ल्यू एच ओ?
की महामारी?
कोन बहस ताहि सँ,
एतय तऽ नेताक बोल भारी
लाउडस्पीकर पर चिचिया कऽ,
कहि गेल छल कियो
एक मीटर दूरी, छै जरूरी,
जीवन बचेबाक लेल
एतय पच्चीस गज मे होए छल
तीस मनुखक गुजारा
कहुना दू सांझ पेट भरबाक लेल।

आब अहिं कहू,
कोना हेतै सोशल डिस्टेंस
देख कऽ फ्यूचर, ई प्रेजेंट
किएक नञि यादि करत पास्ट टेन्स
जखन सरकारियो खजाना
दऽ देलक महीने भरि मे जवाब
तखन तऽ ठीके छल,
ओ कम पढ़ल लोक सभहक हिसाब
कतेक खा सकैत छल माँगि माँगि
तैं भनहिं चलि देला अपन झोरा टाँगि।

मुदा आब जखन ठमकल छल,
रेल-बस सभ केर पहिया।
कें देत भरोस आ कें बताओत
एहि रातिक भोर हेतैक कहिया?
धेने घरमुँहा बाट, ससरैत पएरे पएर
यादि करैत हेताह ओ सब
वैशाली आ लिच्छवी एक्सप्रेस
मुदा हुनक सपनो मे नञि आबैत हेतैक
ओ वैशाली आ लिच्छवी गणराज्य।

जकर इतिहासक इतिवृत्त सुना
नीति नियंता सभ
गाल बजाबैत छथि भरि दुनिया सँ
किएक तऽ विक्रमशिलाक अस्तित्व
पहिनहिं मेटा देल अछि ओहि भूगोल सँ। ❑

अपन मैथिली

प्रकाश कुमार चौधरी

एना नहि करू यौ मिथिलावासी
दुर करू अपन अज्ञान।
माएक मुँह सँ निकलल भाषा
मैथिलीक धरू अपन संज्ञान॥
जनमैत काल सँ माए मैथिली सिखौलैन्ह।
हमरा सभहक स्नेह मान बढ़ौलैन्ह॥

ओ कहलैन्ह नित्य करू भाषा मैथिलीक
अभ्यास।
सदिखन जीवनमे देत एकटा अमिट
उल्लास॥
मिठगर बोली मायक भाषा मैथिलीक
अलख जगाउ।
दुर कत्तौ रहैय छी तयौ मैथिलीक
जान बचाउ॥
अपन माटि-पानिसँ पलल बढ़ल छी
तकरा नञि अपनाबय छी।

सुदृढ़ करू अप्पन ज्ञान मैथिलजन
अपन मानकें गमाबय छी॥
जाए छी जखन अहाँ गाम छोड़ि कऽ
अपनोकेँ भुलि जाए छी
एक बातक प्रबल इच्छा अछि जे
मैथिली कें अपनौक,
अपन माटिक सिनेहसँ निर्मित भाषा
मैथिलीकेँ हृदय लगाउ॥

संविधानक आठम अनुसूची मे
मैथिली भाषा मान बढ़ौलैन्ह
अटल रहल अटलजीक वाणी सौंसे
मिथिला हृदय लगौलैन्ह।
हमसभ मिलि आई शपथ खाए छी
जे अप्पन विदेँ राज्यक भाषाकेँ
नतमस्तक लगायब।

अप्पन भाषा अपने बाजब
कखनो नञि होयत विरान।
देश-विदेश रहलाक बादो
परिचय देत महान॥ ❑

बाल केर खाल

भुवनेश्वर चौरसिया 'भुनेश'

एक घर मे, दूटा विद्वान कना रहत! एक दिन फलनमा केर बाबूजी 'गीता'क पुस्तक केर अध्ययन मे व्यस्त छल!

फलनमा - ई पोथी कें कें लिखलाह?

हुनक बाबूजी - वेद व्यास!

फलनमा - कनि अप्पन दिमाग पर जोर दिऔ।

बाबूजी - जाऊ, हम्मर माथ नञि नऽ खाऊ।

- एहिमे माथ खाए कऽ कोन सवाल? नीक शिक्षा दुश्मनकें सेहो मुफ्त मे देबाक चाही!

बाबूजी - पढ़अ दिअ, बात नञि नऽ बढ़ाबू अहाँ।

फलनमा - एहिमे बात बढ़बै केर कोन गप्प अछि! ई बाजू ने जे अहाँकें नहि मालूम अछि।

फलनमा केर बाबूजी गीताक पोथी समेटैत - अहाँ बड्ड ज्ञानी छी तऽ अहिं बताबू?

फलनमा - एकटा गीता वेद व्यासजी लिखलाह आ दोसर महामुनि अष्टावक्र।

बाबूजी - ओ 'क्रांति गीता' अछि जे अष्टावक्र लिखलाह, ई गीता वेद व्यास दूनू मे जमीन आसमान केर अंतर अछि।

बात कऽ विस्तार होएत देख कऽ फलनमा बाजल 'बाल केर खाल' नञि नऽ निकालू।

बाबूजी बाजलाह - बात केर शुरूआत कें कएलक? आबै कुछ नञि आ खाली फें-फें कऽ रहल छी। जाऊ एखन ढेर पोथीक अध्ययन करू। तखन अपन ज्ञानक बखान करब। बाप सँ बेटा कखनो नमहर नञि हैत, जौं नमहर होएतै तऽ अभिमन्यु नञि नऽ मरतै। ❑

दान

कंचन कंठ

बड्ड मोन छलैन्ह गायत्री देवीकें जे एक बेर पोता-पोती संग पुरी जाए। ओहि साल एतेक जाड़ पड़ल तैं इहो रहय जे ओम्हर जाएब तऽ जाड़ो सँ किछ त्राण भेटत, दस-पनरह दिन तऽ चैन रहब।

तऽ चलि गेलीह सपरिवार, खुशी-खुशी! पुतहु कहलखिन, "समान सैंति दै छियैन्ह" तऽ कहलैन्ह, "नञि-नञि, अहाँ अपन आ बच्चा सभहक सामान सैंतु, अपन समान हम अपने सैंत लेब!"

बड्ड बढ़िया जखन विदा भेलीह, सभ सामान रखाय लागल तऽ माताजीक बैग एक दिस झुकि गेल भार सँ!!

पूछला पर पता चलल जे पिछला बेरि गेल छलीह तऽ भिखारि सबकें देखने छलीह। एहि बेर गामक चाऊर लऽ नेने छथि, दान करबाक लेल। खैर...

किछु अप्रसन्नताक बाद बेटा चढ़ा देलैन्ह ओहो मोटरीवला बैग! मुदा आहि रो दैव! पुरीक सी-बीचकें तऽ प्रशासन एकदम साफ-सुथरा कऽ देने छल, कतहु कोनो भिखारि नञि छल। बड्ड देर एम्हर-ओम्हर केलाक बाद ओ भारी मन सँ ओहि मोटरी भरल चाउरकें एकटा मंदिर मे दान कऽ देलैन्ह। ❑

बहरिया

पूनम झा

राम बाबूकें 30-35 वर्ष भऽ गेलैन्ह गाम सँ बाहर गेला। नौकरी करय लेल बाहर गेल रहैथ।

जखन आबैत छलाह तऽ परिवारक सबकें किछु-किछु मदति करैत छलाह। गाम मे घर नञि छलैन्ह सेहो बनेलैथ। जाहिमे हुनकर पाँचो भाए अपन-अपन परिवार लऽ कऽ रहैत छलाह।

भाए सबकें आमदनी कम्मे छलैन्ह। राम बाबू सबकें हरदम मदति करैत छलाह। जखन गाम आबैथ तऽ पूरा परिवारक लोक हुनकर खुब खातिरदारी करैत छलैन्ह।

हुनका तऽ तीन-चारि साल भऽ जाए छलैन्ह गाम आबय मे। चारि-पाँच दिन रूकि कऽ फेर चलि जाए छलाह।

समय बितलै सब भाए सबकें परिवार बढ़लै आ आमदनी सेहो। फेर की छल सब अपन-अपन विस्तार करय लागल।

तीन साल पर अहु बेर राम बाबू पत्नीक संग गाम आयल रहैथ। परिवारक लोक लेल जेना बड्ड बढ़िया एला कियो, तहिना।

पहले बला बात नहि छल।

राम बाबूकें अखरलैन्ह, जे ई सब केहन स्वार्थी अछि, मुदा...

हुनकर पत्नी अपन कमरा आ सामानक दुर्दशा देखि दुःखी भऽ बजलीह, "ई सब सामान तऽ अहिठामक लोके सब व्यवहार मे लैत छी तऽ संभारि कऽ सेहो राखबाक चाही। देखु तऽ केहन लागै छै?

"आब कियो नहि छूबै छैन्ह" एकटा दियादनी बजलीह।

तखने दोसर सेहो बजलीह, "ककरा

ओतेक फुर्सत छै। अपन आबि कऽ देख-भाल कएल करौथ।"

बड़की फरिछाबैत बजलीह, "बहरिया सबकेँ एहिना होए छै।"

सबटा सुनैत राम बाबूकेँ माथ पर विचारक रेखा खिंच गेलैन्ह आ मने-मन बजलैथ, "जाहि घरकेँ हम बनेलौंह आ रहय ओ सब छैथ तऽ सोचयबला बात अछि जे बहरिया केँ?" ❑

बच्चू बाबूक दुविधा

डॉ. प्रमोद कुमार

आने दिन जकाँ आइयो बच्चू बाबू भिनसरे भिनसर टहलय लेल निकललाह। मध्यम शरीर मुदा हृष्ट-पुष्ट, एगो नामी मल्टिनेशनल कंपनी मे जेनरल मनेजर छथि। भगवान सब किछु देने छथिन। सबसँ बेसी जे, दयालु आ मिलनसार व्यक्तित्वक व्यक्ति छथि। शहर मे गामक बहुत लोक रहय अछि आ हिनका ओतय हाजरी दैत रहैत अछि। कनिया खबखबायल रहैत छथिन मुदा हिनका मोन लागैत छैन्ह।

आइ टहैलतो छथि आ सोचितो छथि। ई फेकना बड्ड चालू अछि! झूठ-फूस कहि कऽ पाँच सौ-हजार टाका लऽ लैत अछि आ लौटाबै केँ नाम नञि! सब बेर नव-नव मुसीबत। पिछला बेर गिट्ठह बान्हि लेने रही जे आब कोनो बहाना बनाओत, हम पाई नञि देबै! मुदा तेहेन नै भेना पसारलक जे हमरा की कही, ननकु माइयो केँ मोन पसिज गेलैन्ह। दू हजार लइये कऽ छोड़लक! कहलक जे माएक वरषी अछि! बाद मे पता लागल जे ओ तऽ अखन जिविते छथिन! ठहरै आब तौं फेकना! तेना कऽ गरदनि मड़ोरबौ ने जे नानी यादि आबि जेथुन!

बच्चू बाबू ई सोचिते छलाह कि कियो धब सँ पएर पर खसलैन्ह। ईहो कहुना कऽ अपना केँ सम्हारलाह! किछु कहितथिन कि ओहि सँ पहिने फेकना अपन भेना पसारलक। दूनू पएर केँ गछारने जोर-जोर सँ राग अलापय लागल, "मालिक यौ मालिक! अहि बेर बचा लियऽ! बच्चा बड्ड जोर बिमार अछि। एहिठाम लोटस हॉसपीटल मे भरती अछि। डॉ. तत्काल पचास हजार जमा कराबय कहलक अछि। मालिक हमर बेटाक जान बचा दिय मालिक!"

बच्चू बाबू की करितथि! चट्टे घुमि गेलाह आ कनिया सँ आँखि बचा कऽ पनरह हजार दऽ देलखिन। ❑

कोरोना

विनीता ठाकुर

"हेलो बौआ...?" लाल बाबू अपन बेटा लखन केँ मोबाईल कऽ पुछलखिन्ह।

"हँ... बाबू गोर लागै छी।" लखन पंजाब सँ अपन बाबू केँ मोबाईल पर कहलक।

"खूब नीके रहु बौआ, कि हाल-समाचार छह? टीवी मे देखै छीयै जे कोरोना सौंसे विश्व मे हाहाकार मचा रहल छै... एकर कोनो दवाई आ नञि टीका बनल छै... भारी मुसीबत छै... सुन, सब गोटे घरे मे रहिहैं... बौआ सब पर विशेष निगरानी केर आवश्यकता छै... बूझलिहीन नै... सुन कोनो दिको छौ?" लाल बाबू पुछलखिन्ह।

लखन केँ जेना बूझना गेलै जे सूखल कंठ पर केओ पनि लऽ पुछलकै... ओकर आँखि नोर सँ भरि गेलै ओ बाबूजी सँ कहलक, "हँ यौ बाबू, भारी विपत्ति पड़ि गेलै सब कियो घर मे बंद भेल छी, सबटा काज-धंधा बंद भऽ गेल, बच्चा सब भूख सँ छटपटा रहल अछि... जेहो जमा-पूंजी छल खतम होइत जा रहल अछि...।"

"बौआ, धीरज सँ काज लहक... हमसब छियह नै।" लाल बाबू बजलथिन, ओ सभटा बात बूझि गेल छलैथ, "हम तोहर खाता मे ता धरि किछु टाका पठा दै छियौ... सभ गोटे बाँचि कऽ घरहिं मे रहय जैहिंय...।" लखन मोबाइल राखि, ठोंहि पाड़ि कऽ कानय लागल, ओकरा पिछला किछु साल पहिनुक गप्प मोन पड़ि गेलै जखन ओकर माए-बाबू निहोरा कऽ कहने छलाह, "बौआ गामे पर खेत-पथार जोतऽ, अपन घर अपने घर होइत छै" आ हुनकर बात काटि ओ परदेश बसि गेल छल। ❑

बच्चाक विजन केर विकसित करय पड़त

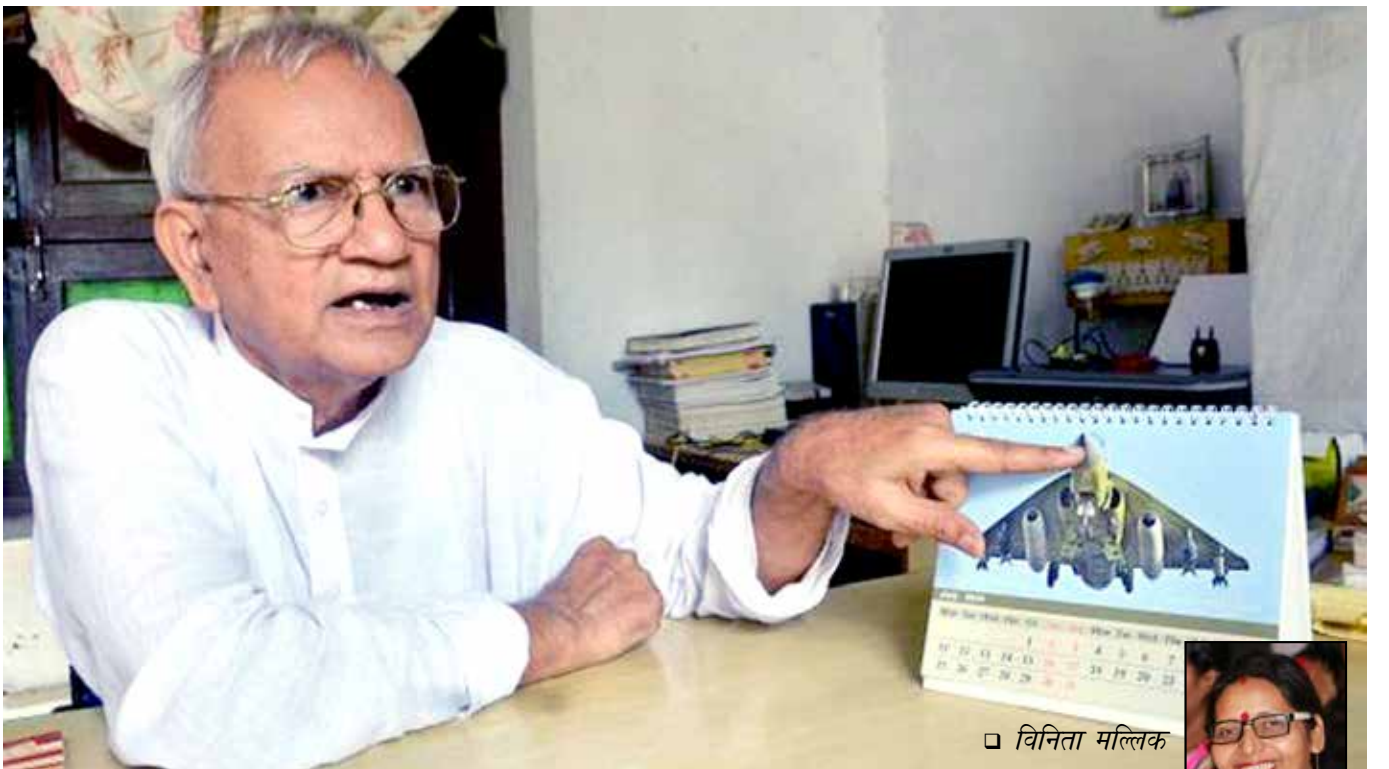

❑ *विनिता मल्लिक*

दरभंगा जिलाक एकटा छोट गाम बाउर जे सदिखन बाढ़िक समस्यासँ ग्रसित रहैत अछि, केर निवासी दृढ़ निश्चयी श्री मानस बिहारी वर्मा जी अपन देशक लेल किछु नव करबाक जज्बा राखयवला व्यक्ति छथि। भारतक पूर्व राष्ट्रपति श्री ए पी जे अब्दुल कलाम जीक निकटतम सहयोगी रहलाह आ भारत मे स्वनिर्मित लड़ाकू विमान तेजसक निर्माण मे अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभेलैन्ह, जहन तेजस पहिल बेर उड़ल तऽ ई एल.सी.ए. प्रोग्रामक निदेशक छलाह। एहि योगदान लेल सन 2018 मे भारत सरकार हिनका पद्मश्री सम्मान सँ सुशोभित केलक। हमर सौभाग्य जे मिथिला आ भारतक एहि गौरवशाली सपूत आ प्रेरणास्रोत व्यक्तित्व सँ बातचीत करबाक अवसर भेटल। प्रस्तुत अछि एहि वार्त्ताक किछ सारगर्भीत अंश...

अहाँक बचपन कतय बीतल आ शिक्षा कतय सँ भेल?

हमर पढ़ाई-लिखाई दरभंगा सँ बाहर भेल अछि, पिताजी काजक संग स्वतंत्रता संग्राम मे कांग्रेसी संग कार्य करैत रहथिन्ह एहि द्वारे हमसभ गामसँ बाहर रहैत रहि, कोनो-कोनो छुट्टी मे गाम आबैत छलौंह। किछु समय हमर बीतल छोटानागपुरक सिंघभूमि जिला मे चक्रधरपुर सँ करीब ६ किलोमीटर आगाँ निश्चिंतपुर मे। ओतय एकटा आश्रम रहय जतय तसर सिल्क बनेबाक ट्रेनिंग देल जाए छल। बचपनक प्राइमरी स्टेज मे हम ओतय रही, तकर बाद चाईबासा आबि ओतुका जिला स्कूल मे फॉर्मल एजुकेशन शुरू भेल, ओकर बाद गया जिला स्कूल मे। हम दशमी पढ़ाई लेल मधेपुर हाई स्कूलक हॉस्टल मे रहय लगलहुँ। दशमी-एग्यारहमीक बाद हम पटना साइंस कॉलेज आ तकर बाद पटना इंजीनियरिंग कालेज मे पढ़लौंह।

अहाँ एअरोनॉटिक दिस कोना मुरलहुँ?

कालेज धरि एअरोनॉटिक दिस जेबाक बिलकुल नञि रहय। हमर एडमिशन मैकेनिकल इंजीनियरिंग मे भेल, बिहार कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग मे एकटा कोर्स रहय **जेट प्रोपलसन** कें, ताहिसँ हमर रूचि खुजल। ओ पहिल टर्निंग प्वाईंट छल एरोनॉटिक्स मे जेबाक। तकर बाद हमरा एम. टेक करय लेल कोलकाता सँ फेलोशिप भेट गेल। इंजीनियरिंग कॉलेज शिपोह आ ओतहि सँ M-Tech केलाक बाद डी.आर.डी.ओ मे सेलेक्शन भऽ गेल। अओर एरोनॉटिक्स ब्रांच मे चलि एलहुँ। पटना इंजीनियरिंग कॉलेजक शिक्षक फीचर ऑफ एरोनॉटिक अओर मैकेनिकल इंजीनियरिंगकें बहुत बढ़ियासँ एक्सप्लेन केने रहैथ, जकर हमरा आगाँ बड्ड मदति भेटल। हम आगाँ बढ़लहुँ आ काज शुरू केलहुँ तऽ हमरा संग एकटा बड्ड बढ़िया अफसर थॉमस ए.के. बर्गीस जे विंग कमांडर रहथिन्ह ओ एम टेक फ्रांससँ केने रहथिन ओ अपन सबटा

पढ़ाईक मेटेरियल हमरा दऽ देलैन्ह आ कतेको महत्वपूर्ण सुझाव देलैन्ह। ई हमर अगिला टर्निंग प्वाईंट छल जतय बहुत मौका भेटल सीखबाक आ आगाँ बढ़बाक। डी.आर.डी.ओ मे एकटा विचार आयल छल किएक नञि इंडिजिनस एयर क्राफ्ट बनाओल जाए, व्हाई डू डिपेंड अपॉन फॉरेनर्स, हमर सभहक जे टीम आ ग्रुप रहय, व्हिच वाज स्ट्रॉन्ग्ली इन सपोर्ट ऑफ आवर ओन एयरक्राफ्ट एंड ओन डिजाइन। हमर करियर मे एकटा कलीग श्री कोटा हरी नारायण जी जे एल.सी.ए. क पहिलुक डायरेक्टर बनलाह ओ प्रिन्सिपल रोल निभेलाह।

तेजस केर निर्माणक चरण की छल?

जकरा हमसभ कहय छी फिजिबिलिटी स्टडीज। एयर हेडक्वार्टर्स फोर्मली डिफाइन केने रहय जे टारगेट की अछि, कोन तरहक एयरक्राफ्ट चाही, तकरा लाइट कॉम्बैट एयरक्राफ्ट (एल.सी.ए.) कहल जाइत रहय, तेजस&#39, नाम तऽ बादमे पड़लय, लगभग बीस साल बाद अटल बिहारी बाजपयी जी तेजस नाम देलखिन।

हमर सभहक तीनटा हवाई जहाज फ्लाई करय लागल छल। प्रोजेक्ट डेफिनिशन जकरा हवाई जहाजक एयरोडायनामिक कॉन्फिगरेशन कहल जाए अछि, जहिमे त्रिभुजाकार विंग (डेल्टा विंग, स्वेप्ट विंग - जे तीर जकाँ होए अछि), तरह-तरहक मॉडल बनाकय विंग टनल मे टेस्ट कएल जाइत अछि। एहि तरहक एडवांस एयरक्राफ्ट बनय छल। हमरा सबकेँ बहुत किछ ज्ञान प्राप्त करबाक आवश्यकता छल, जेना कि- एहि तरहक हवाई जहाज दुनिया मे कतय-कतय बनल अछि? की-की ओकर कैरक्टेरिस्टिक्स अछि? ओहि प्रोजेक्ट डेफिनेशन फेज मे हम सब स्टडी करैत रही। फेर सुपरसोनिक टेस्टक वास्ते जाहि तरहक मॉडलक हमसभ देश मे टेस्ट कऽ पाबय छलौंह ओहि तरहक तऽ केलौंह मुदा ओहिसँ किछ पैघ मॉडलक टेस्ट सेहो करबाक छल जकरा लेल हम सब फ्रांस गेलौंह। ओतय विंग टनल टेस्ट भेल। किछ टेस्ट करबाक लेल अमेरिका सरकारक परमिशन भेटल जे हुनकर एफ-16क टेस्ट करय छल ओतय सेहो किछ टेस्ट भेल आ ओहि फेज मे टेक्नोलॉजी सब विकसित भेल। जखन प्रोजेक्ट डेफिनिशनक काज होइथ रहय तखने बता देल गेल जे ई हवाई जहाज कम-सँ-कम एफ16 सँ बढ़िया होएत। ओब्जेक्टिव रहल जे लाइट बनय, कम दाम मे बनय, मुदा परफॉरमेंस मे दुनियाक सबसँ नीक हवाई जहाज मे मानल जाए।

तखन एल.सी.ए. केर श्रेणीमे ओहि समय खाली दूटा देश मे काज होए छल, अमेरिका मे तऽ एफ16 बनि गेल छल मुदा स्वीडन आ इंडिया मे बनि रहल छल। डिफाइन कऽ देल गेल छल जे ई पूर्णतः डिजिटल एलेक्ट्रोनिक्स मे चलत। 1986 मे भारत सरकारक रक्षा मंत्रालय निर्णय लेलक जे एकटा टीम अलग सँ बनाएओल जाए जाहिमे डायरेक्टर ऑफ सर्टिफिकेट एडवाइजर, कमीटी ऑफ सेक्रेटरीज, केंद्र सरकार आ डिफेन्सक तीनो सेक्रेटरी रहथिन, फिनांस सेक्रेटरी आ इंडियन एयरफोर्स चीफ रहथिन। बड़का कमिटी बनल जे ई काज देखलैन्ह।

एरोनॉटिक्स डेवलपमेंट एजेंसी अलगसँ बनाओलल गेल जकर सबसँ पैघ पहिलुक टास्क भेल तेजस एयरक्राफ्टक डिजाइन केनाए आ ओकरा बनेनाय। एच.ए.एल बंगलौर डिजाइन ब्यूरो प्रोग्राम डायरेक्टरकेँ कहल गेल जे जतय सँ, जाहि डिपार्टमेंट सँ, जे आदमी चाही, ओकर अहाँ लिस्ट बनाऊ, ओहि पर काज कएल जाएत, हुनक ट्रांसफर अहाँ संग कऽ देल जाएत। ई निर्णय मंत्रालय लेबल पर लेल गेल। ओ जे टीम बनल तहिमे हमरा आबय लेल कहल गेल।

हमर ड्यूटी छल- काजक डिफाइन केनाय। केँ कि काज करय, कि कि काज करबाक अछि, विंग बनत तऽ कोन तरहक बनत, कण्ट्रोल सिस्टम वा सरफेस रहत तऽ कोन तरहक रहत आ ओकरा चुँकि पूर्णतः इलेक्ट्रॉनिक कण्ट्रोल रहत तऽ कतेक तरहक कएकटा कंप्यूटर ओहि पर चाही। एहि काज मे तीन साल लागि गेल (1986-89), तकरा बाद डिटेल्ड प्रोजेक्ट रिपोर्ट बनेलौंह। तखन हम एहि निष्कर्ष पर एलौंह जे लगभग 18टा कंप्यूटर ऑन बोर्ड हवाई जहाज मे रहत, विंग कंप्यूटरकेँ मिशन कंप्यूटर कहल जाए अछि। एम.सी, एम.सी.सी., फ्यूल सिस्टम, हाइड्रोलिक सिस्टम, नेविगेशन रडार सबकेँ इलेक्ट्रानिकली कण्ट्रोल रहत। ओकर कोन तरहक स्पेसिफिकेशन रहत से लिखलौंह। करीब-करीब 40-42टा वक्र पार्टीज बनल, जे अलग-अलग सिस्टम्सक छल आ पायलटक सेफ्टी, एनवायरनमेंट कण्ट्रोल आदि। चुँकि हवाई जहाज कॉम्बैट एयरक्राफ्ट छल तऽ जहन फाइट हेतै तऽ पायलटक ऊपर फिजिकल लोड आबि जाएत अछि, तऽ एहि सिस्टमक इक्विपमेंट केँ बनाबोत? आ कोना बनाओत?

शुरूसँ ई बात छल जे हमसभ खाली वएह चीज इम्पोयर्ट करब जे अपनेसँ नञि बना पायब। जौं हमसभ ओहि पार्टकेँ बनाबय मे समय लगा देब तऽ हवाई जहाज पूरा नञि बनि पाओत। हमसभ देखलौंह जे 60% प्रतिशत इक्वीपमेंट तऽ हम सब स्वयं बना लेब बाकी चीज हमरा सबकेँ किनय परत मुदा धीर-धीरे एना भऽ गेल जे पहिलो हवाई जहाज हमसभ उड़ेलिये तऽ हमसभ 80% धरि पहुँच गेलियैय। इंडिजेनस डिजाइन मे खाली 20% बाहरक चीज आनय पड़ल, ई एकटा बड़का चीज छल। मुदा टारगेट जे देल गेल छल पहिला जहाजक फ्लाई करबा लेल, तऽ ऊ दूनू मैच नहि केलक। इंडिजेनस मे डिले भऽ रहल छल तऽ ई निर्णय लेल गेल जे अमरीका सँ हम सब कीनब, अमेरिका तैयार भऽ गेल। ओकर सभहक F18, F404क इंजन सेहो सेलेक्ट भेल, तकरा बाद फ्लाइट कण्ट्रोल सिस्टम। ब्रिटिश एयरोस्पेस, इंग्लैंडक कंपनी हमरा सभहक मदति करबा लेल तैयार भऽ गेल। मेकानिकल सिस्टम, डिजाइनिंग मे हमसभ अपने सक्षम छलौंह। एकटा बड्ड नीक साइंटिस्ट डॉ. करुणा चिरम कहलैथ, “हमलोग कुछ समय लेकर बनाएँगे, लेकिन इंडिया का बेस्ट बनाएंगे”।

हम सब सोचने रहि जे टेस्ट लेल फ्लाई टाइम 3000-3500 घंटा केँ चाहबे करी, तकर बाद तरह-तरहक वेपन सिस्टमकेँ ट्रायल करब

आ हवाई जहाज मे फिट करब। सरकार सँ 7टा प्रोटोटाइप बनबय लेल परमिशन माँगल गेल। दूटा डेमोंस्ट्रेटर मॉडल बनबय लेल कहलैथ आ हमसभ ओहि पर काज शुरू कऽ देलौंह। तखने डॉ. कलाम साइंटिफिक एडवाइजर बनलाह आ साइड प्रोजेक्ट हैदराबाद मे हुनके डॉरेक्शन मे काज होए छल। ओ समय-समय पर प्रोजेक्ट रिव्यु करय लेल आबय छलाह। हुनका पता चलल जे हमसभ कोन दिशा मे जा रहल छी तऽ ओ कहलैन्ह जे सरकारसँ हम तीनटा हवाई जहाज बनाबय लेल कहब आ पूरा प्रोजेक्ट लेल रॉव मटेरियल कीन लेब। तखन तेसरो हवाई जहाज बनाबय केर अनुमति भेट गेल। फेर हम सब निर्णय लेलौंह जे दूटा तऽ बनेबे करब ट्रायल लेल, मुदा तेसरो बनायब तकरे जकाँ चारिम, पाँचम, छठम आ सातम जे प्रोडक्शन लेवल कैं होए। तेसर मे कॉकपिटक जतेक इलेक्ट्रॉनिक्स अछि ओकरा सबकैं अपग्रेड कऽ देबय जाहिसँ ओहिमे लेटेस्ट टेक्नोलॉजी रहत। एहि तरहसँ पहिलुक चरण हम जनवरी 2001 मे फ्लाइ केलौंह, जकरा टेक्नोलॉजी डेमोंस्ट्रेटर मॉडल-1 कहल गेल। तकर एक साल बाद फेर एकटा हवाई जहाज आ तेसर साल मे एकटा अओर हवाई जहाज फ्लाई केलक।

तेजस आ मिग मे मूल अंतर की अछि?

दूनू मे सबसँ बड़का अंतर अछि जे तेजसक व्यवहार मल्टीरोल मे कएल जा सकैत अछि, चाही तऽ शहर कैं बचेबा वास्ते, एयर डिफेन्स जकाँ आ बम लोड करि कऽ बमबारी सेहो कऽ सकैत छी। हवाई जहाज चुँकि छोट अछि तऽ फ्यूल रिफ्यूल करय लेल एकरा लैंड कराबय पड़त। एहि जहाज मे एयर टू एयर प्रोविजन सेहो देल गेल अछि (एक सँ दू बेर) ताकि 7-8 घंटा धरि उड़ि सकय। जखनकि मिग मल्टीरोल नञि अछि। ई एकटा इंटरसेप्टर छल जाहिमे वेपन सिस्टम सेहो बेसी नञि रहय। ओहिमे दूटा मिसाइल रहय, बम, राकेट आ गन रहय। ई सब तेजस मे तऽ छलै ओकर संग इलेक्ट्रॉनिक कॉकपिट छल, जाहिमे पायलट हाथ-पएर आगाँ-पाछाँ तऽ कऽ सकै छल मुदा कण्ट्रोल ओतबे हेतै जतेक डिजाइनर ओकरा करय देतय। ओ कंप्यूटर कंट्रोल्ड रहत, पायलट जेना चाहत ओना काज नञि करत, पर ओहने काज करत जाहिमे ओकर सेफ्टी रहय। ई सबटा चीज डिजाइन मे बिल्ट-इन रहैत अछि। इएह अंतर छल। जेना कहय छीयै नऽ, सेकंड जनरेशन वा सुपरसोनिक, ई सबटा रोल मिगकैं अछि। मिग 1962 मे चीनक संग लड़ाई करबा लेल एयर डिफेन्स लेल बनल। जखनकि तेजस ग्राउंड अटैक, ग्राउंड सपोर्ट, इन्टरसेप्शन आ रेकोनिसाँ, मतलब फ्लाई करैत देखैत रहियो कि कतय की भऽ रहल अछि, तकर फोटो लिय आ रियल टाइम मे ओकरा ट्रांसमिट कऽ दियौ ताकि कण्ट्रोल रूम मे देखतै। तकर बाद एकर उपयोग करत। कॉम्बैट एयर पेट्रोलियम, नैवल वैरिएंट मे जेना पनडुब्बी रिव्यु करय लेल बरका जहाज कतय लागल अछि से देखय लेल आ कोनो नैवल टारगेट कैं डिस्ट्रॉय करय लेल। एतैक मल्टीरोल मे मिगक उपयोग नञि अछि, जतेक मल्टीरोल मे तेजस अछि।

भारत मे लड़ाकू विमानक डिजाइन केनाए आ एकर निर्माण मे पैघ चैलेंज की रहल?

हमरा सभ लेल सबसँ पैघ चैलेंज छल एकटा टीम बनेनाय। अलग-अलग जगह सँ लोक रहथिन आ हुनका संगे काज केनाय, टीम लीडरशिप, पैघ-पैघ स्पेशलिस्ट, डिजाइनर, प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेट केना कएल जाए। कलाम साहबक गाइडलाइन्स छल, "भारत मे जहाँ जो मिल रहा है, सबको इकठ्ठा करो। जो काम दूसरे लोग कर सकते हैं, वह उनको करने दो और तुमलोग ऐसे काम पे कंसन्ट्रेट करो जो डिफिकल्ट हो, जिसमें कोर्डिनेशन की जरूरत हो, रिसौर्स की जरूरत हो"। बंगलोर मे 62टा इक्विपमेंट स्वयं डिजाइन आ मैन्युफैक्चरिंग करलौंह, टेस्टिंगक रेस्पोंसिबिलिटी हमसभ अपने लेलौंह, संगे जतय-जतय जे रेसोर्स अवेलेबल भेल ओकरा यूटीलाईज केलौंह। भारत मे एच.एफ एयरक्राफ्ट नेहरूजीक काल मे बनल छल, तकरा बाद डिजाइनक

काज अपन देश मे लगभग 25 वर्ष धरि नहि भेल। सबटा नया-नया फैसिलिटी सब बनाबय पड़ल। ई सॉफ्टवेर ओरिएंटेड हवाई जहाज अछि, तऽ ओकर सबटा सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट आ टेस्टिंग प्रोसीजर, सबटा अपने बनेबाक छल। हमरा सबकैं कतेको तरहक फैसिलिटी बनाबय पड़ल, जेना बादल मे ठनका रहैत अछि, तऽ लाइटेनिंग फैसिलिटी बनेलौंह। लगभग एक लाख एम्पेयरक करंट एक माइक्रोसेकेंड मे बहते तखनो हवाई जहाज कैं किछ नहि हेतै। उड़ैत काल टेकऑफ करय अछि, अचानक किछ प्रॉब्लम आबि गेल, तऽ ब्रेकिंग करंट (अबोर्टेड टेकऑफ) करय पड़त। सबटा करय पड़ल, इएह सब चैलेंज छल।

एयरोनॉटिक इंजीनियरिंगक केहन भविष्य बुझा रहल अछि? एतेक आई.आई.टी. सभ रहितहुँ किछु मे एकर पढ़ाई होए अछि? एहि पढ़ाईक विस्तारण किएक नहि भऽ रहल अछि?

ई असल मे देशक प्लानिंग पर निर्भर करैत अछि। भारत जेहन देश मे खाली कॉमर्स सँ काज नहि चलत। विदेश मे जे बिक रहल अछि ओहिसँ पैसा कमा सकै छी, लेकिन बुद्धि नञि, ओकरा लेल मेहनत करय पड़त। जाबत

सीखब नञि ताबत विदेशक माल आनि प्रचार कऽ सकैत छी, मुदा ओकर खराबी ठीक नञि कऽ सकैत छी वा ओहन अओर चीज नञि बना सकैत छी। ओकरा लेल जे उद्यम चाही से नञि कऽ सकैत छी। तैं मल्टीडिसिप्लीनरी इंस्टिट्यूशन तऽ हेबाके चाही। तकर संगे-संगे एरोनौटिक्स मे नंबर बढ़ायल जा सकैय। जहन हम सब तेजस बनेनाय शुरू केलौंह, तऽ देखेलियै जे ओहि समयक जे बेस्ट डेवलप्ड कन्ट्रीज रहय, तकरो एहन एयरक्राफ्ट बनाबय मे सात साल लागय छल आ हमरो सबकेँ सात साल लागि गेल।

विकसित भारत फाउंडेशन की अछि? एहिसँ युवा सब कोना जुड़ि सकैत छथि?

ई कलामजी आ किछ DRDOक रिटायर्ड साइंटिस्ट्सक सहयोग सँ बनल। ओकर काज कलामजीक समये मे बिहार मे सेहो शुरू भऽ गेल। हमसभ बेसीकली सोचलियै जे, बच्चाकेँ साइंस पढ़बाक तरीकाकेँ बदलि दैत छि। हमरा सभहक पास कतेको मोबाइल लैब अछि, जे गामे-गामे घूमय अछि। कलाम साहबक इंस्ट्रक्शंस छल जे ओहि सरकारी स्कूल मे जाऊ जतय कियो नहि जाए अछि। तैं, दरभंगा आ अपन ग्रामीण ईलाका छोड़ि हम बाहर नहि गेलौंह आ ई काज शुरू भेल। मोबाइल लैब मे करीब तरह-तरहक 15टा बॉक्स अछि- फिजिक्स, कैमिस्ट्री, लाइफ साइंस, माइक्रोस्कोप सबटा अछि। जे अलग-अलग स्कूल मे जा कऽ बच्चा सबकेँ देखाओल जाइत अछि आ साइंसक प्रति अभिरुचि बढ़य तकरा लेल प्रोत्साहित कएल जाइत अछि।

छठा क्लासक बच्चासँ शुरू करैत छी। एहिमे एकटा बंगलौर बेस्ड संस्था ऑगस्टा इंटरनेशनल फाऊण्डेशन सेहो संग छथि। हमसभ कोशी आ कमला बलानक कछार सँ ई काज शुरू केलौंह आ बाँधक इलाका मे तीन मास लेल एकटा गाड़ी आएल छल जे वापस चलि गेल। एहिमे बच्चा सबकेँ खुब रूचि देखल तऽ कलाम साहब एकटा आर गाड़ी फूलटाइम काज करय लेल देलैन्ह। एहि तरहसँ काज भेल।

डॉ. कलामकेँ जहन सीताराम जिंदल अवॉर्ड (एक करोड़ रूपया) भेटल तऽ ओ 25 लाख रूपया बिहार मे काज करय लेल देलैन्ह। तखन ऑगस्टा फाउंडेशन 2टा गाड़ी फुल टाइम दऽ देलकै आ किछ स्पोंसर सेहो भेटलाह। मुदा दुर्भाग्यवश एहि महामारीक वजह सँ सबटा काज बंद भऽ गेल अछि।

ओहि समयमे (एहि बंदीसँ पहिले) हमसभ स्कूलक बच्चा सबकेँ कंप्यूटर सिखेनाय शुरू कऽ देने रही। दरभंगा सँ हम अपन गाम 2007 मे 6टा कंप्यूटर लऽ गेलौंह, गाम मे डीजल जरा कऽ तीनटा साइंसक एक-एक सप्ताहक ट्रेनिंग शुरू केने रही। अपन अनुभव सँ माइक्रोसॉफ्ट, एम.एस. प्रिलिमिनरी ट्रेनिंग दसवाँ क्लासक बच्चा सब धरि दैत छलौंह। हमरा एकर एक्सपीरियंस रहय दक्षिण भारत मे एहि तरहक काज खूब बढ़ियासँ होइथ छल तऽ बिहार मे किएक नञि।

कलाम साहब पहिले दसटा लैपटॉप देलैन्ह, फेर बाद दसटा अओर, दसटा ऑगस्टाक दिससँ सेहो मिलल। आब कोरोनाक बाद फेर आरम्भ करब। हमसभ साइंस आ कंप्यूटर दूनू विषय पढ़ाबैत छियै आ दूनू केर शिक्षक हमरा सबकेँ पास छथि।

युवा अपन कैरियरक चुनाव मे की सावधानी राखैथ?

महत्वपूर्ण ई अछि जे बच्चा सब वएह करैत जे हुनक मनमे आबैत अछि। अभिभावक सबकेँ समझय पड़त तऽ बच्चा सबकेँ सेहो ध्यान देमय पड़तैन्ह। छोट सन उदाहरण देखु, छोट-छोट चिड़ई बेसी-सँ-बेसी तारक गाछ धरि उड़ि सकत मुदा जेना-जेना ऊपर जाइत अछि, ओकर दूर दृष्टिये काज आबैत अछि। बच्चाक विजनकेँ डेवेलप करय पड़ैत अछि, बच्चा सबकेँ ई देखाय पड़त जे अहाँ खाली पैसा कमाए लेल चाहय छी? तऽ ठीक अछि, ओ तऽ कोनो काज सँ कमा लेब। मुदा विजन जौं दूर दृष्टिक होएत तखने अहाँ ऊपर उठबाक कोशिश करबय आ जखने अहाँ दूर देखय लागब तऽ अहाँ नीक टारगेट देखब, कतय लैंड करी। तुरत फायदा लेल तऽ ठीक अछि मुदा ऊपर उड़य मे बड्ड एनर्जी लागैत अछि।

कलाम साहब कहय छलाह, "जौं अहाँ अपन आवश्यकताकेँ कम करब तखने ऊपर धरि पहुँच सकब।" तपस्या वएह अछि, बच्चा सबकेँ बुझय पड़त जे इनफार्मेशन ज्ञान नञि अछि, समाचार ज्ञान नञि अछि। हँ नॉलेज किछ डिफरेंट अछि। इनफार्मेशन इज नॉट सफ्फीसिएंट, ओ सहायता करत, हेल्पफुल रहत। नॉलेज चाही तऽ अहाँकेँ पढ़इये पड़त आ डेप्थ मे जाइये पड़त। नॉलेजक अंत नहि अछि। परिश्रम करब तऽ नॉलेजक बाद विसडम(बुद्धिमत्ता) भेटत, किताब पढ़ि लेब तऽ इनफार्मेशनसँ नॉलेज कनि बेसी भऽ जाएत। नॉलेजक समय अहाँकेँ टेस्ट करय

पड़त आ समझए पड़त। बुद्धिमत्ता लेल सेलेक्टिव होमय पड़त। जे ज्ञान प्राप्त केलौंह अहाँ सबटा जानबाक जरूरत नहि पड़त, मुदा एहि ज्ञानक उपयोग विजडम पर निर्भर करत।

लैब इन बॉक्स कार्यक्रम की अछि? आ एकर उद्देश्य की अछि?

एक्चुअली ई मोबाइल साइंस एंड आई.टी. लैबक भाग अछि 'लैब इन बॉक्स'। जाहिमे लगभग 152टा साइंटिफिक इक्विपमेंट अछि, माइक्रोस्कोप, लेंस, टेस्ट ट्यूब सबटा अछि। ई विकसित भारतक कलाम साहबक सपना छलैन्ह। बच्चा सबकेँ डेमोंस्ट्रेटे कराबय छी। एहिसँ दशमी धरिक सी.बी.एस.सी.क बच्चा सबकेँ एक्सपेरिमेंट कराएल जा सकैत अछि। चुँकि स्कूल मे एक-एकटा क्लास मे बहुतों बच्चा सब रहैत अछि तऽ ग्रुप वाइज डेमोंस्ट्रेट करबाक आ एक्सपेरिमेंट करबाक मौका दैत छियै (हैंड्स ऑन एक्टिविटी)।

एहि काजक लेल 10टा स्कूलक टीचरकेँ प्रशिक्षण दऽ कऽ एक साल मे लगभग 25टा स्कूल मे प्रतिदिन लंच टाइम धरि कंप्यूटर आ साइंसक शिक्षण देल जाईत अछि। एहिमे तरह-तरहक बक्सा अछि- फंडामेन्टल, कंप्यूटर, फिजिक्स, केमिस्ट्री, बायोलॉजी आ मैथ्स सभ लेल व्यवस्था अछि।

मैथिली संस्कृति अहाँक कैरियर लेल कतेक सहायक वा कठिनाई पूर्ण रहल?

कोनो आदमी जकरा अपन संस्कृति मे पालन-पोषण भेल जाहिसँ ओ वैल्यू सीखलक, अपन माता-पिताकेँ देखलक, परिवार मे रहि जे देखलक, ओ बड़का स्ट्रेंथ रहिते अछि,अहाँ चाही वा नञि चाही। हमरा कखनो परेशानी वा बाधा नहि भेल किएक तऽ जखन लोक ई बुझय लागय जे हमरा लेल की ठीक अछि कि नहि तऽ ओहिमे ओकर संस्कृति रिफ्लेक्ट होएत अछि। केकरो पर्सनैलिटी मे ईहो इंग्रेडिएंट रूपमे काज करैत अछि जे ओ की सीखलक अपन बचपन आ युवावस्था मे। अपन संस्कृतिसँ बड्ड फक्र नहि पड़य अछि, संस्कृति ओनली हेल्प्स यू। किछ परेशानी वा कमी अछि तऽ समयक संग यू हैव टू डेवेलप इट।

युवा वर्गक लेल किछु सन्देश

(हँसैत कहलाह) युवाकेँ हम की सन्देश देबैन्ह, हम तऽ युवेसँ सिखय चाहैत छी। सही कहि रहल छी, हमरा बहुत खुशी होइत अछि युवा सबसँ बात करबा मे। समय भेटय अछि तऽ हम स्कूल-कालेज सबमे जाइत रहैत छी। सबसँ पैघ बात अछि, अहाँ जे करय चाहैत छी ताहि मे पूरा ध्यान दियौ, डाइवर्ट नहि होऊ। बढ़िया-बढ़िया काज करबाक स्कोप अछि, कोनो काज अहाँ ठानि लियऽ तऽ काजक कोनो कमी नहि अछि आ एतेक परेशानी रहितो जे काज करय चाहैत छी तऽ हुनका लग समस्याक समाधानो भेट जाइत अछि। तैं हतोत्साह हेबाक कोनो जरूरत नहि अछि। हँ, कोनो दिक्कत अछि, तखने बाट निकलत नै। हम अंग्रेजी मे कतौ पढ़ने रही, "There is no rainbow without rain, There is no success without pain."

मिथिलाक उत्थान लेल हमसभ बाहर रहि कोना भागीदारी कऽ सकैत छी?

बाहर रहि कऽ अहाँसब बड्ड काज कऽ सकैत छी। अहाँ ओतय कियो पहुँचैत छथि तऽ हुनका गाइड कऽ सकैत छियै, अपन अनुभव ओहि विद्यार्थीसँ शेयर करू आ जे लगातार मिथिला मे रहैत छथि हुनका धरि सही इनफार्मेशन पहुँचय ताहि मे मदति करू। जौं इकोनोमिकल डेवेलपमेंन्ट चाही तऽ जाहि तरहक इन्वेस्टमेंट चाही इंडिविजुअल तऽ नहि देत मुदा ओकरा प्लानिंग मे आनि कऽ बता सकैत छी। हुनका प्रोजेक्ट रिपोर्ट बनावय मे हेल्प करू, किएक तऽ अहाँकेँ बाहर संग ओतुका अनुभव अछि। हर समय एहि बातक तुलना करियौ जे अपना ओतय की दिक्कत अछि, ओतुक्का लोक एकर कोना फायदा उठा पेताह। साधारण उदहारण दैत छी, जहन हम अपन गाँव मे कंप्यूटर ट्रेनिंग शुरू केलहुँ तऽ माइक्रोससॉफ्टक एम.एस आ एक्सेल प्रोग्राम जे अछि, तकरा बंगलौरक स्कूल सबमे 6-7 दिन मे सीखा दैत अछि आ बिहार मे नञि, किएक? आब बच्चा सब जे बाहर जेतय तऽ भऽ सकैत अछि एकरा सबकेँ किछु बूझय मे आसान भऽ जेतय ई जरूरी नञि अछि जे अहाँ फ्लूएंट अंग्रेजी नञि बाजय छी तऽ कंप्यूटर नहि बूझि सकब।

हम अपन ब्लॉकक 5टा हेडमास्टर सबकेँ कहलौंह जे अहाँ 5-5टा टेंथ क्लासक लड़की सबकेँ पठाऊ। हम 25टा लड़कीकेँ एक संग अपना दलान पर ट्रेनिंग दऽ सकैत छी। ओकरा सबकेँ 6 दिन रखनाय (सोम सँ शनि) आ संडे कऽ छोड़ि देबैन्ह। रहनाय आ खेनाय केर हम व्यवस्था करब। शिक्षक सभहक व्यवस्था केलौंह, सिलेबस सेहो बना कऽ फिक्स कऽ देलौंह। ऐना-ऐना कऽ कऽ

> ***अहाँ जे करय चाहैत छी ताहि मे पूरा ध्यान दियौ, डाइवर्ट नहि होऊ। बढ़िया-बढ़िया काज करबाक स्कोप अछि, कोनो काज अहाँ ठानि लियऽ तऽ काजक कोनो कमी नहि अछि***

हम कतेको ग्रुप पर काज केलौंह। एहने-एहन आइडिया पर काज केनाए, कोनो आइडिआ ताकु आ ओहि पर काज करू। अहाँ जतय रहय छी, जतेक अहाँक पास अछि, ओहिसँ बेसी नै चाही ओतबे मे अहाँ बहुत किछ कऽ सकैत छी। एहि उदारहणक उद्देश्य हमर ई छल जे बहुत किछ होए अछि बाहर मे जे एतहु भऽ सकैत अछि। जौं अहाँ पहिले नञि कहि देबय तऽ बाते खतम भऽ जाइत अछि। अहाँ सब खुब आगाँ बढ़ू, अपन भाषा बढ़य ताहि लेल हार्दिक शुभकामना आ मंगल कामना। ❑

विशेष :- *वर्माजीक निकट रहयवला किछु लोक सबसँ बात केलौंह तऽ एकटा महिला आभार प्रकट करैत कहलैन्ह जे वर्माजी हुनका स्वयं पढ़ा ई कहि प्रोत्साहित केलैन्ह, "जौं अहाँ परीक्षा मे पास केलौंह तऽ अहाँक मेहनत आ फेल भेलहुँ तऽ हमर कमजोरी।"*

*कोनो देशक सैन्यशक्ति विश्व पटल पर ओकर पहचान होइत अछि। अपन पड़ोसी देश आ विश्व समुदाय सँ ओकर सम्बन्धक आधार होइत अछि देशक सैन्य सम्पन्नता। कूटनीति, राजनीति आ सामरिक प्रभावकेँ विश्व पटल पर सुदृढ़ बनेबा लेल अपन सैन्य/रक्षा शक्तिक विस्तार आवश्यक अछि। विगत किछु वर्ष मे भारत अपन सैन्य/रक्षाबल केँ काफी बढ़ेलक अछि, एहिये क्रम मे अछि राफेलक भारतीय सेना मे एनाय। एकरा एला सँ भारतीय सेनाक आत्मविश्वास आ मनोबल अओर मजबूत भेल अछि। प्रस्तुत अछि **'राफेलक एलासँ भारतीय सेनाक बढ़ल मनोबल अओर विश्व पटल पर एकर सामरिक प्रभाव'** पर किछु विशेषज्ञक विचार...*

-मुकेश दत्त

राफेल, हर्ष मुदा गर्व नहि

रि. लेफ्टिनेंट कर्नल सतीश मल्लिक

दिनांक 29 जुलाई, 2020, भारतक सब टेलिविजन चैनल पर भोरसँ साँझ धरि एक्केटा समाचार चलैत रहलैक आ ओ रहय पाँचटा राफेल युद्धक विमानकेँ अंबाला सैनिक हवाई अड्डा पर आगमन। सब चैनलक हाल वएह रहय जे मुहल्ला मे बरियातीकेँ देख कऽ स्त्रीगणक रहैत छैन्ह, सब लालायित रहैत छथि वरक मुँह देखबाक लेल। जिनका देखाई दऽ गेलैन्ह से ताली पीट कऽ आनंद मनाबऽ लगलीह आ जे पाछाँ रहि गेलैथ से दोसरे सँ विवरण सुनि कऽ संतुष्टि प्राप्त केलैथ। टीवी एंकर लोकनिक उत्साह एहन छल जे अखने ओ ई पाँचटा विमान लऽ कऽ चीन पर हमला कऽ देथिन आ अकसाइचिन की, समुचा चीन पर कब्जा कऽ लेथिन। देशक नागरिक सेहो एहि उत्तेजना सँ अछूता नञि छलैथ। एहिमे कोनो दू मत नञि जे राफेल विमानक भारत आगमन अत्यंत हर्षक विषय अछि, मुदा आवश्यकता अछि एकरा सम्पूर्ण सामरिक परिप्रेक्ष्य मे देखबाक।

राफेल विमानक सौदा मे जाहि प्रकारक राजनैतिक विवाद भेल ओहिमे नहि जा कऽ खाली एतबा बुझनाए आवश्यक अछि जे 1912 मे 126 विमान खरीद के शुरूआत भेल छल जे अंततः 2016 मे 36 विमानक ऊपर सुनिश्चित भेल। अक्टूबर 2019 मे अपन रक्षा मंत्री फ्रांस मे 10टा विमानक डिलिवरी लेलैथ। ओहिमे सँ पाँचटा विमान 29 जुलाईक भारत आबि गेल आ पाँचटा अखनि फ्रांस मे अछि जाहि पर भारतीय पाइलट आ टेकनिशीयन प्रशिक्षण लऽ रहल छैथ। वर्ष 2022 धरि छत्तीसोटा विमान भारत आबि जेबाक चाही। जाहिसँ भारतीय वायु सेनाक दूटा स्क्वाड्रन- एकटा अंबाला मे आ एकटा हाशीमरा मे तैयार होएत। ई सबटा विमान भारतक माँग पर विशेष रूपसँ परिवर्तित कएल गेल अछि आ विमानक ई प्रारूप विश्वक अओरो कोनो देश मे नहि छैक। एहि विमानक विशिष्टता छैक जे ई दूटा इंजनवाला मल्टीरोल विमान अछि आ एक्के संगे बहुत तरहक काज जेना कि हवाई सुरक्षा, सर्वेक्षण, अंतरंग हवाई सहायता, हवा सँ जमीन पर सूक्ष्म प्रहार, दुश्मनक युद्ध पोत पर प्रहार इत्यादि कऽ सकैत अछि। एकर अओरो एकटा अभूतपूर्व विशेषता छैक जे ई उच्च तुंग विमानपट्टी जेना कि लेह हवाई अड्डा, सँ सेहो उड़ान भरि सकैत अछि। एहि विमानक संग जे हथियार भारत किनलक अछि ओहि मे प्रमुख अछि "SCALP" मिसाइल जे हवा सँ जमीन पर 300 किलोमीटरक दूरी सँ मारि कऽ सकैत अछि आ दोसर "METEOR" मिसाइल जे हवा सँ हवा मे दुश्मनक विमानकेँ 100 किलोमीटरक दूरी सँ प्रहार कऽ सकैत अछि।

एहि तरहक आधुनिक विमानक खरीद भारतक लेल हर्षक विषय अवश्य अछि मुदा एहि पर गर्व नहि कएल जा सकैत अछि। गर्वक अनुभूति तहिया होएबाक चाही जहिया एहि तरहक विमान आ हथियार हम अपना देश मे बना सकी आ विश्वक दोसर देश एकरा हमरा सँ किनबा कें लेल आतुर होईथ। राफेल विमानक भारत आगमनकेँ हर्षोल्लास ठीक अछि मुदा एकर दम्भ हम तखने भरि सकैत छी जखन की सैन्य उपयोगी वस्तुक आयात कम करैत अपन आत्मनिर्भरता कें बढ़ाबी। ❑

सामरिक क्षमता बढ़ल

हिमानी दत्त

दू दशक सँ प्रतिक्षारत भरतीय वायुसेना कें 29 जुलाई 2020कें 5टा राफेल अयला सँ युद्धक क्षमता बढ़ि गेलैक। रक्षामंत्री राजनाथ सिंहक अनुसार, "राफेलकें एला सँ भारतीय सेना नवयुग मे प्रवेश केलक।" 4.5 जेनरेशन राफेल कें अम्बाला स्थित 'गोल्डेन एरोज' स्क्वार्डन मे शामिल कएल गेल।

विशेषज्ञक अनुसारे राफेल अखन विश्व मे सबसँ विनाशक आ ताकतवर फाइटर विमान अछि। चीनक चेंगटू जे-20, पाकिस्तानक एफ-16क तुलना मे ई परमाणु हथियार सहित 4.5 जेनरेशनक राफेल combat क्षमता, ज्यादा पेलोड (मिशाईल), ज्यादा ईंधन लऽ जेबाक क्षमता अछि। एण्टिशीप स्टाईक, हवा सँ हवा आ हवा सँ जमीन पर आक्रमण करबाक क्षमता अछि।

आधुनिक रडार, मेटेआर मिसाईल आ आधुनिक इलेक्टानिक युद्धक क्षमताक कारणेँ राफेलकेँ एलासँ समग्र रूपेँ विश्वपटल पर भारतक सामरिक क्षमता बढ़ि गेल। खास कऽ चीन आ पाकिस्तानक परिदृश्य सँ। एकर अलावे एहि आगमन सँ भारतीय सेनाक मनोबल, हिन्द महासागर आ विश्वक नजरि मे भारतीय सेनाक क्षमता सेहो बढ़ि गेल। भारतीय सेना काफी समय सँ एहन महत्वपूर्ण युद्धक विमान लेल प्रयासरत छल। ❑

की राफेल सँ जैविक युद्ध जीत सकैत छी?

डॉ. राजीव कुमार वर्मा

थलसेना होए नौसेना वा फेर वायुसेना भारतकेँ पास एक-सँ-एक अत्याधुनिक हथियार आ लड़ाकू जहाज अछि। राफेलकेँ भारतीय सेना मे जुड़ला सँ सेनाक मनोबल मे तऽ वृद्धि भेले अछि संगहिं विश्व पटल पर सेहो अनेकानेक कारण सँ भारत एकटा सशक्त देशक रूपमे उभरि रहल अछि?

भारतक पास उपलब्ध लड़ाकू जहाजः

1. सू-30 एमकेआई, 2. मिग-29, 3. जगुआर, 4. मिग-21, 5. मिराज-2000, 6. लाइट कॉम्बट एयरक्राफ्ट, 6. एमआई-17 वी-5 हेलीकॉपटर, 7. एमआई-25 लड़ाकू हेलीकॉपटर, 8. मेक इन इंडियाक अन्तर्गत बनल तेजस लड़ाकु जहाज जे फ्लाइंग बुलेट स्क्वॉड्रन सँ सम्बंधित अछि।

फ्रांस केर संग 36टा राफेल फाइटर जेट्स विमानक डील भेल छल जाहिमे सँ पाँचटा राफेल जहाज भारत आबि गेल अछि। पाँच जहाज मे तीनटा सिंगल सीटर आ दूटा ट्विन सीटर अछि। एकरा सबकेँ एयरफोर्सक 17वाँ स्क्वॉड्रन (गोल्डन ऐरो) मे शामिल कएल गेल अछि।

भारत पिछला बीस बरीख मे पहिल बेर कोनो पश्चिमी देशसँ एतेक पैघ मिलिट्री डील केलक। 23 सितंबर, 2016केँ फ्रांस आ भारतक बीच 36 राफेल जेट्स लेल 59,000 करोड़क डील भेल छल। एहि जहाजक निर्माण फ्रांसक एविएशन कंपनी दसॉ एविएशन केलक अछि।

एक गोट जहाजक लागत 70 मिलियन अछि। एकर लंबाई 15.27 मीटर अछि। ई ऊँच इलाका मे लड़य मे माहिर अछि, एक मिनट मे 60 हजार फुट ऊंचाई धरि जा सकैत अछि। ई अधिकतम 24,500 किलोग्रामक भार उठाकऽ उड़य मे सक्षम अछि। एकर अधिकतम रफ्तार 2200 सँ 2500 किमी. प्रतिघंटा अछि आ एकर रेंज 3700 किलोमीटर अछि।

ऑप्ट्रॉनिक सिक्योर फ्रंटल इंफ्रारेड सर्च आ ट्रैक सिस्टमसँ लैस एहि जहाज मे एमबीडीए एमआइसीए, एमबीडीए मेटेओर आ एमबीडीए अपाचे जकाँ अनेक तरहक खतरनाक मिसाइल आ गन लागल अछि जे एक साँस मे शत्रु केर मिट्टी मे मिला सकैत अछि। एहिमे लागल 1.30 एमएमक एकटा गन एक बेर मे 125 राउंड गोलियां चलाबय मे सक्षम अछि आ मेटेओर मिसाइल 100 किलोमीटर दूर उड़ि रहल फाइटर जेटकेँ मारि गिराबय मे सक्षम अछि।

एहि तरहक मिसाइल चीन-पाकिस्तान समेत संपूर्ण एशिया मे नञि अछि। पाकिस्तान आ चीनसँ भारतक सीमा केर सुरक्षा एकटा पैघ मुद्दा अछि। एहि कारण राफेल जहाज भारत लेल बड्ड जरूरी छल। एहि जहाजक उपयोग अफगानिस्तान, इराक, सीरिया, लीबिया आ माली मे जंगी कार्रवाई मे सफलतापूर्वक भऽ चुकल अछि। राफेलसँ भारतीय सेनाक ताकत मे अभूतपूर्व वृद्धि भेल अछि।

राफेल, चिनुक आ अपाचे सँ भारत मजबूत तऽ भेल अछि, मुदा कोरोना वाइरस अगर चीनी प्रयोगशालाकेँ उपज अछि तऽ ई जैविक युद्ध केर शुरूआत अछि आ एकर मुकाबला राफेल सँ नञि भऽ सकैत अछि। विश्व जैविक युद्धक ओर उन्मुख अछि जतय कोनो विजेता नञि, सब मानव भक्षक आ प्रकृति विनाशक अछि। ❑

सैन्यशक्ति बढ़ल

रि. कर्नल कृत्या नन्द दास

राफेलक आयलाह सँ भारत-चीन सैन्य संतुलन मे फरक पड़लैक अछि। एखन धरि भारत, रूसी मीग, सुकोय, फ्रान्सीसी मिराज, ब्रिटिश जगुआर आ अपन तेजस लऽ कऽ मैदान मे डटल छल। ई सब पुरान भऽ गेल छलैक। भारतकेँ 42टा लड़ाकू विमानक स्क्वाड्रणक आवश्यकता अछि, मुदा एखन मात्र 30टा उपलब्ध अछि। चीन अपन क्षमता बड्ड बढ़ा लेलक अछि आ वर्त्तमानक झड़पक कारणेँ नव विमानक अवश्यकता अआरो बढ़ि गेलैक अछि। राफेलक अगमन बड्ड किछु एहि असंतुलन केँ कम करतैक।

चीनक पास जे-20 चेंगटू विमान अछि ओ अमरीकी एफ-22क कॉपी अछि। ई 29 टन भारी विमान अछि। ई दृष्टि सँ दूर टारगेट पर लक्ष्य साधैक क्षमता रखैत अछि। मुदा भारी भरकम भेलाक कारणेँ डाग-फाईटक लेल ओतेक उपयुक्त नहि अछि। चीन एकरा पाँचम जेनरेशनक गुप्तगामी विमान केहैत अछि। एकर मुख्य शस्त्र अछि पी एल-15 राडार गैडेड दूरगामी मिसाईल (200 किमी.) राफेल मात्र 90 टनक विमान अछि, जे-20क आधा। एकर उलट-पुलट केर क्षमता अधिक आ डाग-फाइट मे जे-20 सँ खुब बढ़ियाँ। राफेलक, रडार आधुनिक गुप्तगमनक क्षमता अस्त्र आदि बहुत उत्तम अछि। ई 4.5 जेनरेशनक विमान अछि आ चीनी विमान जे-20 पर भारि पड़तैक। भारतीय विमान चालक चीनी विमान चालक सँ बेसी अनुभवी मानल जाइत छथि। भारतीय चालक सबकेँ चारिटा युद्धक अनुभव छैन्ह। चीनक चालक सब आइ धरि कोनो वायुयुद्ध मे हिस्सा नहि लेलैन्ह अछि। सन् 64-65क युद्ध मे नेट सेबर केँ पछाड़ि देन छलैक। एखने मीग-29 पाकिस्तानी एफ-18केँ मारि खसौने छल।

चीनी वायुपट्टी सब हाई अल्टीच्युट पर अछि, बेसी भारि साज समान लऽ कऽ नहि उड़ि पौतैक। जखनकि भारतीय वायुपट्टी सब समुद्र तल पड़ अछि, भारतीय विमान बड्ड बेसी साज-समान लऽ कऽ उड़ि पौतेक।

ओना 5टा राफेल कम भेल ऊँटक मुँह मे जिरक फोरन तैयो नहि मामा सँ कनहा मामा ठीक। राफेल केँ एलासँ चीनक, मुख्य पत्र ग्लोबल टाईमसक अनर्गल आलाप किछु कम भेल अछि। ❑

कैथी लिपिक इतिहास

मुकेश दत्त

पन्द्रहवीं शताब्दीक उत्तरार्द्ध सँ लऽ कऽ 1965क अंत धरि आधुनिक बिहार अओर झारखण्ड (पूर्व अविभाजित बिहार राज्य)क सम्पूर्ण क्षेत्र, उत्तर प्रदेशक पूर्वांचल भाग, नेपालक मधेस-तरायी भाग आ असमक किछु भाग मे कैथी लिपिक व्यापक प्रयोग देखल जाइत अछि। ई कहल जा सकैत अछि जे एहि क्षेत्र मे एहि लिपिक व्यापक प्रचलन होइत छल। मुख्यतः एहि लिपिक प्रयोग भूमि सम्बन्धी दस्तावेज आ न्यायालय सम्बन्धी दस्तावेज लिखबाा लेल कएल गेल अछि। ब्रिटिश राज्यक समय उपरोक्त वर्णित क्षेत्र मे कैथी लिपिकेँ अधिकारीक लिपिक दर्जा प्राप्त छल। जहिमे न्यायालयक कार्य होइत छल आ ओहि संगे भूमि संबंधित दस्तावेज लिखल जाइत छल, परिणामस्वरूप वर्तमान मे कैथी लिपि मे लिखल सैकड़ो दस्तावेज उपलब्ध अछि। भूमि सम्बन्धी दस्तावेज बेसी मात्रा मे लिखल उपलब्ध अछि।

वर्तमान समय मे सेहो जे भूमि मामलाक अभिलेख प्रस्तुत कएल जाइत अछि, लगभग 15% मामला से पुरान भूमि संबंधित मामला अछि, ओहि मे 15-20% अभिलेख कैथी लिपि मे मिलैत अछि। ई दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति अछि जे 1965 धरि स्वसँ बेसी प्रयोग होएबला लिपि **'कैथी लिपि'** आई विलुप्तक कगार पर ठाढ़ भऽ गेल अछि। एहि लिपिक जानकार आब आँगुर पर गिनल जा सकैत छथि। एहि विलुप्ततक मूल भारण अछि एकर प्रचार-प्रसारक अभाव, एकर संवर्द्धनक अभाव अओर लोकक एहि लिपिक प्रति उदासीनता, व्यक्तिगत रूचिक अभाव। उपयोगिता होइतो लोककेँ एहि लिपिक प्रति अरूचि एकरा विलुप्त लिपिक श्रेणी मे ठाढ़ कऽ देने अछि। मुदा आब समय बदलल जा रहल अछि, एहि क्षेत्र मे एक बेर फेर सँ काज कएल जा रहल अछि। एकर संवर्द्धन प्रशिक्षण प्रचार-प्रसार (कैथी लिपि साक्षरता) अभियान अपन उद्देश्यक पूर्ति हेतु अग्रसर अछि।

भारतक अधिकांश लिपिक उद्गम ब्राह्मी लिपि सँ भेल मानल जाइत अछि, ब्राह्मी लिपिक प्रयोग समस्त मौर्य साम्राज्य मे होइत छल, मौर्य साम्राज्य (मौर्य काल) चारिम शताब्दी ई. पू. मे भेल। ब्राह्मी लिपिक अवशेष मौर्यकाल (लगभग 300 ई. पू.) मे मिलैत अछि। अशोकक शिलालेख सेहो ब्राह्मी लिपि मे अछि, एकर प्रयोग गुप्तकाल केर अंतिम समय धरि भेल। गुप्तकालक पतन, पाल साम्राज्यक संकीर्णता, व्यक्तिगत संवाद आ संचारक दिनानुदिन कमजोर भेनाय अलग लिपि केर आवश्यकता पर बल देलक। पाल राजा कुटिल लिपिक प्रचलन केलैन्ह। कुटिल लिपि सँ नागरी लिपि, पूर्वी नागरी लिपि सँ शारदा आ कैथी लिपि निकलल। किछु इतिहासकार मानैत छथि जे कैथी लिपि सीधे कुटिल लिपि सँ निकलल अछि तऽ किछु मानैत छथि जे कैथी लिपिक विकास देवनागरी लिपि सँ आ ओकर बाद भेल।

11वीं शताब्दी मे बिहार मे कैथी लिपिक विकास भेल मानल जाइत अछि। आमजन मे एकर बेसी प्रयोग छल जकरा देखैत 1540 ई. मे शेरशाह सूरी एकरा 'राज लिपि'क रूप मे मान्यता देलैन्ह। हिनक राज्य मुहर मे कैथीकेँ स्थान देल गेल, जमीनक दस्तावेज कैथी लिपि मे बनाओल जाइत छल। शेरशाह सूरी कैथी जानयबला कारकुमकेँ अलग सँ नियुक्त केलैन्ह। ओ जमीन आ रैयतक दस्तावेज कैथीये लिपि मे राखलैन्ह। जाहिसँ कम पढ़ल-लिखल लोक सेहो एकरा आसानी सँ बुझि पाबैथ। कैथी मे जमीनक दस्तावेज लिखबाक परम्परा 1960-70 धरि रहल।

प्रशासनिक कार्यक अलावे भक्तिकाल मे कतेको महत्वपूर्ण ग्रंथ कैथी लिपि मे लिखल गेल अछि, जे हजारोंक संख्या मे उपलब्ध अछि। देवघर (वैद्यनाथ धाम)क शिवमंदिर मे आ बनारस सँ लऽ कऽ किशनगंज धरि कतेको मंदिर मे कैथी लिपिक अभिलेख आ शिलालेख मिलैत अछि। एतबे नहि अपन देशक प्रथम राष्ट्रपति, भारत रत्न कायस्थ कुल शिरोमणि डॉ. राजेन्द्र प्रसाद अपन व्यगित संवाद (चिट्ठी-पत्री) हेतु कैथी लिपिक प्रयोग करैत छलाह। अर्थात् कैथी लिपि संवंर्धित लिपि छल आ प्रासंगिक सेहो छल। कतेको विद्वान एहि लिपिक बारे मे लिख चुकल छथि आ ओ स्वयं सेहो एहि लिपिक प्रयोग करैत छलाह जाहिमे बाबू वीर कुंवर सिंह, राजकुमार शुक्ल, भिखारी ठाकुर आदि अग्रगण्य छथि।

बीसम शताब्दी धरि कैथीक प्रसार समुचा बिहार मे रहल। बिहारक सभ भाषा-बोली मे एकर प्रयोग होइत छल। भोजपुरी, मगही, मैथिलीक मुख्य लिपि कैथीये रहल। ई लोक लिपि छल जाहि कारणेँ आवश्यक लोक दस्तावेज, लोकगीत, गहबरगीत, धार्मिक पोथी, चिठ्ठी, लेन-देनक हिसाब कैथीये मे होइत छल। दरभंगा महराजक 80 सँ बेसी सनद कैथी लिपि मे छल। भोजपुरी, मगही, मैथिलीक अलावे अंगिका आ बजिका आदिक लिपि सेहो कैथी छल। दूर देश कमाय लेल जाएवला मजदूर सब अपन धार्मिक पोथीक कैथी मे लिखल गुटका लऽ जाइत छलाह, संगहि अपन परिवारजन सँ कैथीथे मे पत्राचार करैत छलाह। मुदा एहि लिपि सँ दूरी आ एकर अज्ञानातक कारणेँ बिहारक संस्कृति दबल रहि गेल। एकर अप्रचलनक कारणेँ बिहारक सांस्कृतिक अस्मिता पर आधात पड़ल। अगणित देशी दस्तावेज कैथी मे लिखल रहला कारणेँ अपठनीय रहल। एकर दस्तावेज आ कागजातकेँ सम्हारि कऽ राखल नहि जा सकल, नवका पीढ़ी एहिसँ वंचित भऽ गेल।

अंग्रेजी औपनिवेशिक सरकारक किछु अंग्रेज अधिकारी भारतक संस्कृति आ परम्पराकेँ नष्ट कऽ अंग्रेजी संस्कृति भारतीय

पर थोपय लागल। एहि नीति सँ कैथिये नञि अपितु भारतक कतेको लिपि जाहिमे मोदी, महाजनी, लांडा, टाकरी, नेवारी आदि छल प्रभावित भेल। अंग्रेज हाकिमक भाषागत नीतिक कारणेँ कैथी बिहार सँ खतम भऽ गेल। मुदा एकटा अंग्रेजी अधिकारी जी.ए. ग्रियर्सन कैथीक महत्वकेँ बुझलैन्ह आ 1880 ई.क आस-पास भारत मे प्रिंटिंग फॉन्टक विकास आरम्भ भेल। ग्रियर्सनक प्रयत्न, प्रभाव आ सम्पक्रक बले कैथी फॉन्टक ढलाई मे सफलता मिलल। कथी फॉन्ट एलाक बाद पोथी प्रकाशान मे वृद्धि भेल। पटनाक खड़गविलास प्रेस एहिमे अग्रणी छल। ओहि समय प्राथमिक शिक्षा मात्र कैथी मे होइत छल, प्राथमिक शिक्षक पोथी कैथी मे बेसी आ देवनागरी मे कम छल। बिहारक सभ जाति धर्मक नेना कैथी (फारसी सेहो) लिपि मे शिक्षा पाबैत छल। विशेषतः कायस्यक बालक कैथी, उर्दू आ फारसी सीखबा मे बेसी प्रबल छलाह। देवनागरीकक प्रचलन कैथी सँ बड्ड कम छल, जे बाद मे उलटा भऽ गेल।

औपनिवेशिक भाषा आ लिपि संबंधी नीतिक कारणेँ लोक दस्तावेजे नहि अपितु सरकारी दस्तावेज सेहो प्रभावित भेल। 1890 ई. आ ओकर बाद भेल सर्वे मे सबटा कागजात कैथी मे छल, जमीनक पंजीकरण दस्तावेज, बंटवारा आ लगान आदिक रसीद सब कैथी लिपि मे छल। मुदा बाद मे एकर चलन कम भऽ गेल। सबसँ बेसी परेशानी एहि दस्तावेज सबकेँ सुरक्षित, संरक्षित आ डिजिटाईजेशन करबा मे भेल। बिहार सरकारक रेकर्ड रूम मे आइयो लाखो दस्तावेज कैथी लिपि मे पड़ल अछि, मुदा पढ़नाहारक कमी सँ ई दस्तावेज रहस्य बनल अछि।

एहि लेखक पहिल पारा मे एकर प्रसार (फैलाव) आ उपयोगक बारे मे बता चुकल छी। साहित्यिक-सांस्कृतिक दस्तावेज कैथी लिपि मे आइयो राजदरबारक संग्रहालय मे संरक्षित अछि। एकर उपयोगिताक एकटा उदाहरण प्रस्तुत अछि। सन् 1956 ई. जखन बंगाल-बिहार सीमा विवाद भेल तऽ विवाद फरिछाबयबला समिति निश्चय केलैन्ह जे

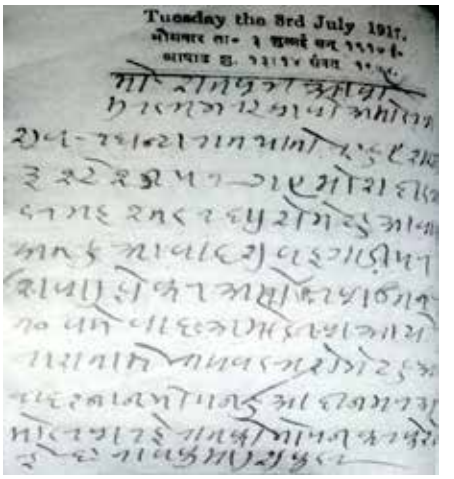

जाहि गामक इनार पर कैथी मे लिखल होएत ओकरा बिहार मे अओर जाहि इनार पर बंग्ला लिपि मे लिखिल होएत ओकरा बंगाल केँ दऽ देल जाएत। मुदा आजाद भारत मे भेल पहिल जनगणना मे कैथी केँ एकटा लिपिक रूप मे मान्यता नहि देल गेल, जाहिसँ जे व्यक्ति कैथी लिपिक जानकार भेलासँ गुलाम भारत मे साक्षरक श्रेणी मे छलाह ओ आजाद भारत मे आब निरक्षरक श्रेणी मे आबि ठाढ़ भऽ गेलाह। अंग्रेजक चलाओल शिक्षा प्रणाली आ मानसिकता सँ ग्रसित भारतीय राजनीति एहि समृद्ध लिपिक लेल अभिशाप सिद्ध भेल। एहि कुठारवात सँ एहि लिपिक लोप भऽ गेल।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा कैथीकेँ पूर्ण लिपिक दर्जा नहि प्राप्त अछि, कारण आब कैथी मे लिखल शिलालेख बड्ड कम अछि। यूनेस्को सेहो कैथी लिपिकेँ विलुप्त भऽ रहल लिपिक संज्ञा छऽ चुकल अछि। बिहार सरकार सेहो एकरा प्रति उदासीन बनल अछि। राज्य सरकार द्वारा एकरा राज्य लिपिक संज्ञा नहि देल गेल अछि। बिहारक सभ भाषाक लिपि कैथी अपनहि राज्य मे घोर अपेक्षाक शिकार बनल अछि।

वर्तमान मे एकर जानकार बड्ड कम छथि, तहिसँ एकर अनुवाद हेतु समस्या सदिखन बनल रहैत अछि। कहल जा सकैत अछि जे कैथी लिपिक जानकार आ जानकारक खोज एकटा चिंतनीय विषय रहल अछि। मुदा आब एहि क्षेत्र मे एक बेर फेर सँ काम आरम्भ भऽ चुकल अछि। एकर संवर्द्धन, संरक्षण, प्रशिक्षण, प्रचार-प्रसार अओर साक्षरता (कैथी लिपि साक्षरता) एकटा अभियान बनि अपन उद्देश्यक पूर्ति हेतु अग्रसर अछि।

मगही अकादमीक अध्यक्ष उदय शंकर शर्मा बतौलैन्ह, "मगही मे कतेको नाटक आ आन साहित्य कैथी मे उपलब्ध अछि, जकर संरक्षणक प्रयास अकादमी द्वारा कएल जा रहल अछि।" कैथी लिपिक जानकर भैरव लाल दास बताबैत छथि, "बिहार मे अंगिका, बज्जिका, मगही, मैथली अओर भोजपुरी भाषाक साहित्य के कैथी मे लिपिबद्ध कएल गेल अछि, ई एकटा जनलिपि छल। एकरा महाजनी लिपि सेहो कहल जाइत अछि किएक तऽ सैकड़ो वर्ष सँ महाजन वर्ग एहिये लिपि मे बही-खाता लिखैत छलाह।"

युवावर्ग मे एहि लिपिक जागरूकता आनबाक प्रयास नालंदा खुला विश्वविद्यालय कऽ रहल अछि। विवि एहि लिपि मे उपलब्ध स्टोन स्क्रिप्ट, लेख, महापुरुषक पत्र-डायरी आ पाण्डुलिपि केँ लाइब्रेरी मे संरक्षित करत आ ओकर डिजीटाइजेशन कऽ संरक्षित करत। जाहिसँ युवावर्ग एहि लिपि दिस आकृष्ट होइथ। पटना म्युजियम अओर मैसूर म्युजियम सेहो एहि दिश काज कऽ रहल अछि।

एहि लिपिक जानकार बिजॉय कुमार मल्लिक 'सुधापति', मो. हबीबुल्लाह अंसारी, भैरवलाल दास, अजय कुमार कर्ण आदि समय-समय पर एहि विषय पर कार्यशालाक आयोजन करैत रहैत छथि।

कैथि लिपिक संरक्षण हेतु किटबद्ध एकमात्र संस्था 'मिथिला संस्कृति संवर्द्धन अभियान' केर संस्थापक-निदेशक अजय कुमार कर्ण, भैरवलाल दास एकटा टीम बना एकरा अभियानक रूपेँ बना नवयुगक संचार माध्यम (Whatsapp) सँ एहि लिपिक निःशुल्क प्रशिक्षण प्रदान कऽ रहल छथि। जाहि मे देश-विदेश सँ कतेको लोक बढ़ि-चढ़ि कऽ भाग लऽ रहल छथि आ कैथी सिख रहल छथि। अपन लिपिक प्रति एहि लागव आ जागल तृष्णा सँ लागैत अछि जे शिघ्रहिं कैथी लिपि पुनः जनलिपि बनि जाएत। ❑

शानो शौकत

अरुण लाल दास

धनिक लाल चौधरी अपना जमानाक चला-चलतीबला लोक छलाह, शान-शौकत सँ रहलाह सबदिन। नौकर-चाकर आगाँ-पाछाँ करैत। कलपदार कुर्ता नील-टीनोपाल देल, धोती चमाचम करैत, सदिखन पान गलोठने। पचीस-तीस बिगहा जमीनकेँ बेचि-बेचि खाइत-पिबैत मस्त रहैत समय कटि एखन धरि।

एकमात्र बेटाकेँ नीक जकाँ पढ़ाइयो नहि सकलाह। कोनो धरानी बेटाकेँ लटैत-बुरैत साधारण नौकरी लागि गेलैन्ह। आब ओहि नौकरीक बदौलति प्रतिमाह तीन-चारि हजार टाका बेटा पठाइये दैत छैन्ह, तैं चौधरीजीक हीक ओहि पर लागल रहैत छैन्ह। बैंक सँ टाका छोड़ा आनैत छथि। नोन-तेल, तरकारी-तीमन तऽ बचलाहा बाड़ी-झाड़ी सँ चलिये जाइत छैन्ह। शान-शौकतक निमेरा एखनो धरि निमहिये जाइत छलैन्ह।

मुदा, हाय रे समय। करौनाक कहर हिनका दिने मे तारा गनाबय लागल। आइ बेटाक एक फोन पर एकदम गरइ माँछ जकाँ छटपट-छटपट करय लगलाह। गरचुन्नी माँछ सन मुँह बनौने पत्नीकेँ कहैत छलाह, "हे सुनै छियै! सुदर्शन एहि मास मे आब टाका नञि पठाओत। ओकरा फैक्ट्री मे दरमाहा दू मास सँ नञि भेटलैक अछि। कोनोहुना बीसो हजार रूपैया तत्काल व्यवस्था कऽ कऽ जल्दी पठाबक हेतु कहलक अछि।"

चौधरी दूनू प्राणी चून सन मुँह बनौने एक-दोसराकेँ देखैत हरे कृष्ण! हरे कृष्ण!! जपैत आसमान दिस देख रहल छलैथ।

शानो-शौकत सँ जिनगी बिताबयबला धनिक लालकेँ आइ तरेगन सुझय लागलैन्ह। ओ अपन बेटाक टेलीफोन सुनि हताश भऽ गेल रहैथ, लागलैन्ह जेना पएर तरक जमीन धंसि गेल आ जिनगीक डोर जल्दीए घिंचा नञि जाइन्ह। सब किछु उभर खाभर नजरि आबय लागल रहैन्ह, दूनू प्राणीक मास दिनक बुतात, पत्नीक ब्लड प्रेशरक दबाई ताहि पर सँ टाका भेजब सँ कत्ते दुरूह काज छल। सबटा नीशा एक्कहि बेर भन्न सँ टूटि गेल रहैन्ह। धम्म सँ ओ धँसल सोफा मे अओरे धँसि गेल रहथि। आब ओ की करैथ, कि नञि से सोच मे पड़ि गेलैथ। बीस हजारक व्यवस्था ओहो एतेक जल्दी होएब कठिन छल हुनका बुते। ओ उठबाक प्रयास मे फेनो थकथका कऽ बैस

रहलाह। हुनकर माथा नञि काज करैत छल।

एकरे कहैत अछि भिराहु समय। जखन चढ़ंत पर छल तऽ कोनो करम छोड़ने नञि रहथि, भक्ष-अभक्ष, माउस-मदिरा, सुरा आ सुंदरी मे डूबल सब गुणक आगर धनिक लालकेँ कतय कहियो भान भेलैन्ह जे धन-दौलतकेँ विवेकपूर्ण तरीका सँ खर्च कएल जाइत अछि। बीस हजार तऽ हुनकर हाथक मोइल छल ताहि दिन।

यौवन, धन-संपति, प्रभुत्व आ अविवेकिता चारू मे सँ एक्कोटा अनिष्टकारी अछि, जौं चारू सन्निहित होए तऽ जहाज डुमले बुझू।

साँझ कनी अआरो झमटगर भऽ गेल छल। चौधरी चारू भर पहिने अपन नजरि खिरेलैन्ह, जमीन सभहक कागत, सर कुटुम्ब सँ पैंच-पालट, पत्नीक असिला-कोशिला, दर-दयाद सँ तत्कालीन मदति मुदा सब दिससँ हुनका निराशे देखाए पड़ैत छलैन्ह। घटल आदमीकेँ किओ बाँहि पुरनाहर नञि होइत अछि। हठात हुनकर नजरि पत्नीक मंगलसूत्र पर पड़लैन्ह आ अंततः ओ मंगलसूत्र पर तत्काल किछु कर्जा उठा अनताह ताहि हेतु बड्ड हूल-हुज्जतिक बाद पत्नीकेँ मनयबा मे समर्थ भऽ गेलाह।

माएक ममत्वक पलड़ा झुकि गेल रहय। माए कोनो धरानी शीघ्रातिशीघ्र टाका पठेबाक वकालति करय लगलीह। धनिक लाल कौआ डकय सँ पहिने मंगलसूत्रकेँ जेबी मे राखैत ठोकले बंशी ओहिठाम पहुँच कऽ बंशीकेँ सब बात कहैत एकबेर आर इज्जत बचा लेबाक हेतु गोहारि करय लगलाह।

बंशी कतेको बेर मंगलसूत्रकेँ उलटि-पलटि कऽ देख रहल छल। ओ सही-गलत मे फक्र नञि कऽ पाबि रहल छल। ओकरा मनकेँ लोभ ग्रसित केने जा रहलत छल। एहन सुंदर आ भरिगर मंगलसूत्र ओ आइ धरि देखनहि नञि छल। ओकर मन छह-पाँच करय लगलैक। ओ मनकेँ काबू करैत सोचय लागल एतेक दिनक बनल संबंध नञि बिगड़ि। ओ बाजल, "रहय दिऔ सर, हम गाए नञि गीड़ सकैत छी। अहींक जमीन सँ हम धनीक भेली हय। अहाँक पछिलो जमीन बला लेनी-देनी बाँकीये हय। किछु टाका अहाँकेँ होत हमरा लग। दूनू गोरे निचौन मे बैठि कऽ हिसाब फरिया लेब। हम बौआक खाता मे तत्काल बीस हजार टाका पठा देबैन्ह। अहाँ ई दस हजार टाका आ ई मंगलसूत्र ताबत आपस लेने जाऊ। ई सोहागक निशानी मलिकाइनकेँ रहय दिऔन्ह।"

चौधरीक आँखि सँ नोर टघरि गेल छलैन्ह ओ भावुक मुदा हुलसति घर आबि रहल छलाह। बंशी बड़का बोर दऽ कऽ अपन आगाँक मकसद मे कामयाब भऽ गेल छल। ❑

एहि तरहक कोनो हास-परिहास सँ भरल संस्मरण जौं अहाँ लोकनि लग होए तऽ ओकरा कलमबद्ध कऽ मिथिलांगन केर पता पर पठाबी, बिछल संस्मरणकेँ अगिला अंक मे स्थान देल जाएत। - संपादक

फगुआसँ पहिने फगुआक तरंग चिट्ठीक संग

डॉ. शेफालिका वर्मा

हमर विवाह फिजिक्स ऑनर्स पटना साईंस कोलेजक विद्यार्थी ललन कुमार वर्माजी सँ भेल। तखन हम मैट्रिक पास केने छलौंह आ हिंदी मे लिखैत छलौंह। अपन संगी रामदेवजीक कहला पर ओ हमरा मैथिली मे लिखबा लेल प्रेरित केलैन्ह। एक बेर ओ अपन गाम डुमरा मे छलैथ, हम पटना अपन नैहर गोलकपुर मे रही। बहुत दिन बाद हुनकर एकटा पत्र आएल जे पढ़ि हमर जी जरि गेल, एतेक दिन बाद पत्रो आएल तऽ प्रेमक लेश नहि। हमरा एहन अति भावुक, संवेदनशील लेल ई बड्ड घातक छल। मुदा, एहि पत्रक भाषा देखि हमरा कानब आबि गेल जे हमरा किएक नञि ई मैथिली आबैत अछि, मोन होएत छल हम मैथिली मे लिखनाय छोड़ि दी, रामदेवजी पर सेहो खुब तामस उठय, कतय हमरा फँसा देलैन्ह।

आइ ई मैथिलीक फकड़ा, खिस्सा आ गप्प तीनू चीज सँ भरल पत्र पोस्ट कऽ रहल छी, जकर अर्थ आइ धरि ठीक सँ नञि बुझि सकलौंह।

हमर सासुजीक कन्किरबी
जय गोलकपुर कँ

अहाँक परीक्षा आब अबस्से खतम भऽ गेल होयत। कनि कान एम्हर दियो ने, एकटा सनगर बात कहि, कनि कैस कँ सुनबैत छि। लिय भरि छाँक सुनु...

चारिम दिन मुनहर साँझकेँ तिरपित बाबु एकटा बेश खढ़गर अलगटेट संग एहिठाम पहुँचलाह। अलगटेट महाशय आर केओ नहि बल्कि हुनकर श्री श्री 108 डिगा सन भातिज छलथिन। आब सुनु हुनक किछु सराहना- डिगा महोदयक परिधान मे दुनल्ली, नञि बुझलियैक वएह फत्तेखानवाला पैजामा। पैजमाक डोरिक काज डराडोरी सँ चलैत छल। कद तीन फिट चारी ईंच, धुआ कब्जा वएह तीन गिरहवाला हरबाहाक पेना आ ढांचा, बुझु जे सजमैन छिलल। कोनो ठाम ब्रह्मबाबा खुरचनी सँ बेसी ओदारि लेलैन्ह आ कोनो ठाम जेना संयोगवश हुनक आंखि लागि गेलैन्ह तऽ खुरचनी एकदम सँ छछरी गेलैक। वयस आब जे होए मुदा रहैथ झढ़बेर जकाँ अन्ठियाल, गारि तऽ हुनका मुँहसँ फुस्सुकी गोली... बोलचालक भाषा मे केयोटी दाली... कखनो हिन्दी मे अंगरेजी, कखनो अंगरेजी मे मैथिली...। एकटा उदाहरण सुनु- एक बेर ओ बजलाह, "औ ललन बाबु, आइ-काल्हि साईंस जे रैकेट मे इन्चेंट केलक सेहो बल्र्डक सात बंदर्स मे छैक।" हमर दिमाग चकरा गेल जे बैडमिन्टन आ टेनिसवाला रैकेट दुनियाक सात बानर मे कोना आयल? पाछाँ बुझलौंह जे ओ गप्पे-गप मे रोकेट कँ रैकेट आ वंडर्स कँ बंदर्स बना देलैन्ह।

आ-हा... एकटा गप्प तऽ बिसरले जाइत छलौंह, हुनका देखले संता हमरा अहाँक भट्टाबाड़ीक मन्नाजीक हमर छोट भाए बनाओल लाठी समेत उनटल करिया खापैड़ मन पड़ी गेल। ब्रह्मबाबा हुनक रचना स्पेशल करियोठ माइट सँ केने छथिन्ह।

परसु भोरे-भोर बेचाराकेँ बायब्रिंग उखड़ि गेलैन्ह, कुटुंबबाली बात खेने रहथिन्ह विशेषे। बायब्रिंग एहन हुम्चलकैन्ह जे भोर सँ दुपहर धरि एक सोरे बेर पिचकारी बाँसक अढ़ मे छोड़लैथ। राति मे एहन दाबल अवाज होए जेना विवाहक देढ़ह आ रसनचौकी। कखनो टामिगन सेहो चलैत छल मुदा अपवाद रूपेँ, आब विशेष कि कही? तिरपितबाबु लग हुनक शोभा वोहिना जेना टनक बेहरि।

आर समाचार कि कही? अपना ओहिठाम पिल्ला-पिल्ली मिला सात जन छल। तीन गोतनी आ चारी दियाद, सभ एक-पर-एक बिलैंती। एहि बीच मे बड्ड दर्दनाक घटना भऽ गेलै। सभ कुकुरकेँ कोन दन मारूख बिमारी भऽ गेलैक। तीनटा कऽ तऽ अपटी खेत मे प्राण चलि गेलैक, बचलो सभ स्वर्ग पार्सल हेबाक तैयारी मे अछि।

एहि कारणेँ बड्ड दुःखी छि, खेबा-पिबा मे मोन नहि लागैत अछि। देखियौक नञि ट्रेजेडी ई भेल, जे कुकुर श्राद्ध करबा लेल आबैत अछि ओ एहि गिरफित मे पड़ि जाइत अछि, गाम परक सभ कुकुर असहयोग आन्दोलन कएने अछि। विचार अछि, जहिना दक्षिण अफ्रिका मे शहीदक श्रद्धांजलि अर्पित करबा लेल मोर्निंग डे मनाबैत अछि तहिना हमहुँ सभ शहीद कुकुर सभहक श्रद्धांजलि अर्पित करी। मन, कर्म, वचन सँ शुद्ध भऽ कऽ अहुँ सभ श्रधांजलि अर्पित कऽ दियौ।

पढ़नाय तऽ कम सम चलैत अछि, देह-हाथ छोड़िकेँ खाइत छि। दिमाग सँ बेसी पेट सँ काज लऽ रहल छि। परिणाम ई जे पेट संक्रान्तिक टिमकी कोहा जकाँ फूलल जा रहल अछि, कपार चोकर बनल जाईत अछि। अच्छा तऽ बेस...

अहिंक बतबनौआ
राजा ललन
डुमरा 12.04.1961

बाप रे! ई मैथिली!!! भगवान बचाबय रामदेवजी सँ। ❑

धियाक जनम जौं देब विधाता, देब सहोदर भाए

शीला दास

ओकील साहबकेँ परोपट्टा मे कें नञि जानैत छलैन्ह, सभक बेगरता मे पक्षक पहाड़ बनि ठाढ़ रहथि। जतबे ओकालत जोरदार चलैत छलैन्ह, ततबे सामाजिक समस्या सभहक निपटारा करय मे अहर्निश लागल रहय छलाह। कोर्ट-कचहरी आ सर-समाज सँ निपटि जखन घर आबैथ तऽ ओकील साहब अपन एकमात्र बेटी सुरसरिक संग नाना प्रकारक गप्प करैथ। आनंदित-आह्लादित होइत, खाइत-पिबैत विश्राम करबाक लेल बिछाओन पर जाइते धरि सुति रहथि। आन दिनक भाँति आइ जखन सुतबाक उपक्रम कऽ रहल छलाह तऽ कतहुँ सँ सामा-चकेबा खेलाएवाली स्त्रीगण सभहक मधुर गीत कान मे पड़लैन्ह- "धियाक जनम जौं देब विधाता, देब सहोदर भाई..."। सहसा ओकील साहबक अपन दुलरी बेटी सुरसरि पर ध्यान गेलैन्ह, सोचय लगलाह- 'ओकरो तऽ कोनो सहोदर भाए नञि छै...' आँखि सँ दहो-बहो नोर बहय लागलैन्ह। राति भरि कनैत रहलाह, परात भेने पुनः राज-काज मे व्यस्त भऽ गेलाह।

एवम् प्रकारें दिन-महीना-साल बितैत गेल। ओकील साहबक बेटी सुरसरि विवाह योग्य भऽ गेलीह, धूमधाम सँ धियाक बियाह भेल। ओकील साहब कुटुमकेँ निहोरा केलैन्ह एखन दुरागमनक चर्च नञि कएल जाओ। विवाहोपरांत सुरसरि नैहर मे चारि साल धरि रहि गेलीह। मुदा, पाँचम वर्ष मे ओकील साहबकेँ बेटीक दुरांगमन करैये पड़लैन्ह। बेटी सासुर की गेलैन्ह ओकील साहब मौन धारण कऽ लेलाह। उत्साह-उमंग, राग-अनुराग दुनिया सँ जेना सब रंग गायब भऽ गेल होए।

विधिक विधान अद्भुत होइत अछि, ओम्हर बेटी सासुर बसल, एम्हर ओकील साहबकेँ पुत्र-रत्नक प्राप्ति भेलैन्ह। मुदा ई की? दस-दिनक बादे ओकील साहबक दुनियाँ उजड़ि गेलैन्ह, पत्नी-बेटा एक्के संग कालक गाल मे समा गेलैन्ह। एहन दिन सात घर दुश्मनोकेँ नञि देखय पड़य। बज्रपातसँ ओकील साहब सुन्न भऽ गेलाह। भरल-पुरल जिनगी मे जेना अकस्मात ग्रहण लागि गेल होए। एक साल धरि कोनहुना बीतल, सब कहय लागलैन्ह, "दोसर बियाह कऽ लेल जाओ"। संयोग बनल तऽ एक साल बाद द्वितीय विवाह भेलैन्ह। एकटा अनाथ कन्याक नाथ बनि ओकील साहब अपन जिनगीक गाड़ी आगाँ बढ़ौलैन्ह।

ईश्वरक अनुकंपा सँ दोसर पत्नी रत्नगर्भा साबित भेलखिन, ओकील साहबकेँ बेटा भेलैन्ह। प्रसन्नता सँ भरल ओकील साहबकेँ आँखि सँ अश्रुधारा बहय लागलैन्ह, पत्नीकेँ अपन सासुर बसल बेटी आ ओकरा भाएक अभाव आ बीतल बातकेँ कहैत-कहैत गारा बाझि गेलैन्ह। पत्नी कहलखिन, "अपन बेटीकेँ एतेक याद कऽ रहल छी, हमरा तऽ भेटो नञि भेल अछि। नीक दिन तका कऽ बिदागरी करा लिय।" पत्नीक प्रस्ताव उपयुक्त बुझेलैन्ह, प्रफुल्लित हृदयसँ बेटीकेँ बिदागरीक चिठ्ठी पठौलैन्ह। मुदा बेटीक सासुर मे कोनो काज ठानल रहैन, बिदागरी करौनिहार वापस चलि आयल।

किछुए दिनक बाद भरदुतियाक पर्व पर ओकील साहब अपन बेटीकेँ भार-भरियाक संग पुनः बिदागरीक चिठ्ठी पठौलैन्ह आ एहि बेर चिठ्ठीक संग मे एकटा अनुपम भेंट सेहो पठौलैन्ह- अपन नवजात पुत्रक दूनू हाथक छाप कागज पर अंकित कऽ बेटीकेँ पत्र प्रेषित केलैन्ह। जखन सासुर मे बेटीकेँ ई चिठ्ठी आ अनुपम भेंट प्राप्त भेल तऽ भाव आ भावनाक गंगा-यमुना बहय लागल। अपन दीदीक नाम संबोधित ओहि चिठ्ठी मे लिखल रहय-

पूज्या दीदी,

हम एखन बहुत छोट छी, अहाँकेँ नोत लए ले एबा मे असमर्थ छी, अगिला साल तऽ कोराकऽ सवारी कऽ अहांकेँ नोत लए जोकरक भऽ जाएब, मुदा एहि बेर हम अपन हाथक छाप पठा रहल छी, एकरे नोत लऽ लेब।

सादर प्रणाम!

अहिंक अनुज

अद्भुत दृश्य उपस्थित भऽ गेल, लोक सभहक धर्रोहि लागि गेल। सुरसरि अपन छोट भाएक हाथक छापकेँ नोत लैत बुदबुदा रहल छलीह '...हम नौतए छी अपन भाएकेँ... जहिना-जहिना जमुनाजी मे पानि बढ़य, तहिना-तहिना हमर भाएक औड़दा बढ़य...'। ❑

कर्तव्यनिष्ठा आ त्यागक प्रतिमूर्ति : चतुरानन दास

ई. प्रकाश चन्द्र दास

चतुरानन दासक जन्म 24 अगस्त, 1889 ई. मे उत्तर बिहारक मधुबनी जिला (तखन दरभंगा)क भच्छी गाम मे भेल छल। हुनक पिताक नाम गुणवंत लाल दास छल। दासजी लग मात्र पाँच एकड़ जोतक जमीन छलैन्ह आ ओ पेशा सँ मुख्तार छलाह। हुनक स्वभाव अत्यन्त सरल, विनोदी, आस्तिक आ श्रद्धालु छल। ओ तीन भाए छलाह, छोट भाए गजानन दास सेहो स्वतंत्रता आंदोलनक संघर्ष मे नीक सँ हिनक अनुसरण करैत छलाह।

1907 ई. मे चतुरानन दासजीक दाखिला वॉटसन मिडिल इंग्लिश स्कूल, मधुबनी (वर्तमान मे सूरज नारायण सिंह हाई स्कूल)क छठम कक्षा मे भेल। मिडिल स्कूल मे हिनका छात्रवृत्ति मिलल। हिनका सभ विषय मे समान रूपसँ दक्षता प्राप्त छल, खास कऽ गणित विषय पर। रेखागणितक अनुमान जे शिक्षक एक प्रकारसँ सिद्ध करैत छलाह ओकरा ई नव ढ़गसँ सिद्ध कऽ सबकेँ चकित कऽ दैत छलाह। मधुबनीक जमींदार क्षेमधारी सिंह संस्कृत विषय मे हिनक विशेष ज्ञान (जानकारीक लेल) हिनका **सिद्धांत कौमुदी** नामक पुस्तक पुरस्कार दऽ सम्मानित केलैन्ह आ हुनक योग्यतासँ संतुष्ट भऽ प्रतिमाह अपना दिस सँ 5रूपया छात्रवृत्तिक रूपेँ कतेको वर्ष धरि देलैन्ह। ओ 1916 ई. मे प्रथम श्रेणीसँ मैट्रीकुलेशनक परीक्षा पास केलैन्ह, ओ तिरहुत प्रमण्डल मे अंग्रेजी विषय मे अव्वल आएल छलाह।

आगाँक पढ़ाई लेल चतुरानन दासजी भागलपुरक तेज नारायण जुबली कॉलेज (वर्तमान मे तेज नारायण बनैली कॉलेज) मे अपन नामांकन करौलैन्ह। आर्थिक तंगीक कारणेँ कॉलेजक बाद ओ तीन-तीन मील दूर पैदल चलि कऽ बच्चा सबकेँ ट्यूशन पढ़ाबय जाइत छलाह। ओ कहियो आर्थिक अभावकेँ अपन शिक्षाक मध्य नहि आबय देलाह, अपितु ट्युशन सँ बाँचल किछु टाका ओ घर सेहो भेज देल करैत छलाह। बी.ए. चतुर्थ वर्षक परीक्षा होमयवाला छल, परीक्षा मे नीक श्रेणीसँ उत्तीर्ण हेबाक पूर्ण उम्मीद छल, एहि बीच 20 अगस्त, 1920 ई. केँ महात्मा गांधी असहयोग आंदोलनक शुरूआत केलैन्ह। ओहि आंदोलन मे सक्रिय भाग लैत ओ परीक्षाक बहिष्कार कऽ देलैन्ह आ राजेन्द्र प्रसाद आदि नेताक संग पटना आबि गेलाह। बिहार विद्यापीठ, सदाकत आश्रम, पटना सँ ओ चतुर्थ वर्षक परीक्षा देलैन्ह आ ओतय सेहो सर्पप्रथम रहलाह।

विद्यार्थी चतुरानन दास मे आज्ञाकारिता, विनय आ सरलताक भाव कूट-कूटकऽ भरल छल, ओ एकटा भक्त पुरुष छलाह। राम हिनक आदर्श छलाह रामायण, विनय पत्रिका, आश्रम-भजनावलीक कतेको पद्यकेँ ओ अपन हृदय मे समा लेनक छलाह आ ओहि अनुसारे अपन चरित्रक गठन करबाक चेष्टा ओ सदिखन करैत छलाह।

संकट आ कठिनाई मे गीताक दोसर अध्याय **तितिक्षाक भाव**सँ ओ ओत-प्रोत छलाह। दुःख-सुख, सफलता-विफलता मे ओ अविचल भावसँ समान रहैत छलाह। अपन दुःख कखनो ककरो सँ नहि कहैत छलाह। दुःखकेँ सेहो ओ भगवानक आशीर्वाद बुझि खुशीपूर्वक स्वीकार केलैन्ह। हुनक परिवारक हालत एहन छल जे एक साँझक भोजन केलाक बाद दोसर साँझक भोजनक ठिकाना नहि रहैत छल, परञ्च अपन मन पर ओ एतेक काबू केने छलाह जाहिसँ वो एहि सभहक कोनो परवाह नञि करैत छलाह। ओहिनो परिस्थितियो मे हुनक मन मे मलाल नहि होइत छल, वरन् एहन मौका पर हुनक साहस, धैर्य, श्रद्धा आ विश्वास आर चमकय लागैत छल।

1918 ई. मे ओ कांग्रेसक प्राथमिक सदस्यता ग्रहण केलैन्ह आ कांग्रेस संगठनकेँ मजबूत बनेबा मे जुटि गेलाह। हुनका स्वतंत्रता आंदोलन मे कूदबाक प्रेरणा महात्मा गांधी, राजेन्द्र प्रसाद, जवाहर लाल नेहरू, ब्रज किशोर प्रसाद जेहन महान विभूतिसँ मिललैन्ह। देशक प्रति हुनका सभहक त्याग आ बलिदानकेँ देखि हिनक मन दृढ़ संकल्पित भेल।

दोसर दिश गरीबी-बेकारीक मारल जनताकेँ मजबूरीवश अंग्रेजक चाकरी करय पड़ल छल। अपनहिं देश मे अंग्रेजक सभ हुक्मक पालन करय पड़ैत छल, अपन लोककेँ चाहियो कऽ ओ किछु मदति नहि कऽ सकैत छलाह। सार्वजनिकभाव अओर स्वाभाविक त्यागक भावना हुनका स्वतंत्रता आंदोलन मे अंग्रेजक विरुद्ध संघर्ष करबा लेल प्रेरित केलक।

ब्रजकिशोर प्रसाद आ धरणधीर प्रसादकेँ असहयोग आंदोलन मे मदति करबा लेल चतुरानन दासजी दरभंग आबि गेलाह। ओ अपन अपूर्व बुद्धि, प्रतिभा, कार्यकुशलता, आत्मसर्पण, धर्म आ कष्टसहिष्णुता सँ हुनका सभहक हृदय मे अपना लेल एकटा विशेष जगह बना लेलैन्ह। लगभग एक वर्ष दरभंगा मे रहलाक बाद हुनका मधुबनी सबडिवीजन (आब जिला) मे कांग्रेस संगठनकेँ मजबूत करबा लेल भेजल गेल। मधुबनी एलाक बाद ओ आम जनताक शिक्षा लेल राष्ट्रीय गांधी विद्यालय खोललैन्ह। ओहि विद्यालय मे शिक्षाक संग-संग एकटा बेहतर समाजक निर्माण हेतु आधारशिला राखल गेल।

देशप्रेम आ हुनक कामकेँ देखि बिहार विद्यापीठक प्राचार्य राजेन्द्र प्रसाद हुनक संचालन, प्रबन्धन आ शिक्षा प्रणालीक भूरि-भूरि प्रशंसा केलैन्ह। ओ मधुबनी गांधी विद्यालयक शिक्षक आ प्रधानाध्यापक सेहो रहलाह। ओ दरभंगा कांग्रेस कमेटीक मंत्री आ सभापतिक अपन दायित्वकेँ सफलतापूर्वक

निभौलैन्ह। जेना-जेना दिन बीततल गेल, हुनक कार्यकुशलता, प्रतिभा आ चरित्रबल अओरे उज्ज्वल रूपसँ प्रकाशित होइत गेल। कांग्रेस पार्टीक आदेश पर ओ मधुबनी नगरपालिकाक चेयरमैन बड्ड कम्मे उम्र मे निर्वाचित भेलाह।

1926 मे मधुबनी जिला मे भीषण अग्निकाण्ड भेल। ओहि अग्निकाण्ड मे एक्के घरक ग्यारह लोकक मुत्यु भऽ गेल। आगिकेँ शांत करबा लेल ओ जे परिश्रम आ साहस दिखौलैन्ह ओ अद्वितीय छल। हुनक एहि कार्यकुशलता आ साहससँ प्रभावित भऽ कांग्रेस पार्टी डिस्ट्रिक्ट बोर्ड (जिला परिषद)क लेल हिनका अपन उम्मीदवार बनौलक। सभ प्रतिद्वन्द्विकेँ हरा ओ भारी मतसँ चनुल गेलाह। जिला परिषदक अध्यक्ष बनलाक बाद **ईश-विनय**, अर्थात् 'इस देशकेँ हे दीनबन्धु अहाँ फेर सँ अपनाऊ' केर सब विद्यालय मे प्रचार करबौलैन्ह। किछु समय बाद ब्रिटिश हुकुमत फरमान जारी कराबैत **ईश-विनय**केँ गैर-कानूनी घोषित कऽ ओकरा बन्द करा देलेक, जकरा बाद हिनक नेतृत्व मे ब्रिटिश हुकुमतक खिलाफ काफी विरोध कएल गेल। अंततः ईश-विनयक मामला हाईकोर्ट पहुँचल। हाईकोर्ट ओहि मामले मे हस्तक्षेप करैत ब्रिटिश हुकुमतकेँ आदेश वापस लेबा लेल कहलक आ ब्रिटिश हुकुमतकेँ दण्ड-स्वरूप तीन गोल्ड मोहर जुर्माना लगेलक। ई अपना-आप मे एकटा असंभव बात छल, जे चतुरानन दासजीक आत्मविश्वास आ दृढ़ संकल्पक परिणाम छल आ देशवासी लेल स्वाभिमानक बात।

1921 ई. मे बिहार विद्यापीठक स्थापना पटनाक सदाकत आश्रम मे मजहरूल हक, ब्रजकिशोर प्रसाद आ राजेन्द्र प्रसाद आदि नेता द्वारा कएल गेल। चतुरानन दास, ब्रजकिशोर प्रसाद, मथुरा प्रसाद, कृष्ण बल्लभ सहाय, राम निरीक्षण सिंह, बदरीनाथ वर्मा आ धरणधीर प्रसाद दिन-रात मेहनत कऽ कऽ 5 सितम्बर, 1928केँ बिहार विद्यापीठक निबंधनक लेल 1860 ई.क 21म विधानक अनुरूप आवेदन देलैन्ह। जखन बिहार विद्यापीठक स्थापना सदाकत आश्रम, पटना मे भेल तऽ हिनका ओकर ट्रस्टी मण्डलक संयोजक बनाओल गेल।

कम जोतक मालिक हाइतो दासजी मधुबनी मे खादी भण्डारक स्थापना लेल अपन श्वसुर बलाट निवासी झल्लू लाल दास द्वारा प्रदत्त जमीन दान मे दऽ देलैन्ह। मधुबनी खादी भण्डारे आगाँ चलिकऽ बिहार खादी ग्रामोद्योग संघक मुख्यालय बनल। ओ खादी भंडारक आधा हिस्सा मे गांधी विद्यालयक निर्माण करबौलैन्ह जकर अध्यापक आ पहिल पीठ सभाक आजीवन सदस्य बनल रहलाह।

1930 सँ 1932 धरि सविनय अवज्ञा आंदोलन मे दासजी तीन बेर जेल गेलाह।

जेल मे हिनक कतेको मित्र बनलाह जाहिमे हजारीबाग जेल मे कन्हाई लाल चौधरी आ शितिकंठ झा प्रमुख छलाह। जखन हिनका दरभंगा जेल मे राखल गेल तऽ ओतय सतीश चन्द्र झा, अनिरूद्ध सिंह आ श्रीनारायण दास हिनक परम मित्र बनलाह। मधुबनी जेल मे श्यामा नन्दन झा सँ हिनक मित्रता भेल।

1930 मे दरभंगा मे जवाहर दिवस मनाओल गेल जकर नेतृत्व धरणीधर प्रसाद करयवला छलाह, मुदा ऐन मौका पर हुनक आ आन नेताक गिरफ्तारी भऽ गेल। जवाहर दिवस सभाक नेतृत्व करबाक लेल कियो नञि रहलाह। हिनका ओहिये समय हाजरीबाग जेलसँ छोड़ल गेल छल। ओ अपन घर जा रहल छलाह, बाटे मे जानकारी मिलल जे सभाक नेतृत्व करयवाल सभ नेता गिरफ्तार कऽ लेल गेल छथि। ई खबर सुनतहिं ओ ओहि सभा दिस दौड़लाह आ ओकर नेतृत्व अपन हाथ मे लऽ लेलैन्ह। परिणामस्वरूप पुलिस सुपरिटेन्डेंट सभा भंग करबाक आज्ञा दैत चेतावनी देलक जे जौं सभा भंग नहि भेल तऽ ओ गोली चलबाओत। एहि चेतावनीक बावजूदो ओ मंचसँ अपन भाषण शुरू केलैन्ह। पुलिस लाठि चलौलक, हण्टर चलौलक। कतेको लोह घायल भेलाह, हिनको काफी चोट लागल। बड्ड मुश्किल सँ हुनक जान बचि पाओल, हुनका फेर सँ गिरफ्तार कऽ लेल गेल, अपना घर नहि जा ओ सीधे जेले गेलाह।

1933 ई.क अस्पृश्यता निवारण आंदोलन मे ओ भाग लेलैन्ह। हरिजन बस्तिय जा-जा कऽ ओतय लोक मे चेतना जगेनाय, साफ रहय केर तरीका बतेनाय, गन्दगी सँ होमयवाली बीमारीक बारे मे जानकारी दऽ हुनक जीवन स्तरकेँ ऊँचा उठेनाय, ओ अपन कर्तव्य बुझलैन्ह। अस्पृश्यता निवारण आंदोलन मे भाग लेबा कारणेँ हिनका अपना समाज मे कठिनाईयो झेलय पड़लैन्ह। दरभंगा जिला मे हरिजन आंदोलनक एकटा मुख्य स्तम्भक रूप मे ई काम केलैन्ह आ जीवनपर्यंत समाजक दबल-कुचलल लाककेँ मुख्यधारा सँ जोड़ैत रहलाह।

1934 मे दास बाबू मधुबनी अनमुण्डल (आब जिला) मे कांग्रेस नेताक हैसियत सँ भूकम्प राहत कार्य मे लागल छलाह, निःस्वार्थभाव आ ईमानदारीपूर्वक भूकम्प पीड़ितक मदति करि रहल छलाह। एहि बीच जवाहर लाल नेहरूक मधुबनी अनुमण्डल मे भूकम्प पीड़ित आ राहत कार्यक लेल दौरा भेल। दासजी हुनका भिन्न-भिन्न स्थान पर कांग्रेस द्वारा चलाओल जा रह सहायता कार्य आ कार्यक्रमक जानकारी देलैन्ह अओर सरकार द्वारा चलाओल जा रहल राहत कार्यक वस्तुस्थिति सँ सेहो नेहरूजीकेँ परिचित करौलैन्ह। नेहरूजी हिनका सँ मिलकऽ काफी प्रभावित भेलाह आ हिनका द्वारा कएल गेल काजक काफी सराहना केलैन्ह।

31 मार्च 1932केँ महात्मा गांधीक संग राजेन्द्र प्रसाद, बल्लभभाई पटेल, महादेव

देसाई, मीरा बेन, सत्यनारायण सिंह आदि लोक मधुबनी अयलाह। दासजी मधुबनी खादी भण्डार मे हुनक ठहरय केर व्यवस्था केलैन्ह आ सहायता कार्य सँ संबंधित जानकारी देलैन्ह। महात्मा गांधी हिनक निःस्वार्थ कार्यक प्रशंसा केलैन्ह आ भूकम्प पीड़ितक मदति करबा लेल हुनका खुब आशीर्वाद आ स्नेह देलैन्ह।

हिनक मेहनत, ईमानदारी आ कांग्रेसक प्रति समर्पणकेँ देखैत हुए कांग्रेस पार्टी 1937क ब्रिटिश हुकुमत मे भेल प्रान्तीय चुनाव मे हिनका दक्षिण मधुबनी निर्वाचन क्षेत्र नं. 48 सँ अपन उम्मीदवार बनौलक, ई सभ उम्मीदवारकेँ पाछाँ छोड़ैत भारी मतसँ विजयी भेलाह आ बिहार विधान सभाक लेल चुनल गेलाह। 22 जुलाई, 1937केँ श्रीकृष्ण सिंहक नेतृत्व मे बिहार विधान सभा मे कांग्रेसक सरकार बनल। चतुरानन दास ओहिये दिन शपथ ग्रहण केलैन्ह। बिहार विधान सभा मे हुनका कांग्रेस कार्यकारिणी सभाक सदस्य बनाओल गेल।

2 सितम्बर, 1937केँ विधान सभा मे 'राइस मिलींग एवं वोयाल प्रेसिंग' केर हटेबाक मुद्दा पर बहस भेल तऽ ओ अपना विचार राखलैन्ह। दासजी आधुनिक मशीनक विरोधी नहि छलाह ओ आम जनताक बेरोजगारीक विरोधी छलाह। लोकक रोजगार छूटबा सँ भूखे सुतबाक विरोधी छलाह। आम लोकक स्वास्थ्य पर खराप असर पड़य सँ चिन्तित छलाह। जाहि प्रकारें ओ आंकड़ाक संग सदन मे अपन पक्ष राखलैन्ह, ओ प्रसंशनीय छल। हुनक दलीलकेँ सुनल गेल आ ओ संशोधन पास भऽ गेल।

8 सितम्बर, 1937केँ सदन मे 'बिहार स्टाम्प अमेन्डमेन्ट बिल 1937' आयल। दासजी ओहि बिलकेँ जन विरोधी बताबैत बिलक कड़ा विरोध केलैन्ह, अंततः बिहार स्टाम्प बिल सदन मे असफल रहल। 15 सितम्बर, 1937केँ दासजी एकटा साधारण किसानक भाँति अपन पक्ष राखैत बाढ़िक समस्यासँ लोककेँ अवगत करौलैन्ह, संगे दरभंगा आ मधुबनी जिलाक लोककेँ बाढ़िक कारण होएवाला तकलीफसँ अवगत करौलैन्ह आ कमला नदीक प्रकोपकेँ दर्शबैत कोना एकर बचाव कएल जाए ओकर उपाय सेहो बतौलैन्ह। जमींदार सबसँ पोखैरकेँ मुक्त करेबाक मांग सेहो केलैन्ह जाहिसँ किसानकेँ सिंचाईक सुविधा आसानी सँ मिल सकय आ ओतय केर जमीन उपजाऊ बनय।

बिहार सुगर फैक्ट्रीज कन्ट्रोल बिल 1937क लेल 16 लोकक कमिटी बनाओल गेल, दास बाबू सेहो शामिल छलाह। 11 दिसम्बर, 1937केँ कन्ट्रोल बिलक सदस्य रूपेँ दासजी किसानक पक्ष राखैत सदनकेँ ई सुझाव देलैन्ह जे किछु Preserved Area मे कुसीयारक खेती कएल जाए जाहिसँ किसानक सबटा कुसीयार मिलवाला द्वारा लऽ लेल जाए। संगहिं जौं अगर Preserved Area मे कुसीयारक उत्पादन होएत तऽ मिलवालाकेँ सेहो एकर कमी नहि रहत, एहि System सँ दूनू लोककेँ फायदा पहुँचत। दास जीक एहि दलीलक प्रभाव सदन पर पड़ल 14 दिसम्बर, 1937केँ ई बिल सदन मे स्वीकृत भेल।

5 मार्च, 1938केँ दरभंगाक सकरी सुगर मिल सँ बहाओल जा रहल गंदगीक बारे मे दासजी प्रश्न द्वारा सदनकेँ जानकारी देलैन्ह जे सुगर मिल जे गंदगी फैला रहल अछि ओहि कारणेँ आस-पासक लोककेँ कतेको प्रकारक बीमारी भऽ रहल अछि आ हुनक जीवन कष्टमय भऽ गेल अछि। इएह नहि ओहि बाटे गुजरयवाला रेलगाड़ीकेँ सेहो बड्ड तकलीफक सामना करय पड़ैत अछि। अतः ओतुका जनताक हित केँ देखैत सुगर मिलसँ बहाओल जा रहल गंदगीक जल्द-सँ-जल्द कोनो उपाय करबाक सदन सँ आग्रह केलैन्ह।

5 अप्रैल, 1938केँ बिहार विधानसभा मे बिहार कृषि आयकर बिल नं. 11, 1837 लाओल गेल जकर दासजी विरोध करैत किछु बिन्दु पर सदन सँ सुधार करबाक माँग केलैन्ह। ओ बिल सुधारक संग दोबारा सदन मे लाओल गेल आ हिनक समर्थन सँ स्वीकृत भेल।

28 अप्रैल, 1938केँ सदन मे The Bihar Money-Lender's Bill, 1937 (Bill No. 10 of 1937) लाओल गेल। ओहि बिलकेँ जनता विरोधी बताबैत दासजी एकर विरोध केलैन्ह जाहिसँ ई बिल सदन मे अस्वीकृत भऽ गेल।

चतुरानन दास ब्रिटिश हुकुमतक शासनकाल मे विधान सभाक लेल चुनल गेल छलाह। ओ सरकारक खिलाफ आवाज उठौलैन्ह, जिनका खिलाफ किछु शब्द बाजनायो अपराध छल। ओ विधान सभाक सदस्य रहितो जनताक हित मे लागल छलाह। खराब स्वास्थ्य रहितो, अपन शरीरक परवाह नञि करैत ओ सदिखन अपन निर्वाचन क्षेत्र आ आन जगह भ्रमण कऽ जनताक समस्यासँ रू-ब-रू होइत छलाह। जनताक बातकेँ ओ सदन धरि पहुँचाबैत छलाह, जाहिसँ जनताक कल्याण होए।

ओ विश्राम करनाय तऽ जानैते नञि छलाह। बीमार पड़लाक बाद हुनका इटकीक यक्ष्मा सैनेटोरियम अस्पताल (राँची) मे भर्ती कराओल गेल। ओतय ओ तीन मास धरि भर्ती रहलाह आ ओह दरम्यान ओ आराम केलैन्ह। ओतहियो हुनका उनका देश आ देशवासीक चिन्ता सता रहल छल। ईश्वर भक्ति आ देश सेवा हुनक जीवनक प्रधान लक्ष्य छल।

अंत समय धरि होशक संग राम नामक स्मरण करैत रहलाह, इएह हुनक अंतिम इच्छा सेहो छल। देहांतक चारि घंटे पूर्व ओ कहलैन्ह, "हमरा अंत समय धरि राम नाम सुनाबैत रहब।" देहांतक किछु मिनट पूर्व डॉक्टरकेँ नजदीक आबैत देखि अपन मुस्कुराहटसँ हुनक स्वागत केलैन्ह। मुस्कुराइत आ अपन चारू कात राम नामक ध्वनि सुनैत ओ एकदम शांति आ संतोषक संग गंगाजल पीलाह आ ओकर बाद हुनका शरीर ठंडा पड़ि गेल। 17 सितम्बर, 1933केँ करीब साढ़े दस बजे दिन मे चतुरानन बाबू परलोक सिधारि गेलाह।

विशेष : मैत्रीय

अत्यंत मेधावी ख्याति प्राप्त देशभ स्व. चतुरानन बाबूक स्वजातीय ग्रामीण अभिन्न

मित्र स्व. कृष्ण बिहारी बाबूक जन्म 15 मई 1898 मे भेल छल, ओ अति आकर्षक व्यक्तित्वक मुदुभाषी व्यक्ति छलाह। सभहक संग निष्कपट व्यवहार रखबाक कारण चर्चित स्वाभिमानी चतुरानन बाबूक संग हुनक घनिष्ट संबंध छल। हुनका संग अधिक स्नेह आ प्रेमक कारण छल चतुरानन बाबूक प्रत्येक क्रिया अपन मातृभूमिक प्रति समर्पित रहैन्ह। कृष्ण बिहारी बाबू हुनका अपन आदर्श मानैत रहथिन।

कृष्ण बिहारी बाबूक विवाह प्रसिद्ध गाम बिसहत ग्रामवासी स्व. रामकृष्ण कंठक द्वितीय पुत्रीक संग भेल रहैन्ह। बिसहथक ओ कुलीन परिवार मिथिला मे अनुकरणीय मानल जाइत छल।

पढ़वा-लिखबा मे कृष्ण बिहारी बाबू सामान्य मुदा लगनशील छलाह। नियमित रूपेँ ओ स्कूल जाइत छलाह, कोनो मौसम बाधक नञि होइत छलैन्ह। एहि संबंध मे अपना संग घटित एकटा प्रसंगक चर्चा ओ कतेको बेर करैत छलाह। वर्षा ऋतु मे एक दिन ओ घनघोर वर्षा मे भिजते स्कूल जाइत रहथि, ओहि सम्बधित स्कूलक एकटा प्रध्यापक श्री शिव शंकर हुनका भीजैत देखिकऽ शोर पाड़लैन्ह आ एक थप्पड़ मारैत कहलथिन, "इतनी घनघोर बारिश मे भिजते हुए तुम स्कूल क्यों जा रहे हो। आज तो स्कूल भी बंद हो गया होगा। मैं भी आज इतनी जोड़ कि वर्षाक कारणेँ स्कूल नहीं गया हुँ। तुम यहीं रूक जाओ। वर्षा बंद हो जाने के बाद अपने घर लौट जाना।"

आर्थिक तंगीक कारणेँ हुनका अपन पढ़ाई स्थगित करय पड़लैन्ह किछु दिन पश्चात हुनक नियुक्ति सरकारी प्राथमिक स्कूल मे भऽ गेलैन्ह। प्रारंभ मे हुनक पदस्थापन सिमरा गामक एकटा स्कूल मे भेल रहैन्ह। किछु अंतरालक आद हुनक स्थानान्तरण अपना गाम भच्छीक सरकारी स्कूल मे भऽ गेलैन्ह। स्कूल अवधिक बाद ओ बच्चा सबकेँ ट्यूशन सेहो पढ़ाबैत रहलाह। पढ़एबाक कला मे हुनक निपुणता देखिकऽ प्रत्येक अभिभावकक अभिलाषा रहैत छलैन्ह जे ओ अपन छात्रकेँ हुनकेँ सँ पढ़ाबैथ। केहनो भुसकोल विद्यार्थीकेँ अपना ढ़ंगसँ समझा-बुझा, ठोकि-ठाकि कऽ ओ ओकरा सुदृढ़ बना दैत छलाह। गौरतलब अछि जे हिनक कनिष्ट भ्राता स्व. सत्यानन्द लाल दासजी मुजफ्फपुर जिला स्कूलक प्राचार्य छलाह आ शिक्षाक क्षेत्र मे हुनक अतुलनीय योगदान लेल हुनका राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रपति पुरस्कार सँ सम्मानित कएल गेल छल।

अल्प वेतनभोगी होइतो ओ दयावान स्वभावक छलाह। कानो जरूरतमंद जे हूनका आगाँ हाथ पसारैत छल ओ हुनका 2-4 आनाक मदति अवश्य करैत छलाह, गौरतलब अछि जे ओहि समय 2-4 आना सँ 3-4 व्यक्तिक एक साँझक भोजन भऽ जाइत छल।

शारीरिक सौष्ठव मे सेहो बलिष्ट छलाह। एहि संदर्भ मे एकटा रोचक घटनाक उल्लेख करब प्रासंगिक बुझना जाइत अछि- भच्छी गामक दक्षिण बारि टोलाक खेलक मैदान मे एक बेर एकटा कुश्तीक आयोजन भेल, ओहि मे नगीना नामक एकटा नामी पहलवानक चुनौती स्वीकार करैत ओकरा पटकि कऽ चित्त कऽ देलाह। ओहि दिनसँ लोक हुनका 'बल्ली बाबू'क नामसँ सम्बोधित करय लागल (किंवदन्ती अछि जे तारालाही गामक कर्ण कायस्थ कुल भूषण बल्ली बाबू जे पहलवान छलाह एकटा हाथीकेँ नाङगरि पकड़ि पटकि देने छलाह)। एहि बातक उल्लेख भच्छी गामवासी स्व. रास बिहारी लाल दास द्वारा लिखल मिथिला दर्पण मे प्रकाशित लेख मे सेहो अछि। जून 1960 मे श्रीकृष्ण बिहारी बाबूक देहावसान भऽ गेलैन्ह। ❑

साभार : *नवचेतना चित्रगुप्त परिषद पटना, बिहार अओर चक्रधर लाल दास, ग्राम पोस्ट - भच्छी, जिला - मधुबनी*

अनुवाद : *मुकेश दत्त*

संकलन : *कमलेश कुमार दास, पौत्र - स्व. कृष्ण बिहारी लाल दास, ग्राम पोस्ट - भच्छी, जिला - मधुबनी अध्यक्ष, मिथिलांगन*

फुइस कक्काक ढुइस

घरक बनल घी अओर बाँचल सामग्रीक उपयोग

सरिता दास

1. घी

आइ हम घर मे घी बनेबाक विधि बता रहल छी-

विधिः- रोज दूध औट कऽ दूधकेँ चालैन सँ आधा झाँपल जकाँ राखु ताकि पूरा भाप बहार निकलय। दूधकेँ रूम टेम्परेचर पर एला पर उघारे फ्रीज मे राखि दी। 6-7 घंटा बाद एहि दूधकेँ मलाई निकालनाक बाद इस्तेमाल करक चाही। एहि तरहेँ मलाई बेसी निकलत। 8-10 दिन या आधा किलोक कोनो डिब्बा मे मलाई निकालि कऽ रोज राखु जखन डिब्बा भरि जाए तऽ एक दिन सबेरे फ्रिजसँ डिब्बा निकालि कऽ बाहर राखि दियौ। फ्रिजर मे पानि ठंडा होए लेल राखि दियौ। एक घंटाक

बाद मलाईकेँ मथनाय (फेंटनाय) शुरू करू। एहि लेल रही वा हैड ब्लेंडर केरे इस्तेमाल कऽ सकैत छी। जखन मलाई खुब गढ़ा कऽ भारी भऽ जैत तऽ बुझु जे लगिचा गेल। कने अओर फेटब तऽ मलाई मे सँ पानि अलग भेनाय शुरू भऽ जैत, तखन एकदम चिल्ड (ठंडा) पानि किछु बर्फक टुकड़ा संग मलाई मे धऽ दियौ। ठंडा पानि दैते मक्खन अलगि कऽ ऊपर आबय लागत। मक्खन केँ गोला बना बना अलग कऽ लियऽ। आब मोट पेनीवाला संभव होए तऽ लोहाक लोहिया मे मध्यम आँच पर चढ़ा दियौ। गरम भऽ मक्खन सँ घी अलग होमय लागत। घी खुब बरकय दियौ तऽ घी बेसी दिन फ्रेश रहत। घी बरकि कऽ जखन लोहियोक तलि मे जे मट्ठा रहत ओ सुनहरा भऽ जाए तऽ गरमे घी स्टीलक छन्ना सँ छानि अलग कऽ लियऽ, भऽ गेल घरक बनल शुद्ध घी तैयार। दूध भले मिलाबट वाला हैत, मुदा घी एकदम शुद्ध।

2. पिरूकिया (गुझिया)

आब मट्ठासँ पिरूकिया(गुझिया) बनेनाय बता रहल छी, जेना हम घर पर बनाबैत छी।

सामग्रीः-

सूजी	- 1 कप
मैदा	- 2 कप
चीनी	- 2 कप
तरय लेल	- घी
कतरक मेला	- 1/2 कप
ईलाईची	- 1 चम्मच

विधिः- सबसँ पहिले एक कप चीनी मे एक कप पानि दऽ मध्यम आँच पर चाशनी बनय लेल चढ़ा ली। 10 मिनट बाद आँच बंद कऽ दियौ। 1/2 चम्मच इलाईची पाउडर मिला कात मे राखि लियऽ। आब मैदा मे एक चम्मच घी दऽ खुब मिला कऽ कनी-कनी पानि दऽ सानि कऽ गोला बना झाँपि कऽ राखि दियौ। आब जाहि लोहिया मे घी बनेलौंह ओहिमे सूजी केँ कम आँच पर सोन्हगर कऽ भूजि लियऽ। एकटा फैल बासन मे सूजी निकालि ओहिमे चीनी, मेवा, इलाईची पाउडर आ घी सँ निकलल मठ्ठा सब नीकसँ मिला लियऽ।

आब मैदाकेँ छोटे-छोट लोइया काटि, मोटे गोल-गोल बेल, ओहिमे सूजीक भराबन भरि मनचाहा आकारक पिरूकिया बना कऽ राखि लियऽ।

आब आँच पर लोहाक लोहिया वा कोनो फ्राईंग पैन मे घी गरम कऽ, मध्यम आँच पर खुब सोन्हगर कऽ करगर कऽ पिरूकिया तरू।

आब तैयार चाशनी मे डुबा उलटि-पलटि कऽ निकालि कऽ प्लेट मे राखि लिय। मट्ठा द्वारे ई पिरूकिया खुब स्वादिष्ट लागत।

3. पनीर भुर्जी

आब मक्खन निकालि कऽ जे घोर बाँचल ओकर इस्तेमाल बता रहल छी।

ओहि घोरकेँ आँच पर चढ़ा दियौ। कनी देर मे ओहिमे सँ पानि आ पनीर अलग भऽ जाएत। पनीर छानि कऽ दूनू चीज अलग-अलग राखि लियऽ।

घोर मे सँ निकालल पनीर साधारण पनीर सँ कनी कम नरम होइत अछि। कारण ओकर घी अलग भेल अछि तैं एकर भुर्जी बनेनाय बेसी नीक रहत।

सामग्रीः-

पनीर	- 1 कप
नमक	- स्वादानुसार
प्याज	- मध्यम आकार 2टा
टमाटर	- 1टा
अदरख-लहसून पेस्ट	- 1 चम्मच
हरियर मिरचाई काटल	- 1 चम्मच
हड़ैद पाउडर	- 1/2 चम्मच
पाव भाजी मसाला	- 1 चम्मच
मिरचाई पाउडर	- 1/2 चम्मच
जीर	- 1/2 चम्मच
तेल	- 2 चम्मच

विधि– कराही (पैन) गरम कऽ ओहिमे तेल गरम कऽ जीरक फोरन दऽ दियौ। जीर गमकय लागय तऽ हरियर मिरचाई दऽ चटका दियौ। आब प्याज दऽ गुलाबी होए धरि भुजु। आब टमाटर दऽ आँच कम कऽ नून दऽ टमाटर गलय धरि पकाऊ। सब मसाला दऽ कऽ खुब भुजु। आब पनीर मसलि कऽ मिला दियौ। कम आँच पर 10 मिनट धरि पकाऊ। ताकि सब मसालाक स्वाद पनीर मे समा जाए। आब पनीर भुर्जी तैयार अछि। धनिया पत्ता सँ सजा पुरी परोठा संगे परसु।

4. कलाकंद

पनीर सँ हम कहियो काल कलाकंद सेहो बना लैत छी।

घी बनाऊ तऽ पनीर कम निकलैत अछि, तरकारी लेल परिपूर्ण नहि होए तऽ इएह बना लियऽ।

सामग्रीः–

पनीर	- एक कप
दूध पाउडर	- 1/4 कप
चीनी	- 1/4 कप
इलाईची पाउडर	- 1/2 चम्मच

सजावट लेल कतरल पिस्ता बदाम - 2 चम्मच

विधिः– मोट पेनी वाला पैन मे पनीर मसलि कऽ कम आँच पर चढ़ा लियऽ। एहिमे पिस्ता बदाम छोड़ि बाँकि सब सामग्री मिला कऽ कम आँच पर पकाऊ। सामग्रीकेँ लगातार चलाबैत रहु ताकि निचा मे लागय नञि। सामग्री जखन समटा कऽ गोलियै लागै तऽ आँच बंद कऽ दियौ। ध्यान रहय रंग बदलय सँ पहिनहिं आँच बंद कऽ दियौ। मिश्रणक रंग उजरे रहबाक चाही, ओतबे देर पकाऊ।

आब ट्रे मे कनी घी लगा चिकना लिए। एहिमे मिश्रणकेँ 1 इंच मोटाई मे फैला कऽ पिस्ता-बादाम छिट कऽ हथेली सँ दबा दियौ ताकि सेट भऽ जाए। ठंढा होए लेल छोड़ि दियौ। 1 घंटाक बाद मनचाहा आकार मे काटि दियौ। स्वादिष्ट कलाकंद तैयार अछि।

5. ढोकला

आब पनीरक पानि जे बाँचल अछि ओहिसँ ढोकला बनाबैत छी।

सामग्रीः-

बेसन	- 1 कप
हरीयर मिरचाई	- 5टा
सूजी	- 1/4 कप
करी पत्ता	- 8-10टा
नून	- स्वादानुसार
काला सरसो	- 1/2 चम्मच
चीनी	- 4 चम्मच

1 नींबूक रस

तेल	- 4 चम्मच
बेकिंग सोडा	- 1/2 चम्मच
हल्दी पाउडर	- 1/4 चम्मच

पनीरक पानि

विधिः- बेसन, सूजी मे 1 चम्मच चीनी, कनी नून, हल्दी पनीरक पानि दऽ घोल तैयार कऽ लिए। बरतन कनी फैल राखब जाहिसँ फूलय लेल जगह भेटय। एहि घोलकेँ 4-5 घंटा लेल भाँपि कऽ राखि दियौ।

आब पैघ पतीला मे दू कटोरी पानि दऽ झाँपि कऽ आँच पर चढ़ा लियऽ। कोनो केक टीन वा कोनो बरतन जे पतीला मे आराम सँ रखा जाए ओकरा तेल लगा कऽ चिकना कऽ लियऽ। आब जे घोल तैयार अछि ओहिमे 1 चम्मच तेल वा बेकिंग सोडा मिला कऽ चिकनैल बरतन मे घोल दऽ कऽ उबलैत पानिवाला पतीला मे कोनो स्टैंड वा कटौरी दऽ कऽ ओहि पर घोलवाला बरतन राखि कऽ भाप पर पका लियऽ (ई राईस कुकर मे सेहो पका सकैत छी)। भाप पर मध्यम आँच पर 1/2 घंटा पका कऽ चाकु वा कोनो नुकिला चीज सँ ढोकला चेक करू, जौं साफ निकलि गेल तऽ ढोकला तैयार अछि। आब पतीला सँ ढोकलावला बरतन निकालि 1/2 घंटा वा बेसीयो ठंडा कऽ लिए।

आब लोहिया मे तेल गरम कऽ राई चटका कऽ ओहि मे करी पत्ता आ मिरचाई मे चीरा लगा कऽ दू मिनट पकाऊ आब ओहिमे दू कटोरी पानि दऽ नून आ बाँकि चीनी दऽ पाँच मिनट ऊबालु। आब गैस बंद कऽ नींबूक रस मिला लियऽ। ढोकलाकेँ मनचाहा आकार मे काटि ओहिमे तैयार तड़का दऽ दियौ धनिया पत्ता सँ सजा कऽ परसु।

6. घोर जाऊर (कर्ड राइस)

बाँचल पनीरक पानिसँ घोर जाऊर (कर्ड राइस) बनाबय छी।

मैना पंचमी दिन घोर जाऊर बनैते अछि। फेर साल भरि बादे लोक बनाबैत छथि। शायद आसकति सँ। आब जहिया घी बनाऊ ओकर पानिसँ बना लियऽ एहि बहाने, बड्ड स्वादिष्ट लागत।

सामग्रीः-

चाउर	- 1/2 कप
हींग	- एक चुटकी
दही	- 1/2 कप
घी	- 2 चम्मच
काला सरसों	- 1 चम्मच
जीर	- 1/2 चम्मच
करी पत्ता	- 8-10टा
लाल मिरचाई	- 2-3टा
नून	- स्वादानुसार।

विधिः- करीब 1 लिटर पनीरकेँ पानि मे चाउर धो कऽ कुकर मे नून मिला कऽ तेज आँच पर एक सीटी, फेर कम आँच पर एक सीटी लगा कऽ आँच सँ उतारि लिए। जखन पूरा एयर निकलि जाए तऽ कुकर खोलि चेक कऽ लिए चाउर खुब नीकसँ गलि गेल हैत आब एहिमे दही मिला दियौ। ऊपर सँ सब सामग्रीकेँ फोरन पका ऊपर सँ धऽ झट दऽ ढक्कन बंद कऽ दियौ। पांच मिनट बाद कुकर खोलि परसु। बहुत स्वादिष्ट नाश्ता जे खुब सुपाच्य होएत अछि तैयार अछि।

एहि तरहेँ घी बना ओकर सब सामग्रीक उच्चतम उपयोग करबाक हमर कोशिश रहैत अछि। ❑

सेल्फ थ्रेडिंग

संतोषी कर्ण

आइ हम Self Threading केँ बारे मे बतायब।

सामग्रीः-

1. Modicots या organica के 40 नम्बरक ताग (thread)
2. Plucker
3. Small sizer
4. Talcum powder
5. Eyebrow pencil
6. Antiseptic cream

एहि स्थान पर Threading नहि करिः-

1. कटल स्थान पर
2. मसा आ फुन्सी पर
3. जरल स्थान पर
4. नाजुक त्वचा पर

निम्न स्थान पर Threading कऽ सकै छीः-

1. Eyebrow
2. Upper lip
3. Lower lip
4. Chine
5. Forehead
6. Side lock
7. Arms & legs

Threading करबाक तरीकाः-

सबसँ पहिने आँगुर सँ केहुनी धरि लम्बा ताग (thread) लियऽ (जौं बनाबय मे परेशानी होए तऽ तागक लम्बाई छोट-पैघ कऽ सकैत छी। आब ओकरा दोहरा (double) लियऽ, तकर बाद दूनू छोरकेँ पकड़ि कऽ गिरह (knot) दऽ दियौ। आब बायाँ हाथक दू आँगुर सँ ओहि गिरहकेँ दबा लिय जाहिसँ गिरह बीच मे नञि आबय आ तीन आँगुरक ताग बीच मे राखु। आब दहिना हाथक पाँचो आँगुरकेँ तागक बीचमे धऽ दियौ आ

पाँचो आँगुरक सहयता सँ 8-10 बेर बाहर दिस घुमाऊ जाहिसँ loop तैयार भऽ जाए। आब एना (mirror)क आगाँ बैस जाऊ। Eyebrow pencil सँ जे आकर(shape) चाही से दऽ दियौ आ बाँकि hair loopक सहायत सँ हटा दियौ। जखन अपने सँ eyebrow बनेबाक आदत भऽ जाएत तऽ Eyebrow pencil सँ shape देबाक जरूरत नञि पड़त। Threading केलाक बाद ओहि स्थान पर astringent lotion वा cream apply करबाक चाहि।

Note:- तागक loop बनेलाक बाद सबसँ पहिने पएर वा हाथ सँ केश हटेबाक कोशिश करू तखन कपाड़ पर आ ठोरक ऊपरक केश हटाऊ। जखन सही सँ केश हटाबऽ आबि जाएत तखने eyebrow बनेनाय शुरू करब।

Steps:-

1. ताग लिय (take a thread)
2. दोहरा लिय (double it)
3. गिरह ददियौ (make knot)
4. 8-10 बेर घुमा दियौ (round it 8-10 times)। ❑

पचहीबाली काकीक लंदनबाली पुतोहु

ज्ञानवर्द्धन कंठ

सौंसे गाम मे अजबे रोमांच पसरल रहैक। काने-कान खुसुर-फुसुर भऽ रहल छल। पचहीबाली काकी अखनि धरि घरसँ नहि बहरायल छलीह। कोनो हल्लो-हुच्चर नहि कऽ रहल छलीह। सभ ओम्हरे कान पथने रहय। आब पचहीबालीकेँ सभटा घोसरि जेतैन्ह। बड्ड लोककेँ दशा करैत छलथिन। अपन बेटा सम्हार मे रहबे नहि केलैन्ह आ अनका..! कहबियो छैक जे चालनि दुसलैन्ह सूप के...! आब एलैन्ह दूनम बेटा-पुतोहु! देखै छियैन्ह जे की होइ छैन्ह! खूबे रगड़ा-झगड़ा भेल हेतैन्ह, ओ कोनो मैथिलानी छैन्ह? बेसी फुरफुरी देखेथिन तऽ झोंटे घींचि थकुचि देतैन्ह। तैं घरसँ नहि बहरा रहल छथि पचहीबाली काकी!

बेटा-पुतोहु तऽ सगर गाम हवा खा एलैन्ह आ सासु ओछाओन धेने छथि! कोनो मुँह छैन्ह? गे मैया सभ! हाफ पैंट आ गंजी पहिरने घूमै छै गे मौगी! अकरहर भऽ रहल छैक। दस मुँह, दस बात।

दू बजे दिन मे पचहीबाली काकी घरसँ बहरेलीह। आई-माई सभ दम साधि लेलक। सभहक आँखि हुनके पर। काकी बुमकार छोड़लैन्ह, "हमरा कोनो भगवान आँखि नहि देने छथि? लोक जे कनखी-मटकी मारि रहल अछि, से की हमरा नहि सूझैए? कि हम आन्हर छी? केकरो मुँह छैक जे हमरा सोझा मे किछु बाजत? एकटा हमरे बेटा अपने सँ बियाह केलक अछि कि पहिले-पहिल? दर्शनमा केँ छौड़ा दिल्लीबाली केँ लऽ अनलकै तऽ बड्ड नीक? जितनाक बेटी उढ़रि गेलैक से केकरो कल्ला अलगै जाए गेलौ? फेकनाक पुतोहु कोन जातिक छियैक से केकरो बूझलो छौक?सभटा कनखी-मटकी हमरे पर? हे गै सौतिन सभ! हमर बेटा बियाह केलकै तऽ कोनो एमहर-ओमहर? मेम छियैक, मेम! लंदन के मेम! ओहन पोच्छल मुँह, ठाढ़ नाक आ लीखल भौंह एहि परोपट्टा मे छौ केकरो? पाँच हाथ नमहर पुतोहु छौ केकरो? सेहंते लागल रहि जेतौह! सओखे नञि डहि जेतौह? ससुर केँ देखऽ आबै गेलै अछि। केहनो छै, तऽ हम्मर छै, हम्मरे रहतैक। देखि पड़ोसिन जरि मरैये! लोककेँ कुटीचालि केने हेतैक? किएक? ओ कोनो लोक नहि छै की? सिंघ छै की ओकरा? ओकर भाखा नहि बुझैत छियैक, मुदा भाव नहि बुझबैक? मोमी-मोमी केने अछि, जखन सँ आयल अछि। सौंसे गाम घुमि आयल अछि, ताहिसँ की? हम अपन बिध-बेबहार छोड़ि देबैक? सौंसे गामक नोंत-हकार हम पुरने छियैक। हमहुँ भरि गाम सबकेँ हकार दै छियैक सबकेँ सुनाकऽ। साँझ मे पुतोहु देखै लेल आबय जाई जाऊ लोकसब, नहि तऽ गारि-सराप सँ तऽर कऽ देबै। बापक सराध कऽ देब। नानाक सगाई करा देबै...।"

पचहीबाली काकी बजैत-भुकैत आगाँ बढ़ि गेलीह। ❑

नवकी कनियाँ

चँदना दत्त

शम्भुक बियाह भऽ रहल छल। परम उत्साह मे छल। किएक नहि हो! अपने छल आई आई टियन, मुदा रंगरूप कोनो तेहन नहि, मुदा बच्चेसँ पढ़बामे आगि छल। कनियाँ बड्ड छान बानि कऽ तकायल। बैजुबाबुक बेटी।

बैजुबाबु एलाइड छलाह। बेटी सभदिन हास्टले मे रहल। बैंकक तैयारी मे छल, देखबा मे बुझु ऐश्वर्ये सन छल।

शम्भु सपनो मे एहन सुन्नर कनियाँ नहि देखने हेतै। कतेक विचार करैथ जे एना बाजब, ई पूछब, एना करब, खैर...। बात जे से, शुभ-शुभ कऽ बियाह भेल। आब विधे केँ अंत नहि, ओहो सब पार लागल। जेबीमे तनिष्कक सेट रखने रहैथ। मोनमे हलदल्ली मचल छल, ऐना घोघ उठायब, ऐना लजेतीह।

असल मे शम्भु तेना ने पढ़बामे लागल कि जमानाक हवा बुझबो नहि केने छल। कोनो लड़कीकेँ कहियो कनडेरियो नहि तकलक। मुदा आई एकदम फार्म मे छल। सब बान्ह तोड़बा लेल तैयार, कोबरा मे चललाह, तऽ छोटका सार दौड़ल आयल, "ई दीदीकेँ पर्स छै दऽ देबय।" "बेस बड्ड नीक" कहि भीतर आबि कनियाँकेँ पर्स दैत दरबज्जा बन्न करय लगलाह, ता कनियाँ पर्ससँ मोबाइल झपटी कऽ निकालि ऑन कएलक, "बाप रे! कतेक मैसेज भरल अछि। दरअसल बियाहक चक्कर मे कखन सँ ऑफलाइन छी, सब फ्रेंड फोटोक वेट कऽ रहल छथि।"

आ कनियाँ लोल बना रंगबिरंगक फोटो अपलोड करबामे लागि गेलीह। ❑

उज्जैन चित्रगुप्त मंदिर

मिसिदा

अभूमन हमर प्रयास रहैत अछि जे बरीस मे एक बेर दस-पंद्रह दिन लेल कोनो-नञि-कोनो दर्शनीय-तीर्थस्थल घुमि आबि। एहिये क्रम मे हम सपरिवार पिछला साल दिसंबर मे महाकाल, उज्जैन केर दर्शन हेतु प्रोग्राम बनेलहुँ। टिकट बनबय सँ पहिने नेट पर देखि लैत छी जे जतय घुमय जा रहल छी, ओहिठाम अओर कोन-कोन प्रसिद्ध स्थल अछि, जकरा देखल जा सकैत अछि। हँ, बात कही साफ हम जीहक कनेक कमजोर छी, नेट पर इहो देखैत छी जे ओतुका प्रसिद्ध खाद्यसामग्री कथी-कथी छै? जनतब भेटल जे उज्जैन केर प्रसिद्ध जलपान पोहा अछि आ एगो सुप्रसिद्ध चित्रगुप्त मंदिर अछि, जे रमणीक स्थल पर स्थित अछि। ओतय प्रसाद मे कलम-दवात अओर कॉपी चढ़ाओल जाइत अछि आ मनवांछित फल प्राप्त होईत अछि।

हम, उज्जैन मे तीन दिन रहि सभतर दर्शन कऽ घुरि सकैत छी, आश्वस्त भऽ ओकरे अनुसार रेल टिकट कटेलहुँ। कायस्थ होबाक कारणेँ मोन मे रोमांच छल जे कतो तऽ सिद्ध चित्रगुप्त मंदिर अछि, जिनक दर्शन करबाक सौभाग्य तऽ भेटत!

उज्जैन पहुँचि कऽ पहिने ओंकारेश्वर ममलेश्वर महादेव केर दर्शन केलहुँ, ओकरा बाद राति मे भस्मारती लेल पाँति मे लागि महाकाल महादेव पर भोर मे जलाभिषेक केलहुँ। मंदिर सँ जखन बहरैलहुँ तऽ देखलहुँ सौंसे देह ठंढ़ी सँ काँपि गेल। राति मे ओतेक ठंढ़ी नहि छल, ओहि समय घुप्प कुहेस घेर नेने छल, ठंढ़ी पराकाष्ठा पर। अपन होटल आबि वस्त्र बदलि कालभैरव दर्शन लेल तैयार भेलहुँ। एगो टैंपू रिजर्व कऽ सबसँ पुछलहुँ, "तुम यहाँ के चित्रगुप्त मंदिर को जानते हो?" टैंपूबाला "नहि" मे जबाब देलक। हमरा घोर आश्चर्य भेल जे नेट पर देखा रहल छल जे चित्रगुप्त मंदिर उज्जैन मे प्रसिद्ध छैक! दर्शनक जोश मे ठंढ़ा झोंक लागल, खैर..। मोन मसोसि कऽ काल भैरव मंदिर लेल विदा भेलहुँ। हमर मोन मे तऽ चित्रगुप्त महाराजक दर्शन लेल व्याकुल छल। काल भैरव मंदिरक प्रांगण मे स्थानीय दुकानदार सबसँ चित्रगुप्त मंदिरक विषय मे पुछलौह, ओ सब अनभिज्ञता जाहिर केलक। हमर सभक बात एगो चाहवाला बुढ़ दुकानदार जे लगभग अस्सी बरीस सँ कमक नञि हेताह ओ जनतब देलैन्ह जे, एहिठाम सँ लगभग आधा किलोमीटर अंकपात जगह अछि, ओतय एहन मंदिर अछि, ओ टैंपू ड्राइवरकेँ ओहि स्थानक रूट बूझा देलैन्ह। हमर मन खुशीसँ झूमि उठल। ड्राइवर हमरा सँ पूछलक, "सर, इधर ही पास में मंगला देवी और काली मंदिर हैं, चलें?" हम बजलियै, "अब कहीं नहीं, सीधे चित्रगुप्त मंदिर चलो।" खोजैत-खोजैत पहुँचि गेलहुँ चित्रगुप्तधाम!

दिनक साढ़े ग्यारह बजे अपन गंतव्य पर पहँचि गेलहुँ। मंदिर परिसर सुनसान मुदा प्रवेशद्वार आकर्षक छल। एगो मनुषक दर्शन नञि, अचानक एगो कोठरीक किबाड़ पर बच्चा सभहक वस्त्र पसरल देखाएल, हम शोर केलहुँ, "यहाँ कोई है?" जखन दू-तीन बेर शोर केलहुँ तऽ ओहि कोठरी सँ एगो अधवयसु व्यक्ति निकसलाह। परिचय पूछलहुँ तऽ ओ अपनाकेँ एहि मंदिरक केयर टेकर बतौलाह। बड्ड शांत स्वर मे हमर सभहक एतय एबाक प्रयोजन पूछलाह। हम स्तब्ध भऽ गेलहुँ हुनक प्रश्न पर जे ओ हमर एबाक प्रयोजन पुछि रहल छथि! हमसभ पहिने मंदिरक चारूकात घुरलहुँ। जंगल-झाड़ बीच मंदिर, मंदिर परिसर मे कतेको रंगबिरंगक सीमेंट आ प्लास्टिकसँ बनल बेंच छितारायल, एक पर एक राखल छल। कोनो पर लिखल छल- सुमन भटनागर परिवार की ओर से..., निखि गौड़ परिवार, मोहन माथुर की माँ की स्मृति मे, ना. मो. श्रीवास्तव की ओर से...। एहि बेंच सबकेँ जौं नीक जकाँ राखल जेतयैक तऽ बड्ड सुन्दर लागितै।

हम पुनः ओहि व्यक्तिकेँ बजौलहुँ, पुछलियै, "हम बिहार से बहुत नाम सुनकर यहाँ आए हैं, क्या हमलोग पूजा कर सकते हैं?" ओ बजलाह, "हाँ... हाँ... क्यों नहीं।" कहैत ओ मंदिरक गेट खोलि देलैन्ह आ बजलाह, "पंडित जी आते ही होंगे... आपलोग भीतर जा कर दर्शन कर लें।" मंदिरक भीतर केर दृश्य बड्ड मनभावन छल। बड्ड नमहर हॉल, जतय पाँच सौ व्यक्ति पाँति मे भोजन कऽ

सकैत छलाह। सौंसे हाल मे गर्दा पसरल छल। पड़बा झूंडक झूंड उड़ैत, ओकर बीट सेहो हाल मे पसरल छल। मंदिरक भीतर भव्य मूर्ति, जाहिमे चित्रगुप्त महाराज हुनक दूनू पत्नी अओर सोझां मे बारहो पुत्रक एगो खाम्ह केर भीतर सजा कऽ बनाओल छल। हम, ओहि केयर टेकर सँ पुछलियै जे प्रसाद चढ़ेबाक लेल 'कलम-दावात-कॉपी कतऽ भेटत?" तखन ओ अपना घर सँ दू जोड़ प्रसाद नेने एलाह, दाम माँगलैथ... सौ टाका। हम प्रसाद लऽ चित्रगुप्त भगवान लग राखि देलहुँ। तखनहि मंदिरक पंडितजी पैंट-शर्ट मे पधारलैथ। मंदिर मे झाड़ू-पोंछा लगा, एगो आसनी पर बैस कऽ पाठ आरंभ केलैन्ह। हुनक पूजा समाप्त भेलैन्ह तखन हुनको किछु चढ़ौना दऽ देलियैन्ह। हम ओहि पंडितजी सँ पुछलहुँ, "इस मंदिर की ऐसी स्थिति क्यों है?" ओहि पंडितजीक जबाब सुनि कऽ हमरा एतेक शर्म आएल जे नञि कहि सकैत छी। हुनक जबाब छलैन्ह, "यहाँ कोई भी कायस्थ नहीं आते हैं। सिर्फ चित्रगुप्त पूजा के दो दिन पहले से और पूजा के दूसरे दिन पार्टी करने के बाद वे कहाँ नजर आते हैं?"

"तो फिर ये मंदिर बनी कैसे?" हम पुछलियै।

"इस मंदिर की उत्पत्ति बहुत पौराणिक कही जाती है. धर्मशास्त्र मे भी इस जगह के चित्रगुप्त मंदिर की चर्चा है। इस मंदिर को बनाने मे कायस्थों का योगदान तो रहा ही है, परंतु उत्साह से नहीं... धीरे-धीरे बनती गई. .. बन गई... अब जोश ठंढ़ी हो गई कायस्थों की!" ओ पुजारी जबाब देलैन्ह।

"...तो फिर, बांकी दिनों आपलोगों की रोजी-रोटी कैसे चलती है?" हम पुछलियै। तखन ओ खुलासा करैत कहलक जे उज्जैन पर्यटन स्थल अछि। ओकरा सभक गुजर-बसर हमरे सभ सन भूलल-बिसरल यात्री सब पर चलैत अछि। गाड़ीवाला सब सेहो मदति करैत छथि। पंडितजी स्वयं ब्राह्मण छलाह। ओ कहलैन्ह ओ एतय सँ किछु दूर पर ओकर जेनरल स्टोर्सक दुकान अछि, जखन हमसभ मंदिर घुरैत छलहुँ तखन केयर टेकर ओकरा फोन कऽ देने छलै तैं ओ आबि गेलै नहि तऽ नहि एबितय। केयर टेकरकेँ किछु टाका दऽ हमसभ विदा भऽ गेलहुँ अपन होटल दिस... भारी मोन सँ...।

सत्ते, हमसभ एतहु देखैत छी जे चंदा-चुटकी कऽ चित्रगुप्त मंदिर बना लैत छी। मुदा ओहि मंदिर मे बरीस मे एक बेर हुनक पूजन दिन अपन फर्ज निमाहि लैत छी, नहि तऽ हुनको बिसरि जाएब कोनो ठेकान नहि...। दृश्य सोझहिं अछि, आजुक बच्चा अपन दादा-दादी, नाना-नानी केर नाम नहि जानैत छथि, ऊपरका

पीढ़ी केर नाम कोना जनताह? कतेक कायस्थ परिवार मे पूजा करैत वा घुमैत-फिरैत कहियो ऊँ चित्रगुप्ताय नमः कहैत हेताह? आई कायस्थक दशा देखिये रहल छी, ओ एहिसँ पलायन भऽ रहल छथि। ❑

सम्मान

ज्योतिश्वर रंगशीर्ष सम्मान 2020

आदरणीय विरेन्द्र मल्लिकजीकेँ वर्ष 2020 लेल ज्योतिश्वर रंगशीर्ष सम्मान सँ सम्मानित कएल जेतैन्ह। अपन उच्च लेखनी सँ ओ मैथिली साहित्य जगतक एकटा प्रतिष्ठित आ सम्मानित हस्ताक्षर छैथ। एतेक प्रकांड विद्वान व्यक्तित्व होइतो अपन निश्छल, सहज, सरल छवि हुनक पहचान छैन्ह। हुनका ई सम्मान मैलोरंग, दिल्ली द्वारा प्रदान कएल जाएत।

मिथिलांगन परिवार दिस सँ विरेन्द्र मल्लिकजीकेँ एहि सम्मान लेल हमर हार्दिक शुभकामना। ❑

श्याम दरिहरे रंग सम्मान

कौशल कुमार दासजीकेँ मैथिली रंगमंच लेल अद्यतन अभूतपूर्व योगदान हेतु देशक चर्चित नाट्य संस्था मैलोरंग, दिल्ली द्वारा 'श्याम दरिहरे रंग सम्मान-2020' सँ सम्मानित कएल जाएत। गौरतलब अछि जे ई सम्मान 2019 लेल रोहिणी रमण झा जीकेँ प्रदान कएल जा चुकल अछि, मिथिलांगन हिनक कतेको नाटकक मंचन कऽ चुकल अछि। सम्प्रति दूनू मैथिली रंगपुरोधा पटनामे रहि रंगकर्म सँ जुड़ल छथि।

एहि सम्मानसँ सम्मानित होयबा लेल दूनू गोटे के मथिलांगन परिवार दिस सँ बहुत बहुत रास बधाई। ❑

मिथिलाकेँ सदति अपन ललना पर गर्व रहल अछि। आदिकालक सीता, गार्गी, मैत्रीय, भारती होइथ वा वर्त्तमानक प्रत्यक्ष प्रमाण हिमानी दत्त, भावना कंठ। मैथिलानी सदिखन अपन व्यक्तित्व आ कृतित्व सँ अपन समाज आ देशक नाम ऊँच करैत आबि रहल छथि।

एहि स्तम्भक माध्यमे वर्तमान मे मिथिला आ देशक नाम ऊँच करयवाली मैथिल धियाक परिचय पाठक लोकनि सँ कराओल जाएत।

- संपादक

भावना कंठ

भारतक पहिल युद्धक विमान उड़ाववाली महिला पाइलट

भारतीय वायुसेना मे युद्धक विमान उड़ाववाली अओर स्थायी कमीशन प्राप्त केनिहार पहिल भारतीय महिला पायलटक रूपमे भावना कंठ अपन नाम इतिहासक पन्ना मे स्वर्णाक्षर सँ दर्ज करा चुकलीह।

मिथिलाक बाउर ग्रामबासी तेज नारायण कंठ आ राधा कंठक सबसँ जेठ पुत्री भावना कंठक जन्म बेगुसराय मे 1 नबंबर 1992 मे भेलैन्ह। तीन भाए-बहिन मे सबसँ पैघ भावनाक प्राथमिक शिक्षा बी.आर.डी.ए.वी. स्कूल, बेगुसराय सँ भेल। ओ दसवीं 92.8% अंक सँ पास केलैन्ह। विद्या मंदिर, कोटा सँ 12वीं पास केलाक बाद ओ बंगलूरू मे बी.एम.एस. कॉलेज सँ इंजीनियरिंग कएलैन्ह।

पिता तेज नरायण कंठजी (इलेक्ट्रिकल इंजीनियर, इंडियन ऑयल) बताबैत छथि जे भावनाकेँ बचपनेसँ ई स्वप्न रहैन्ह जे ओ फाइटर पायलट बनैथ (महिलाक एहि क्षेत्र मे प्रवेश पूर्व मे वर्जित छल)। ओना ई एन.डी.ए. ज्वायन करय चाहैत छलीह, मुदा दुर्भाग्यवश एन.डी.ए मे सेहो महिलाक प्रवेश वर्जित अछि।

सैनिक दिनचर्याकेँ पूर्णतः पालन करयवाली भावना डाइविंग, स्पोर्ट्स आ तैराकी मे अभिरूचि राखैत छथि अओर सदिखन आगाँ बढ़बा लेल उत्साहित रहैत छथि।

इंजीनियरिंग केलाक बाद हिनक चयन टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टी.सी.एस) मे सेहो भेल रहैन्ह, मुदा हुनक नियति तऽ किछु अलग छल। हिनक जिनगीक एकटा आर पक्ष सेहो छैन्ह, कॉलेजक दिन मे ई मॉडलींग सेहो केने छलीह।

मिथिलाक एहि बेटीक गुणगान अतिश्योक्ति नहि अछि। बाल्यकालसँ ऊँच उड़ान भरबाक सपना देखयवाली भावना कहियो अपना मार्ग सँ विमुख नहि भेलीह। हिनक उपलब्धि पर आइ समस्त मिथिलांचल गौरवान्वित अछि। ❑

विशेषज्ञ सँ पुछु

श्रद्धेय पाठकवृंद
मिथिलांगन पत्रिकाक 'विशेषज्ञ सँ पुछु' स्तम्भ अहाँ सभहक सहभागिता सँ मिथिलांगन सम्पादकीय मंडल अति उत्साहित अछि। एहि नव स्तम्भ मे मिथिलांगनक सम्पादकीय मंडल पाठकगण द्वारा पुछल गेल प्रश्न, जिज्ञासा वा उठाओल गेल शंकाक समाधान ओहि विषयक विशेषज्ञ द्वारा करा पाठकक शंकाक समाधन करताह।
पाठक अपन-अपन प्रश्न/जिज्ञासा मिथिलांगनक ईमेल mithilangan@gmail.com वा मो. न. 9910952191 पर व्हाट्सप द्वारा भेज सकैत छथि। चुनल प्रश्न/जिज्ञासा कें पाठकक नाम आ पता संग पत्रिकाक अगिला अंक मे प्रकाशित कएल जाएत। - सम्पादक

प्रश्न :- बीहनि कथा मैथिली साहित्यक स्थापित विधा थिक अथवा एकर प्रादुर्भाव अन्य साहित्य सँ भेल अछि जकरा आब मैथिली मे अंगेज लेल गेल अछि।

- अरूण कुमार लाल दास, मधुबनी

उत्तर :- मैथिली मे 20 सदीक दोसर दशक सँ लिखाइत आबि रहल अछि- लघुकथा *(Short story)* जे तहिया सँ सम्प्रति धरि कथा/ गल्प नामे लिखा रहल अछि, से हम नञि कहैत छी, हम तऽ मात्र एना (*Mirror*) देखेलहुँ। ई कहि गेल छथि अपन सबहक साहित्यिक पुरखा सब। एकर पहिल फरिछोठ केलैन्ह प्रो. रमानाथ झा, तकर पछाति डॉ. जयकान्त मिश्र, दुर्गानाथ झा 'श्रीश' आदि प्रभृति विद्वान सब। जकर प्रमाण फोटोस्वरूप सोझाँ दऽ रहल छी।

मैथिलीक पहिल लघुकथा अछि- भीषण अन्याय, काली कुमार दास(1923) आ साहित्य अकादमी द्वारा पहिल पुरस्कृत लघुकथा संग्रह अछि- उमानाथक **अतीत**। लघुकथा लिखब आ पढ़बकें पलखति मे तरदुत होइते नव साहित्यक रूझाने जनमल 'बीहनिकथा' (Seed Story, 1995)

बीहनि! माने बीया।

जहिना एकटा बीया(दुपतिया) गाछक संपुर्णताक प्रतीक अछि तहिना बीहनि कथा एकटा संपुर्ण कथाक द्योतक अछि, कियो-कियो खण्डित कऽ बीहनि आ कथा कहि व्याख्या करैत छथि जे अशुद्ध अछि।

बीहनि कथा कोनो कथाक छाँट नहि थीक आ नञि अखरकट्टू। औसतन पाँच-सात पाँति धरि स्पष्ट कथ्य, गसल शिल्पे तिक्ख प्रभाव सँ पाठकक मगज मे समाएल कथा थीक **बीहनि कथा**। जेना- संस्कृत मे 'बीजमंत्र' एक्के संग बहुत रास अर्थ समेटने पुष्टगर सन! कियो-कियो संस्कृतक उद्धरण दैत छथि, तऽ जानू जे बीहनि कथाक समकक्ष रचना संस्कृत मे 'लघ्वी' नामे लिखल, जानल जाइए। तहिना पंजाबी मे 'मिन्नीकथा' ऊर्दु मे 'अल्फान्से' उड़िया मे 'क्षुद्रकथा' आदि। तहन मैथिली बलाकें अवगति नञि की मैथिली मे शब्द भंडार नञि जे अपन भाषाक शाब्दिक प्रयोग विधाक लेल सेहो हुअए।

किछु तथाकथित मैथिली विद्वान जेना अपने अखरकट्टू वा भ्रमित रहलाह तहिना दोसराकें भ्रमित करबा लेल दुष्प्रचार करैत छथि जे 'लघुकथा'क जगह 'बीहनिकथा' शब्द प्रयोग करैत छथि। मैथिली लघुकथा (Short story) कहियो बीहनि कथा (Seed story) नञि छल आ कहियो किन्नहु एक नञि भऽ सकैत अछि। पूर्णतः स्पष्ट भऽ गेल जे मैथिली कथा साहित्य मध्य मात्र कथाक दू प्रकार-

1. लघुकथा (Short story) जे कथा/गल्प नामे लिखाइत अछि।
2. बीहनि कथा (Seed story)

उपरोक्त दूनू प्रकारक कथाक बीच तेसर विधा स्वतः खारिज अछि। 'बीहनि कथा' शुद्ध शब्द अछि, 'बीहै कथा' नञि।

- मनोज कर्ण 'मुन्ना जी'
(साभार : मिथिलांगन, अंक 38-39)

प्रश्न :- भारत मे साइबर क्राइम दिन-ब-दिन बढ़ैत जा रहल अछि। एक व्यक्ति जे साइबर सुरक्षा आ एहि डिजिटल दुनियाक बारे मे बेसी जानकारी नहि राखैत अछि ओ साइबर कैफे मे एहि अपराधक शिकार हेबा सँ खुदकें कोना सुरक्षित राखि सकैत छथि?

- सुमित आनन्द, डाटा एनालिस्ट

उत्तर :- अक्सर होइत अछि जे अपना सबकें कोनो कारण सँ साइबर कैफे जाए पड़ैत अछि। ओ चाहे कोनो डॉक्यूमेंटक प्रिंट लेबाक लेल होए वा अपन ईमेल देखबाक होए वा कोनो बैंक ट्रांजैक्शन करबाक लेल होए। मुदा साइबर कैफे मे जौं किछु सावधानी नहि राखल जाए तऽ बहुत नुकसान भऽ सकैत अछि। सदैव निम्न सावधानी राखीः-

1. सबसँ पहिले तऽ ई ध्यान राखी जे साइबर कैफे वा फ्री वाई-फाईक उपयोग कऽ कें एहन कोनो साइट नहि खोली जाहि मे कोनो गुप्त सूचना (जेना यूजर नाम वा पासवर्ड) कें टाइप करबाक जरूरत होए।
2. जौं ई बड्ड आवश्यक होए तऽ ई सूचना **'की बोर्ड'**क उपयोग कऽ कें नहि करी। एहन लगभग सब साइट पर 'वर्चुअल की-बोर्ड'क व्यवस्था सेहो होइत छैक, जकर उपयोग करबाक चाही।
3. वर्चुअल की-पैड मे कोनो अक्षर कें टाइप नहि करबाक जरूरत होइत अछि। एहिमे सब अक्षरक एकटा पैड रहैत अछि जाहिमे सँ अक्षर कें क्लिक कऽ कें चुनय पड़ैत अछि। एहन स्थिति मे 'की लोगर' प्रोग्राम कें ई पता नहि चलैत अछि जे कोन अक्षर टाइप कएल गेल अछि आ साइबर क्रिमिनलक ई ट्रिक फेल भऽ जाइत अछि।
4. जाहि अकाउंट मे वर्चुअल की बोर्डक व्यवस्था नहि होए ओकर उपयोग कम-सँ-कम साइबर कैफे आ फ्री वाई-फाई मे नहि करी तऽ नीक।
5. कतेको साइबर कैफे मे कैमरा सेहो छिपल रहैत अछि, तैं कोशिश करी जे कोनो सूचना क्लिक करैत काल दोसर हाथ आ शरीर सँ ओकरा नुका कऽ क्लिक करी।
6. जेबा काल अपन अकाउंट सँ लॉग आउट करनाय नञि बिसरी।

- कमांडर (रि.) के के चौधरी

विज्ञान मंच

बौआ-बुच्ची लोकनि,

अहाँ सभहक रूचिकेँ देखैत एहि स्तम्भक आरम्भ कएल गेल, अहाँक सहभागिता सराहनीय अछि। अहाँ सब अपन-अपन प्रश्न आ एहि स्तम्भ मे पुछल प्रश्नक उत्तर मिथिलांगनक ईमेल mithilangan@gmail.com वा मो. न. 9910952191 पर व्हाट्स अप भेज सकैत छथि। चुनल प्रश्न/उत्तर केँ अहाँक नाम आ पताक संग मिथिलांगनक विशेषज्ञक उत्तरक संग पत्रिकाक अगिला अंक मे प्रकाशित कएल जाएत। - सम्पादक

1. गर्मी सँ पसीना किएक आबैत अछि?

उत्तर :- वास्तव मे पसीना अधिक तेजीसँ शारीरिक श्रम केलासँ अओर वातावरण मे अत्यधिक गर्मी भेलासँ आबैत अछि। पसीनाकेँ शरीरसँ निकललाक बाद हवासँ वाष्पीत भेलासँ शरीरकेँ ठण्डक भेटैत अछि। एहि तरहेँ पसीना शरीरक ऊष्माकेँ नियंत्रित करबाक एकटा प्राकृतिक प्रक्रिया अछि।

पसीना शरीरक तापक्रमकेँ सामान्य राखबाक मुख्य कारक अछि। जखन शरीर बहुत गर्म भऽ जाइत अछि तऽ सतह पर लाखों स्वेद ग्रंथि सबकेँ संदेश प्रेषित करैत अछि जाहिसँ पसीना, जे एकटा नमकीन तरल जलीय पदार्थ होइत अछि, त्वचाक भूरसँ बाहर निकलैत अछि। पसीनाक मुख्य काम शरीरक गर्मीकेँ ग्रहण कऽ ओकरा वाष्पीकृत करबाक होइत अछि, जकर फलस्वरूप त्वचाक सतहक पासक रक्तवाहिनि सभ ठंडा भऽ जाइत अछि अओर एहिसँ सम्पूर्ण शरीरकेँ सामान्य तापमान पर रक्त प्रभावित होइत अछि।

(पियुष अरविन्द, नवी मुम्बई)

विशेषज्ञ (प्रो. संतोष कुमार कर्ण)

गर्मि मे अहाँक ठंडा राखबाक लेल पसीना निकलैत अछि, यानी अहाँक शरीरक तापमानक कम/नियंत्रित करबाक लेल।

जखन हम ज्यादा गरम भऽ जाइत छी तऽ हमर तंत्रिका तंत्र पसीनेकेँ उत्तेजित करबा लेल हमर सनकी ग्रंथियोंकेँ मारैत अछि। Eccrine ग्रंथि एकटा पसीनाक ग्रंथि अछि। पसीनाक ग्रंथि दू प्रकारक होइत अछि, जकर नाम eccrine आ aprocrine होइत अछि। Eccrine ग्रंथि सबसँ बेसी पसीना उत्पन्न करैत अछि। मानव मे औसतन दू सँ चारि लाख पसीनाक ग्रंथि होइत अछि।

2. थाकल रहला पर हाथ-पएर वा कोनो अओर अंगकेँ दबेला सँ थकान किएक हटि जाएत अछि?

उत्तर :- ज्यादा काम केलासँ लोक थाकि जाइत अछि किएक तऽ शारीरिक क्रिया जे काम करय लेल मांसपेशीकेँ ऊर्जा प्रदान करैत अछि, धीरे-धीरे मंद पड़ि जाइत अछि। एहन स्थिति मे मांसपेशिक कोशिका ग्लाइकोलिसिस विधिक द्वारा ऊर्जाक आवश्यकताक पूर्ति करैत अछि। ग्लाइकोलिसिस क्रियाक समय शरीरक शक्रा लैक्टिक अम्ल मे बदलि कऽ मांसपेशी मे लैक्टिक अम्लक रूपमे एकत्र भऽ जाइत अछि। मांसपेशी मे लैक्टिक अम्लक इकट्ठा भेनाय थकानक मूल कारण अछि, जे अत्यधिक व्यायाम वा श्रम केलाक बाद बुझाय पड़ैत अछि। एहन स्थिति मे जखन हाथ-पएरक मांसपेशीकेँ दबायल वा मालिश कएल जाइत अछि तऽ एहिसँ मांसपेशी मे रक्तक आपूर्ति बढ़ि जाइत अछि, जाहिसँ नञि केवल मांसपेशी मे जमल लैक्टिक

अम्ल हटि जाइत अछि बल्कि मांसपेशीक श्वसनकेँ लेल पर्याप्त मात्रा मे आक्सीजन भेटि जाइत अछि। एहिसँ मांसपेशीकेँ छुबयवाली तंत्रिकाक सिरा सक्रिय भऽ मस्तिस्ककेँ किछु दर्द निवारक पदार्थ स्रवित कऽ कऽ संदेश भेजैत अछि अओर एहि प्रकारेँ पएर आ आन अंगकेँ दबेला सँ शरीरक थकान मिट जाहत अछि।

(प्रसुन गौरव, पटना)

विशेषज्ञ (प्रो. संतोष कुमार कर्ण):
थकान शारीरिक आ मानसिक थकानक भावना होइत अछि। काम करैत समय मांसपेशि सेहो उपोत्पादक रूपमे लैक्टिक एसिडक उत्पादन करैत अछि जे थकानक कारण बनैत अछि। थकानक वास्तविक कारणक अखन जाँच कएल जा रहल अछि। थकान तखन महसूस होइत अछि जखन दिल दिल क आ दिमागक पंपिंग क्षमताकेँ कम कऽ दैत अछि। हमर शरीरक अंग, मांसपेशी आदि केँ दबेलासँ रक्त आ ऑक्सीजनक परिचलनक दर बढ़ि जाइत अछि। संभवतः इएह कारण अछि जे हम बेहतर महसूस करैत छी।

3. घाव ठीक भेलाक बाद ओहिमे खुजली किएक होइत अछि?

उत्तर :- जखन कोनो घाव भरैत अछि तऽ घावकेँ दुबारा कोनो बाहरी नुकसानसँ बचेबा लेल आवश्यक पपड़ीनुमा खाल मतलब स्कैब गिरय सँ पहिने सुखल त्वचा तंत्रिका सिराकेँ अओर अधिक संवेदनशील बनाबैत अछि जाहिसँ खुजली होइत अछि। खुजली त्वचाक नीचा तंत्रिका सभहक छोट-छोट सिराक उद्दीपन सँ होइत अछि, मुदा घाव भरैत समय स्कैबकेँ खुजली नहि करबाक चाही एहिसँ घाव भरबाक प्रक्रिया मे व्यवधान आबैत अछि।

(ध्रुव कुमार, बैगलौर)

विशेषज्ञ (प्रो. संतोष कुमार कर्ण):-
एक घावक चिकित्सा प्रक्रियाक दौरान, क्षतिग्रस्त ऊतकक बदलय आ मरम्मत करबाक लेल ओतय ऊतक बढ़ैत अछि। एक घाव भरबाक रूपमे, घावक चारूकात कोशिका फैलैत आ बढ़ैत अछि। कोशिका फेर घावक केंद्र मे एकजुट भऽ जाइत अछि, एक संग जुड़ि जाइत अछि आ घावकेँ बंद करबा लेल सिकुड़ जाइत अछि। ई एकटा यांत्रिक तनाव पैदा करैत अछि आ खुजलीक कारण बनैत अछि। यह यांत्रिक तनाव खुजली तंत्रिकाकेँ सक्रिय करैत अछि आ खुजली करबा लेल कहैत अछि।

आहाँ लोकनिक लेल प्रश्न

1. **सर्दी मे लोकक हाथ-पएर वा होंठ किएक फटि जाइत अछि?**
2. **डकार किएक अओर कोना आबैत अछि?**
3. **उबालल अण्डाक पीयर भाग पर कारी परत किएक जमि जाइत अछि?**

पूजा कर्ण

बौआ-बुच्ची लोकनि!

जौं अहाँ मैथिली मे अपन लिखल खिस्सा, कविता, गीत, चुटकुला इत्यादि मिथिलांगन पत्रिकाक बाल मचान मे छपाबऽ चाहैत छी तऽ कागत कलम उठाऊ आ फुलस्केप पेज पर साफ-साफ नीक सँ लिखि कऽ मिथिलांगनक पता पर पठाऊ। संगहि जौं अहाँ सब चित्र वा कार्टुन बनबैत छी तऽ सेहो बना कऽ पठा सकैत छी।

हँ! अपन मूल रचना वा चित्र इत्यादिक संग अपन पूरा नाम, माँ-बाबूजीक नाम, निवासक पता, अपन कक्षा आ विद्यालय केर नामक संग अपन हालक खिंचल पासपोर्ट साइज फाटो अवश्य पठाबी।

- संपादक

सरस्वती पूजा 2020 मे चित्रकला प्रतियोगिताक पुरस्कृत चित्रकला

केटेगरी - एक

नाम : रचना
पिता : अमित चौधरी

नाम : श्रृष्टि
पिता : मुकेश दत्त

नाम : साक्षी मिश्रा
पिता : दयाकांत मिश्रा

केटेगरी - दू

नाम : प्रेमकांत
पिता : दयाकांत मिश्रा

नाम : आर्यप्रभा
पिता : निर्भय कर्ण

नाम : रितिका दास
पिता : कुमार रंजीत लाल

केटेगरी - तीन

नाम : अनन्या मिश्रा
पिता : दयाकांत मिश्रा

नाम : सुप्रिया मिश्रा
पिता : दयाकांत मिश्रा

नाम : आयुषि
पिता : राजेश कर्ण

केटेगरी - विशेष

नाम : प्रियंका
पिता : निर्भय कर्ण

नाम : काजल झा
पिता : अनिल कुमार

नाम : आयुषि
पिता : राजेश कर्ण

आयुष कुमार वर्मा

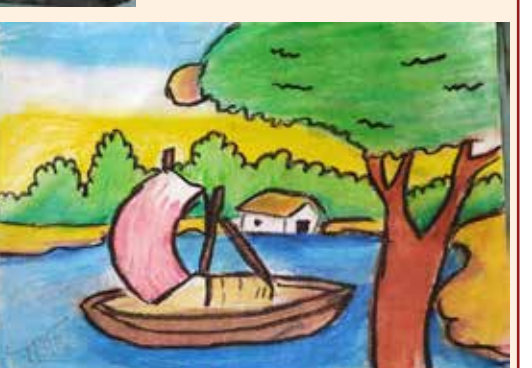

मिथिलांगनक पूर्व अध्यक्ष डा. राम कुमार मल्लिक जीक असामयिक निधन

मिथिलांगनक पूर्व अध्यक्ष आ प्रसिद्ध चिकित्सक ग्रुप कैप्टन (रि.) डॉ. राम कुमार मल्लिक जीक हृदयगति रूकि गेलासँ 30 अगस्त 2020 असामयिक निधन भऽ गेलैन्ह। मूल रूपसँ गणपतिगंज, सहरसाक निवासी डॉ. मल्लिक जीक मात्रिक जगतपुर छलैन्ह। नौ सेना सँ 1996 मे अवकाश प्राप्त रक्षा अधिकारी, चिकित्सक छलाह आ सम्प्रति गोइला डेरी, नज़फगढ़ मे प्रीति चेरिटेबल क्लिनिक द्वारा सामाजिक सेवा मे लागल छलाह। पिता जयनारायण मल्लिकक तेरह संतान (10 पुत्र - 3 पुत्री) मे सबसँ पैघ पुत्र मल्लिक जी अपना पाँछा 1 पुत्र आ 1 पुत्री छोड़ि गेलाह। पत्नी प्रेमलता मल्लिक जीक 2015 मे स्वर्गवास भऽ गेल छलैन्ह।

हिनक असामयिक स्वर्गारोहण सँ पुरा मिथिलांगन परिवार मर्माहित अछि, अपन एकटा अभिभावकक गेनाय सबकेँ विचलित कऽ देलक। ईश्वर शोकाकुल परिवारकेँ दृढ़ इक्षा शक्ति प्रदान करैथ। मिथिलांगन परिवार दिस सँ ब्रह्मलीण आत्माकेँ अश्रुपूर्ण सादर श्रद्धांजलि। ❑

मिथिलाक महान चित्रकार कृष्ण कुमार कश्यप जी नहि रहलाह

मिथिला पेंटिंगक व्यवसायीकरण मे जनकक भूमिका निभेनिहार, गीत गोविंद, मेघदूत, बासमती आ मिथिला पेंटिंगक लेखक, मिथिला चित्रकलाक एकटा पैघ स्तम्भ आ एहि कलाकेँ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नव आयामक संग प्रतिस्थापित करयवाला महान चित्रकार, लेखक, गीतकार आ गायक कृष्ण कुमार कश्यपजी बिगत 13 अगस्त 2020केँ ईहलोकवासी भऽ गेलाह। बरहेता ग्रामवासी कश्यपजीक गाम-गाम मे मिथिला पेंटिंगक माध्यमे हजारो रोजगार, देश-विदेश मे प्रचार-प्रसार आ महिला सशक्तिकरण मे भारी योगदान छलैन्ह। मिथिला पेंटिंग मे हुनक योगदान अतुलनीय अछि हुनक लिखल पोथी मिथिला समाजक प्रेरणादायी अछि। साठ-सत्तरक दशक मे वो मिथिला चित्रकलाक विकास आ ओकरा पेशेवर कला बनाबय मे अपन जीवन खपा देलैन्ह। कश्यपजीक सपना छल मिथिला चित्रकलाक विश्वविद्यालय खोलबाक। जीवनपर्यंत वो अपन एहि सपनाकेँ साकार करबा लेल संघर्षरत छलाह। अपन चित्रकारी मे हुनक रमल रहनाय आ हुनक निश्छल मुस्कान सदति लोककेँ याद रहतैन्ह।

गौरतलब अछि जे मिथिलांगन पत्रिकाक अंक 10 (जनवरी-मार्च 2011) मे छपल अपन साक्षात्कार मे ओ अपन कार्य, योजना आ ईच्छाकेँ विस्तार सँ बतेने छलाह। कृष्ण कुमार कश्यपजीकेँ समस्त मिथिलांगन परिवार दिस सँ सादर नमन! विनम्र श्रद्धांजलि! ❑

साहित्यकार विश्वनाथ दास 'देहाती' जीक निधन

सीमांचलक द्वितीय रेणु मानय जानयवाला सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्रद्धेय विश्वनाथ दास 'देहाती' जीक 21 अगस्त 2020केँ हृदयगति रूकि जेबा कारणेँ निधन भऽ गेलैन्ह।

सुन्दरी(1953), चिता (1956), भिखारिन (1965), याद, डायरी के पन्ने (1969), पत्थर के टुकड़े (1983), वीरान भूमि (1988) आदि हिनक महत्वपूर्ण कृति अछि। हिनक रचनाक योगदानसँ 'देहाती साहित्य'क भंडार काफी समृद्ध भेल, हिनक नहि रहलाह सँ आंचलिक साहित्यकेँ अपूरणीय क्षति भेल अछि। पूर्णिया जिलान्तर्गत जगन्नाथपुर गाँव मे 1929केँ जन्मल देहातीजीक लिखल मोड़, न्याय, दंड आदि अनेक कहानी आइयो जनप्रिय अछि।

मिथिलांगन परिवार दिससँ एहि महान सामाजिक-साहित्यिक व्यक्तित्वकेँ सादर नमन! विनम्र श्रद्धांजलि! ❑

वरिष्ट साहित्यकार पंचानन मिश्र जीक स्वर्गवास

मैथिलीक वरिष्ट साहित्यकार आदरणीय पंचानन मिश्र जीक 26 अगस्त 2020केँ दरभंगा डी.एम.सी.एच मे निधन भऽ गेलैन्ह।

हिनक निधनसँ सम्पूर्ण मैथिली साहित्यकेँ अपूर्णीय क्षति भेल। पंचाननजी अत्यंत मिलनसार व्यक्ति छलाह आ मैथिलीक वरिष्ट साहित्यकार आदरणीय स्वर्गीय जयकान्त मिश्रजीक जमाय छलाह। मिथिलांगन मे हुनक रचना कतेको बेर प्रकाशित भऽ चुकल अछि।

मिथिलांन परिवार एहि महान आत्माकेँ विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करैत अछि। ❑

मिथिलांगनक वार्षिकोत्सव 'सरस्वती पूजा' 2020

गत्त 30 जनवरी 2020कें मिथिलांगन अपन वार्षिकोत्सव 'सरस्वती पूजनोत्सव', दिल्ली स्थित देवेश्वरी भवन मे प्रत्येक वर्षक भाँति हर्षोउल्लासक संग मनौलक।

भगवती पूजा उपरांत बच्चा-बूच्ची सभक लेल चित्राकला प्रतियोगिताक आयोजन भेल। नेना-भूटकाक सांस्कृतिक कार्यक्रम श्रीमती दिपाली कर्ण द्वारा कएल गेल। महिला सभहक प्रश्नोत्तरी कार्यक्रमक आयोजन रवीन्द्र चन्द्र लाल दास द्वारा कएल गेल अओर विजेताकें पुरस्कार स्वरूप पोथी प्रदान कएल गेल।

भोजनक पश्चात संजय चौधरीक मंच संचालन मे सांस्कृतिक कार्यक्रमक प्रस्तुति भेल जाहिमे सुप्रसिद्ध मैथिली गायक सुंदरम जीक अगुवाई मे मानवर्द्धन जी, राखी, स्नेहा, प्रत्यूष, पीहु आ यश द्वारा अत्यंत सुरूचिपूर्ण आ झमकौआ गीत-संगीतक रसास्वादन कराओल गेल। संतोषी कर्ण, खुशबु कुमारी, चन्दा चौधरी आ हुनक वाद्यटीम एहि साहित्यिक दिनकें सांस्कृतिक साँझक रंग मे रंगि देलैन्ह। श्री संजयजी अपन चिर-परिचित हास्ययपूर्ण अंदाज मे संचालन केलैन्ह आ दर्शक दिर्घाकें आनन्दित करैत रहलाह।

अंतिम प्रस्तुति मे सुप्रसिद्ध गायक मानवर्धन कंठ एहि संध्याकें अपन गायन सँ मदमस्त बना देलैन्ह।

एहि बेर पोथीक अलावे एकटा स्टॉल मिथिला पेंटिंग आ हस्तकलाक सेहो लगाओल गेल छल जे आगन्तुक लोकनिक विशेष आकर्षणक केन्द्र रहल आ बिक्री सँ कलाकार लोकनि सेहो अति उत्साहित भेलीह।

समारोहक अंत मे अध्यक्ष सर्वश्री कमलेश जी विभिन्न प्रतियोगिता मे भाग लेनिहार विजेता बच्चा सबकें प्रसस्ति पत्र प्रदान केलैन्ह। एहिमे के के चौधरी, अधीरजी, निर्भयजी, सरिता जी, हृदय नारायण जी, विनीता जी, दीपाली जी, शंभू जी, जितेंद्र जी, नवीनजी, आलोकजीक सक्रिय उपस्थिति उल्लेखनीय रहल। अओर जयानंद जी, मुकेश जी, दयाकांतजी, उमेश जी, यश, भव्य, प्रतीक गौरव आ चैतन्य द्वारा कएल गेल सुंदर व्यवस्था उत्तम आ प्रशंसनीय रहल। ❑

मिथिलांगनक डिजिटल मंच 'फेसबुक लाइव' केर शुरूआत

कोरोना काल मे जखन सब कियो लकडाउनक कारणें घर मे बैसल छलाह तऽ मिथिलांगनक नाट्यमंच प्रभारी संजय चौधरी जीक टीम मिथिलांगनक कार्यक्रम मे एकटा नव सौपान जोड़लैन्ह। 10 मई 2020कें मिथिलांगन फेसबुक लाइव कार्यक्रम केर शुरुआत भेल जाहि मे 13टा निम्न कार्यक्रम शामिल अछि-

1. **गागर मे सागर**
2. **घोघ तर सँ**
3. **बाल मचान**
4. **पटिंग प्रतिभा**
5. **रंग जगत**
6. **भनसा घर सँ**
7. **विविधा**
8. **सौंदर्य कला**
9. **विमर्श**
10. **टीम मिथिलांगन**
11. **गप-सरक्का**
12. **गीत-नाद**
13. **लोक विज्ञान**

एकरा 13 जुलाई 2020कें एकरा फेसबुक चैनलक रूप मे सेहो मान्यता भेट गेल आ कतेको डिजिटल कार्यक्रमक आयोजन कएल गेल।

गौरतलब अछि जे 22 जुलाई 2020कें अभय जयंती एहिये माध्यम सँ मनाओल गेल। ❑

पत्रिकाक माध्यमे मिथिलाक्षर अओर कैथी लिपिकेँ प्रचार-प्रसार पर जोर दी

मिथिलांगन पत्रिकाक बढ़ैत लोकप्रियता आ उपयोगिता देखि मन मे एकटा विचार आयल, साझां कऽ रहल छी।

अपनेक पत्रिका बड्ड सुसज्जीत ढ़ंग सँ विभिन्न स्थायी स्तम्भक संग प्रकाशित होइत अछि, संगहिं एहिमे समय-समय पर नव-नव स्तम्भक शुरूआत सेहो भऽ रहल अछि।

एकटा विचार छल जे एहि पत्रिका मे मिथिलाक्षर आ कैथी लिपिकेँ सीखबाक लेल एकटा स्थायी स्तम्भक शुरूआत करी, जाहिसँ लोक अपन बिसरल लिपिकेँ पुनः सिख सकैथ।

राजेश कर्ण
दिल्ली

नव कलेवर नव स्तम्भ, बड्ड नीक

नव अंक मे शामिल कएल गेल नव स्तम्भ सभ एकदम सार्थक आ समीचिन लागल। ई बुझना गेल जे मिथिलांगन एकटा सम्पूर्ण मैथिल पारिवारिक पत्रिका प्रकाशित कऽ रहल अछि। एहिमे नव स्तम्भकेँ जोरनाय एकर गुणवत्ताकेँ अओर बढ़ाओत।

पत्रिकाक सफल संपादन लेल हार्दिक शुभकामना।

पंकज कुमार लाल
बंगलोर

बाल उपयोगी लागल

आदरणीय संपादक जी,

अहाँक मिथिलांगन पत्रिकाक अंक 42-43 देखल, पत्रिकाक स्वरूप देखि आ एहिमे शुरू कएल गेल नव-नव स्तम्भ बाल उपयोगी लागल। बहुत पहिने अहिंक संपादन मे मिथिलांगन गृह पत्रिका पढ़ैत छलौंह, ओहियो मे ई सभ रहैत छल। खुब नीक लागल।

एकटा आग्रह छल जे बाल मचान मे बाल रचना सबकेँ सेहो शामिल करी।

प्रणाम

पियुष अरविन्द
कालम्बोली, नवी मुम्बई

नव स्तम्भ नीक, मुदा वैयाकरणीय शुद्धताक सेहो ध्यान राखी

माननीय संपादक जी,

जय मैथिली!

मिथिलांगनक नव अंक नव कलेवर आ नव-नव स्तम्भ संग बड्ड नीक लागल। हमरा ई कहबा मे हमरा कनिको असोकर्ज नहि भऽ रहल अछि जे मिथिलांगन सदति अपन श्रेष्ठ कलेवर आ रचनाक समावेश सँ सदिखन पाठकगणकेँ आकर्षित करैत रहल अछि। तैयो समयानुसार निखार आवश्यक होइत अछि। तैं किछु सुझाव जे संपादक मंडलकेँ उचित लागय तऽ विचार कएल जा सकैत अछि जेना-

1. वैयाकरणीय शुद्धता पर विशेष ध्यान देल जाए, ओना पुरनका आ अखुनका शब्दक उच्चारण आ लिखवट मे अंतर देखल जाइत अछि। तऽ वर्तमान प्रचलनकेँ उपयोग ठीक मानल जाएत।

2. क्रियापद पर विशेष ध्यान राखि। सब लेखक एकर सब ढ़ंगसँ प्रयोग करैत छथि। पत्रिका मे एकर एकरूपता आवश्यक होइत अछि। ओना अहाँक पत्रिका मे एकर एकरूपता देखाइत अछि।

3. स्तम्भक शुरूआत नहि ओकर सुचारू रूपसँ नियमित भेनाय आवश्यक अछि, एहि बातक ध्यान राखि।

शुभाषिश

बिजेन्द्र नारायण दत्त
झरिया, धनबाद

श्रद्धेय पाठकगण,

अपनेक पत्र, मेल अओर व्हाट्स अप द्वारा मिलल सुझाव आ विचार पत्रिकाकेँ उत्कृष्ठ बनेबा मे सदति सहायक होएत रहल अछि। जकर परिणामस्वरूप अहाँ सभहक सुझाव पर कतेको नव स्तम्भक शुरूआत कएल गेल अछि, आशा अछि अहाँ सबकेँ नीक लागत। ओहि स्तम्भ सभ पर अपन विचार आ टिप्पणी सँ पत्रिकाक सम्पादक मण्डलकेँ अवश्य अवगत कराबी, जाहिसँ एहिमे छुटि गेल त्रुटि केँ अगिला अंक मे सुधारल जा सकय।

कोनो विषय पर अपनेक कि सोचब वा कहब अछि, एहि प्रसंग पर अपन मंतव्य, अपन विचार सँ अन्य पाठक लोकनिक ज्ञान अओर जानकारीकेँ बढ़यबाक लेल शीघ्र कागत-कलम उठाऊ आ अपन विचार लिखि मिथिलांगनकेँ **संपादक, मिथिलांगन, ए-40, कैलाश अपार्टमेन्ट, प्लाट नं-2, सेक्टर-4, द्वारका, नई दिल्ली-110078** भेजु। अपने लोकनि अपन मंतव्य केँ मिथिलांगनक **ई-मेलः mithilangan@gmail.com** पर सेहो प्रेषित कऽ सकैत छी।

नव स्तम्भ मे अपन भागिदारी बनाबय लेल ओहि स्तम्भसँ जुड़ल प्रश्न, जिज्ञासा मंतव्यकेँ लिखि भेजु, बीछल मंतव्यकेँ मिथिलांगनक आगामी अंक मे अपनेक नामक संग प्रकाशित कएल जाएत।

- संपादक

की अपने अपन धीया-पूताक संग मैथिली मे बतियाइत छी, जौं नहि तऽ आइये सँ शुरू कऽ दीयौ। मातृभाषाक रक्षाक जिम्मा अपनेक कर्तव्य अछि। - संपादक

मिथिलांगन

मैथिली पारिवारिक त्रैमासिक पत्रिका

नई दिल्ली सँ प्रकाशित तथा सम्पूर्ण भारत आ नेपाल मे वितरित

दाम - एक प्रति 20 टाका, वार्षिक 100 टाका मात्र

मिथिलांगनक पोथी प्रकाशन

मैथिली शुभ संस्कार-विधि विधान व गीत (तृतीय संस्करण)	(ब्रह्मदेव लाल दास एवं विन्देश्वरी दास)	200/- टाका मात्र
वट सावित्रि व्रत कथा	(ब्रह्मदेव लाल दास)	20/- टाका मात्र
मैथिली गीता	(डॉ. जनक किशोर लाल दास)	205/- टाका मात्र
गिरिजा गीत	(गिरिजा देवी)	75/- टाका मात्र
अहिं जकाँ	(बिनीता मल्लिक)	75/- टाका मात्र
मोहपाश	(डॉ. शेफालिका वर्मा)	150/- टाका मात्र
आउ बढ़ि चलू	(विनिता मल्लिक)	200/- टाका मात्र
कोईली	(डॉ. उमा शंकर चौधरी)	150/- टाका मात्र
नागफांस (अंग्रेजी)	(डॉ. शेफालिका वर्मा)(अनुवाद : राजीव वर्मा एवं जया वर्मा)	200/- टाका मात्र
नागफांस (मैथिली)	(डॉ. शेफालिका वर्मा)	200/- टाका मात्र

अपन प्रति प्राप्त करबाक लेल सम्पर्क करू :

साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्था

मिथिलांगन (पंजी.)

ए–40, कैलाश अपार्टमेंट, प्लॉट नं0 2,
सेक्टर 4, द्वारका, नई दिल्ली–110078

फोन : 9312301160, 9810450229

ई–मेल : mithilangan@gmail.com

मिथिलांगनक पोथी प्रकाशन

200/- टाका मात्र

20/- टाका मात्र

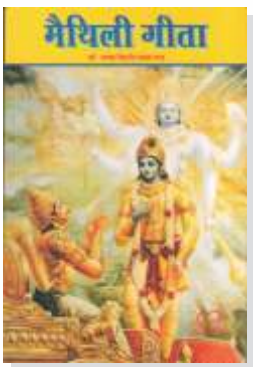

205/- टाका मात्र

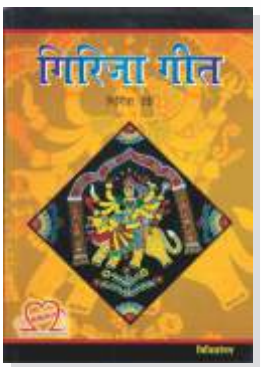

75/- टाका मात्र

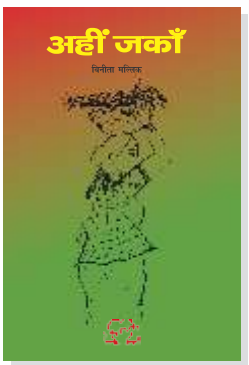

75/- टाका मात्र

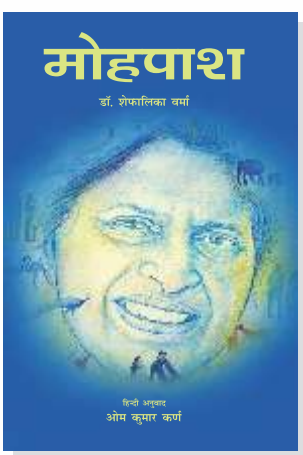

150/- टाका मात्र

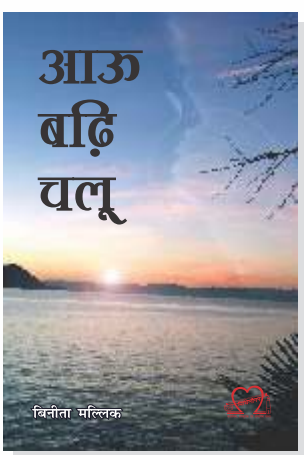

200/- टाका मात्र

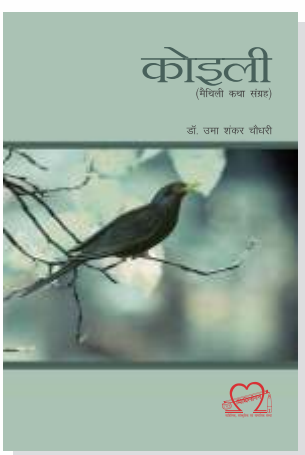

150/- टाका मात्र

200/- टाका मात्र

नई दिल्ली सँ प्रकाशित अओर सम्पूर्ण भारत आ नेपाल मे वितरित

अपन प्रति प्राप्त करबाक लेल सम्पर्क करू

मिथिलांगन (पंजी.)

ए-40, कैलाश अपार्टमेंट, प्लॉट नं. 2, सेक्टर-4,

द्वारका, नई दिल्ली-110078

सम्पर्क: 9312301160, 9810450229

ईमेल : mithilangan@gmail.com, वेबसाइट : www.mithilangan.org

नोट: 'मैथिल शुभ संस्कार - विधि विधान व गीत' www.amazon.com पर उपलब्ध अछि

Published and Printed by Abhay Kumar Lal Das for and on behalf of Mithilangan, A-40, Kailash Apartment, Plot No.-2, Sector-4, Dwarka, New Delhi-110078, at Anand Sons (India), C-87, Ganesh Nagar (Pandav Nagar Complex), Delhi-92